चतुर्थ पाठ
प्रक्रियानुसारी पाणिनीयधातुपाठ

सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार पाणिनीय धातुपाठ के धातुओं की संख्या १९४३ है। किन्तु दॄ, नॄ, श्रा, ज्ञा, छदिर्, मदी, ध्वन, शम, ये धातु भ्वादिगण में पठित होकर भी भौवादिक नहीं हैं। ये मित्करण के लिये भ्वादिगण में पढ़े गये हैं। मित् का प्रयोजन आर्धधातुक णिच् से है। अत: हमने इन्हें हटा दिया है। अन्य भी जो फणादि, किरादि, ज्वलादि, आदि अन्तर्गण हैं, जिनका प्रयोजन आर्धधातुक प्रत्ययों से है, उन्हें भी हमने इस सार्वधातुकोपयोगी धातुपाठ से हटा दिया है। जिन शमादि, मुचादि आदि गणों का प्रयोजन सार्वधातुक प्रत्ययों से है, उन्हें हमने इस सार्वधातुकोपयोगी धातुपाठ में रखा है।

स्मृ, चल, स्वन, यम, लड, ज्वल, ये धातु भ्वादिगण के हैं, किन्तु ये मित्करण के लिये भ्वादिगण में ही दोबारा पठित हैं। अत: हमने इन्हें भी एक बार हटा दिया है।

षद्लृ, शद्लृ, चल, कड, चर्च, जर्ज, झर्झ, उछि, उच्छी, घूर्ण, ये १० धातु भ्वादि तथा तुदादि में समान पढ़े गये हैं। तुदादि में पढ़ने से इनके शत्रन्तो में 'आच्छीनद्योर्नुम्' से विकल्प से नुमागम होकर जब सीदती-सीदन्ती। चलती-चलन्ती। कडती-कडन्ती, जर्जती-जर्जन्ती। झर्झती- झर्झन्ती, ऐसे दो दो रूप बन ही जाते हैं, तो भी इन दसों धातुओं का भ्वादि में पाठ इसलिये किया है कि शप् पित् होने से अनुदात्त है और श प्रत्यय स्वर से उदात्त है, किन्तु णुद प्रेरणे, गडि वदनैकदेशे, श्रन्थ सन्दर्भे, हृ कौटिल्ये, हृ संवरणे, आदि अनेक धातु ऐसे हैं, जिनको एक ही गण में दो दो बार पढ़ने का कोई औचित्य नहीं दिखता, अत: इन्हें हटा देना चाहिये। क्र्यादिगण में वृञ् वरणे पढ़ने के बाद पुन: वृ वरणे पढ़ा गया है। इसका भी विचार करना चाहिये। इस प्रकार हमारे इस धातुपाठ में पाणिनीय धातुओं की संख्या १९३० है।

भ्वादिगण में कोई प्रयोजन न होने के कारण हमने भ्वादिगण के गाङ् धातु को अदादिगण में, श्रु धातु को स्वादिगण में, तथा धिवि, कृवि धातुओं को तनादिगण में रख दिया है। अक्षू, तक्षू धातुओं को भ्वादि, स्वादि, इन दोनों में रख दिया है।

इन १९३० औपदेशिक धातुओं को भगवान् पाणिनि ने १० वर्गों में विभाजित किया है। इन वर्गों को ही गण कहते हैं। इनमें से ९९३ धातु भ्वादिगण में हैं, १४० धातु दिवादिगण में हैं, १५७ धातु तुदादिगण में हैं, ४१० धातु चुरादिगण में हैं, ३५ धातु स्वादिगण में हैं, १२ धातु तनादिगण में हैं, ६१ धातु क्र्यादिगण में हैं, ७३ धातु अदादिगण में हैं, २४ धातु जुहोत्यादिगण में हैं, २५ धातु रुधादिगण में हैं। धातुओं का १० गणों में विभाजन इसलिये किया गया है कि धातु से कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर ही धातुओं से

गणानुसार विकरण लगता है। जिस गण को कोई विकरण नहीं कहा गया है, उससे शप् लगता है। आर्धधातुक प्रत्ययों के लिये इन गणों की कोई आवश्यकता नहीं है।

कर्तरि शप् (३.१.६८) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, धातुओं से शप् विकरण लगाया जाता है। अत: भ्वादिगण के धातुओं में शप् विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं। धातुओं में शप् विकरण लगाकर, कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाने की विधि, भ्वादिगण में बतलाई गई है।

भ्वादिगण: - तत्र विशेषधातव:

१.	गुहूँ संवरणे	गुह्	गूह	गूहति/ते	ढाँकना, छुपाना
२.	गुपूँ रक्षणे	गुप्	गोपाय	गोपायति	रक्षा करना, सम्हाल कर रखना
३.	धूपँ सन्तापे	धूप्	धूपाय	धूपायति	दु:खी करना, प्रकाशित करना
४.	पणँ व्यवहारे स्तुतौ च	पण्	पणाय पण	पणायति पणते	क्रय विक्रय व्यवहार करना, स्तुति करना
५.	पनँ स्तुतौ	पन्	पनाय	पनायति	स्तुति करना
६.	कमुँ कान्तौ	कम्	कामय	कामयते	इच्छा करना
७.	गुपँ गोपने	गुप्	जुगुप्स गोपय	जुगुप्सते गोपयति गोपयते	घृणा करना, छुपाना, लुकाना, निन्दा करना
८.	तिजँ निशाने	तिज्	तितिक्ष तेजय	तितिक्षते तेजयति तेजयते	सहन करना, तीक्ष्ण करना, नुकीला करना धैर्य रखना, पैना करना
९.	कितँ निवासे रोगापनयने च	कित्	चिकित्स केतय	चिकित्सति केतयति/ते	चिकित्सा करना रहना, निवास करना
१०.	मानँ पूजायाम्	मान्	मीमांस मानय	मीमांसते मानयति/ते	जिज्ञासा करना, सम्मान करना, आदर करना समीक्षा करना
११.	बधँ बन्धने	बध्	बीभत्स बाधय	बीभत्सते बाधयति/ते	बाँधना
१२.	दानँ खण्डने	दान्	दीदांस दानय	दीदांसति/ते दानयति/ते	विभाजन करना चीरना

१३.	शानँ तेजने	शान्	शीशांस	शीशांसति/ते	तीक्ष्ण धार करना
			शानय	शानयति/ते	नुकीला करना
१४.	टुभ्राशृँ दीप्तौ	भ्राश्	भ्राश	भ्राशते	प्रकाशित होना,चमकना
			भ्राश्य	भ्राश्यते	
१५.	टुभ्लाशृँ दीप्तौ	भ्लाश्	भ्लाश	भ्लाशते	इच्छा करना, चमकना
			भ्लाश्य	भ्लाश्यते	प्रकाशित होना
१६.	भ्रमुँ चलने	भ्रम्	भ्रम	भ्रमति	घूमना, भ्रान्त होना
				भ्रम्य	भ्रम्यति
१७.	क्रमुँ पादविक्षेपे	क्रम्	क्रम	क्रमते	संक्रमण करना,लाँघना,
			क्राम	क्रामति	उछलकर चलना
			क्राम्य	क्राम्यति	पैरों से चलना,
१८.	लषँ कान्तौ	लष्	लष	लषति/ते	इच्छा करना,
			लष्य	लष्यति/ते	अभिलाषा करना
१९.	गम्लृँ गतौ	गम्	गच्छ	गच्छति	जाना, समझना, पाना
२०.	यमँ उपरमे	यम्	यच्छ	यच्छति	समाप्त करना,
					उपसंहार करना
२१.	पा पाने	पा	पिब	पिबति	पीना, पान करना
२२.	घ्रा गन्धोपादाने	घ्रा	जिघ्र	जिघ्रति	गन्ध सूँघना
२३.	ध्मा शब्दाग्नि-संयोगयोः	ध्मा	धम	धमति	फूँकना,
					शङ्ख आदि बजाना
२४.	ष्ठा गतिनिवृत्तौ	स्था	तिष्ठ	तिष्ठति	ठहरना, रुकना,
					स्थित होना
२५.	म्ना अभ्यासे	म्ना	मन	मनति	परम्परा से चलना,
					अभ्यास करना
२६.	दाण् दाने	दा	यच्छ	यच्छति	देना, दान करना
२७.	दृशिर् प्रेक्षणे	दृश्	पश्य	पश्यति	देखना
२८.	ऋ गतिप्रापणयोः	ऋ	ऋच्छ	ऋच्छति	जाना, पहुँचना,
					प्राप्त करना
२९.	सृ गतौ	सृ	धाव	धावति	चलना, सरकना,
					दौड़ना
३०.	शद्लृँ शातने	शद्	शीय	शीयते	कृश होना, क्षीण होना

३१.	षद्लृँ विशरण-गत्यवसादनेषु	सद्	सीद	सीदति	काटना, जाना,
					अवसन्न होना,
					खिन्न होना, स्थित होना
३२.	दंशँ दंशने	दंश्	दश	दशति	डंक मारना, डसना
३३.	ष्वञ्जँ परिष्वङ्गे (परि इत्युपसर्गेण सह)	स्वञ्ज्	स्वज	स्वजते	साथ रहना, मिलना,
					गले लगना, आलिङ्गन
					करना, सङ्ग करना
३४.	षञ्जँ सङ्गे	सञ्ज्	सज	सजति	सङ्ग करना, चिपकना
३५.	रञ्जँ रागे	रञ्ज्	रज	रजति/ते	रँगना, अनुरक्त होना
३६.	जभीँ गात्रविनामे	जभ्	जम्भ	जम्भते	जमुहाई लेना
३७.	कृपूँ सामर्थ्ये	कल्प्	कल्प	कल्पते	समर्थ होना,कर सकना
३८.	षस्जँ गतौ	सज्ज्	सज्ज	सज्जति/ते	काम में लगना,
					तैयार होना
३९.	आङः चमुँ अदने	चम्	आचाम	आचामति	खाना, भोजन करना
४०.	ष्ठिवुँ निरसने	ष्ठिव्	ष्ठीव	ष्ठीवति	थूकना
४१.	अक्षूँ व्याप्तौ	अक्ष्	अक्ष	अक्षति	व्याप्त करना
४२.	तक्षूँ तनूकरणे	तक्ष्	तक्ष	तक्षति	कष्ट पहुँचाना

इकारान्तधातवः

४३.	क्षि क्षये	क्षि	क्षय	क्षयति	नष्ट होना, नष्ट करना
४४.	जि जये	जि	जय	जयति	जीतना
४५.	जि अभिभवे	जि	जय	जयति	परास्त करना,
					अभिभूत करना
४६.	ज्रि अभिभवे	ज्रि	ज्रय	ज्रयति	परास्त करना,
					अभिभूत करना
४७.	टुओँश्वि गतिवृद्ध्योः	श्वि	श्वय	श्वयति	फूलना, बढ़ना
४८.	ष्मिङ् ईषद्धसने	स्मि	स्मय	स्मयते	मुस्कुराना
४९.	श्रिञ् सेवायाम्	श्रि	श्रय	श्रयति/श्रयते	आश्रय लेना,
					सेवा करना

ईकारान्तधातवः

५०.	डीङ् विहायसा गतौ	डी	डय	डयते	उड़ना, आकाश में चलना
५१.	णीञ् प्रापणे	नी	नय	नयति/नयते	ले जाना, पहुँचाना

उकारान्तधातवः

५२.	ध्रु स्थैर्ये	ध्रु	ध्रव	ध्रवति	स्थिर होना
५३.	दु गतौ	दु	दव	दवति	जाना, पिघलना
५४.	द्रु गतौ	द्रु	द्रव	द्रवति	जाना, पिघलना, दौड़ना
५५.	स्रु गतौ	स्रु	स्रव	स्रवति	बहना, टपकना
५६.	षु प्रसवैश्वर्ययो:	सु	सव	सवति	जन्म देना, स्वामी होना
५७.	गुङ् अव्यक्ते शब्दे	गु	गव	गवते	अव्यक्त शब्द करना, भनभनाना
५८	कुङ् शब्दे	कु	कव	कवते	शब्द करना, भनभनाना
५९.	घुङ् शब्दे	घु	घव	घवते	आवाज करना
६०.	उङ् शब्दे	उ	अव	अवते	आवाज करना
६१.	ङुङ् शब्दे	ङु	ङव	ङवते	आवाज करना
	(उङ्, कुङ्, खुङ्, घुङ्, गुङ्, ङुङ्, इत्यन्ये)				
६२.	च्युङ् गतौ	च्यु	च्यव	च्यवते	च्युत होना, फिसलना,
६३.	ज्युङ् गतौ	ज्यु	ज्यव	ज्यवते	प्राप्त करना, जाना
६४.	प्रुङ् गतौ	प्रु	प्रव	प्रवते	प्राप्त करना, जाना हिलना
६५.	प्लुङ् गतौ	प्लु	प्लव	प्लवते	उछलना, कूदना, तैरना, उतराना
६६.	रुङ् गतिरेषणयो:	रु	रव	रवते	प्राप्त करना, मारना

ऊकारान्तधातवः

६७.	भू सत्तायाम्	भू	भव	भवति	होना, प्रकट होना, सम्पन्न होना
६८.	मूङ् बन्धने	मू	मव	मवते	बाँधना
६९.	पूङ् पवने	पू	पव	पवते	स्वच्छ, पवित्र करना

ॠकारान्तधातवः

७०.	ह्वृ कौटिल्ये	ह्वृ	ह्वर	ह्वरति	कुटिलता करना
७१.	ह्वृ संवरणे	ह्वृ	ह्वर	ह्वरति	आच्छादित करना, उपयोग करना
७२.	हृञ् हरणे	हृ	हर	हरति/हरते	हरण करना, ले जाना पहुँचाना, चुराना

७३.	गृ सेचने	गृ	गर	गरति	सींचना, घिसना
७४.	घृ सेचने	घृ	घर	घरति	सींचना, घिसना
७५.	धृङ् अवध्वंसने	धृ	धर	धरते	गिरना, नष्ट होना
७६.	धृञ् धारणे	धृ	धर	धरति/धरते	धारण करना, सहन करना
७७.	स्वृ शब्दोपतापयो:	स्वृ	स्वर	स्वरति	शब्द करना,रोगी होना
७८.	ध्वृ हूर्च्छने	ध्वृ	ध्वर	ध्वरति	कुटिलता करना
७९.	भृञ् भरणे	भृ	भर	भरति/भरते	भरण पोषण करना
८०.	स्मृ चिन्तायाम्	स्मृ	स्मर	स्मरति	स्स्मरण करना, चिन्ता करना
	सृ गतौ	सृ	सरति		चलना, सरकना

ॠकारान्तधातवः

८१.	तॄ प्लवनतरणयो:	तॄ	तर	तरति	तैरना, उतराना, पार जाना

एजन्तधातवः

८२.	देङ् रक्षणे	दे	दय	दयते	रक्षा करना, पोषण करना
८३.	मेङ् प्रणिदाने	मे	मय	मयते	अदल बदल करना
८४.	धेट् पाने	धे	धय	धयति	स्तनपान करना
८५.	व्येञ् संवरणे	व्ये	व्यय	व्ययति/ते	आच्छादित करना, स्वीकार करना
८६.	वेञ् तन्तुसन्ताने	वे	वय	वयति/ते	बुनना
८७.	ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च	ह्वे	ह्वय	ह्वयति/ते	बुलाना, ललकारना
८८.	दैप् शोधने	दै	दाय	दायति	साफ करना, शुद्ध करना
८९.	गै शब्दे	गै	गाय	गायति	गाना
९०.	पै शोषणे	पै	पाय	पायति	सुखाना
९१.	प्यैङ् वृद्धौ	प्यै	प्याय	प्यायते	बढ़ना, वृद्धिंगत होना
९२.	श्यैङ् गतौ	श्यै	श्याय	श्यायते	जम जाना, सिकुड़ना, पिघलना
९३.	त्रैङ् पालने	त्रै	त्राय	त्रायते	रक्षा करना,पालन करना
९४.	ग्लै हर्षक्षये	ग्लै	ग्लाय	ग्लायति	ग्लानि करना,मलिन होना

९५.	म्लै॒ हर्षक्षये	म्लै	म्लाय	म्लायति	ग्लानि करना,मलिन होना
९६.	द्यै॒ न्यक्करणे	द्यै	द्याय	द्यायति	तिरस्कार करना, धिक्कारना
९७.	ओँवै॒ शोषणे	वै	वाय	वायति	सुखाना, सूखना
९८.	स्त्यै॒ शब्दसंघातयो:	स्त्यै	स्त्याय	स्त्यायति	बढ़ना, वृद्धिगत होना, शब्द करना
९९.	ष्ट्यै॒ शब्दसंघातयो:	स्त्यै	स्त्याय	स्त्यायति	बढ़ना, वृद्धिगत होना, शब्द करना
१००.	श्रै॒ पाके स्रै॒ इति केषुचित्पाठ:	श्रै	श्राय	श्रायति	पकाना, भोजन पकाना, तपाना
१०१.	द्रै॒ स्वप्ने	द्रै	द्राय	द्रायति	सोना, नींद लेना
१०२.	ध्रै॒ तृप्तौ	ध्रै	ध्राय	ध्रायति	तृप्त होना
१०३.	ध्यै॒ चिन्तायाम्	ध्यै	ध्याय	ध्यायति	ध्यान करना
१०४.	रै॒ शब्दे	रै	राय	रायति	शब्द करना
१०५.	खै॒ खदने	खै	खाय	खायति	स्थिर होना, हिंसा करना
१०६.	क्षै॒ क्षये	क्षै	क्षाय	क्षायति	क्षीण होना, नष्ट होना
१०७.	जै॒ क्षये	जै	जाय	जायति	क्षीण होना, नष्ट होना
१०८.	षै॒ क्षये	सै	साय	सायति	क्षीण होना, नष्ट होना
१०९.	शै॒ पाके	शै	शाय	शायति	पकाना, भोजन पकाना
११०.	कै॒ शब्दे	कै	काय	कायति	काँव-काँव करना
१११.	ष्टै॒ वेष्टने	स्तै	स्ताय	स्तायति	लपेटना, सजाना
११२.	ष्णै॒ वेष्टने (शोभायां चेत्येके)	स्नै	स्नाय	स्नायति	लपेटना, सजाना

इदुपधधातव:

११३.	टिकृँ गतौ	टिक्	टेक	टेकते	जाना
११४.	तिकृँ गतौ	तिक्	तेक	तेकते	जाना, डकारना
११५	इखँ गतौ रिख लिख इत्यपि	इख्	एख	एखति	जाना
११६.	इटँ गतौ	इट्	एट	एटति	जाना, ताडित करना
११७.	किटँ गतौ	किट्	केट	केटति	जाना

११८.	किटँ त्रासे	किट्	केट	केटति	त्रास देना, कष्ट पहुँचाना
११९.	खिटँ त्रासे	खिट्	खेट	खेटति	त्रास देना, कष्ट पहुँचाना
१२०.	शिटँ अनादरे	शिट्	शेट	शेटति	अनादर करना
१२१.	षिटँ अनादरे	सिट्	सेट	सेटति	अनादर करना
१२२.	चिटँ परप्रेष्ये	चिट्	चेट	चेटति	दासता करना, सेवा करना
१२३.	बिटँ आक्रोशे हिटँ इत्येके	बिट्	बेट	बेटति	क्रोध करना
१२४.	विटँ शब्दे	विट्	वेट	वेटति	आवाज करना
१२५.	पिटँ शब्दसंघातयो:	पिट्	पेट	पेटति	शब्द करना, इकट्ठा करना
१२६	पिठँ हिंसासंक्लेशनयो:	पिठ्	पेठ	पेठति	हिंसा करना, कष्ट पहुँचाना
१२७.	चितीँ संज्ञाने	चित्	चेत	चेतति	सम्यग्ज्ञान होना,जानना
१२८.	श्विताँ॒ वर्णे	श्वित्	श्वेत	श्वेतते	सफेद होना
१२९.	विथृँ याचने	विथ्	वेथ	वेथते	याचना करना, माँगना
१३०.	णिदृँ कुत्सासन्निकर्षयो:	निद्	नेद	नेदति/ते	निन्दा करना, निकट होना
१३१.	ञिष्विदाँ अव्यक्ते शब्दे	स्विद्	स्वेद	स्वेदति	अव्यक्त शब्द करना
१३२.	ञिष्विदाँ॒ स्नेहनमोचनयो:	स्विद्	स्वेद	स्वेदते	पसीना आना, वश में करना
१३३.	मिदृँ मेधाहिंसनयो:	मिद्	मेद	मेदति/ते	मोटा होना, हिंसा करना
१३४.	ञिमिदाँ॒ स्नेहने	मिद्	मेद	मेदते	चिकना होना, स्थूल होना
१३५.	षिधँ गत्याम्	सिध्	सेध	सेधति	जाना, भगाना, अपसारण करना
१३६.	षिधूँ शास्त्रे माङ्गल्ये च	सिध्	सेध	सेधति	पढ़ना, पढ़ाना, शुभ होना

१३७.	तिपृँ क्षरणे	तिप्	तेप	तेपते	क्षरण होना,नष्ट होना
१३८	ष्टिपृँ क्षरणे	स्तिप्	स्तेप	स्तेपते	क्षरण होना, नष्ट होना
१३९.	तिलँ गतौ	तिल्	तेल	तेलति	जाना, फिसलना
१४०	क्षिवुँ निरसने	क्षिव्	क्षेव	क्षेवति	थूकना, फेंकना
१४१.	णिशँ समाधौ	निश्	नेश	नेशति	चित्तवृत्ति को रोकना
१४२.	मिशँ शब्दे	मिश्	मेश	मेशति	शब्द करना, गुञ्जार करना
१४३.	शिषँ हिंसायाम्	शिष्	शेष	शेषति	बचाना,समाप्त करना
१४४	रिषँ हिंसायाम्	रिष्	रेष	रेषति	हिंसा करना, समाप्त करना
१४५.	जिषुँ सेचने	जिष्	जेष	जेषति	घर्षण करना, रगड़ना
१४६.	विषुँ सेचने	विष्	वेष	वेषति	घर्षण करना, रगड़ना
१४७.	मिषुँ सेचने	मिष्	मेष	मेषति	घर्षण करना, रगड़ना
१४८.	श्रिषुँ दाहे	श्रिष्	श्रेष	श्रेषति	जलाना
१४९.	श्लिषुँ दाहे	श्लिष्	श्लेष	श्लेषति	जलाना
१५०	त्विषँ दीप्तौ	त्विष्	त्वेष	त्वेषति/ते	प्रकाशित होना, चमकना
१५१.	पिसृँ गतौ	पिस्	पेस	पेसति	जाना, विकृत होना
१५२.	मिहँ सेचने	मिह्	मेह	मेहति	घर्षण करना, रगड़ना
१५३.	प्लिहँ गतौ	प्लिह्	प्लेह	प्लेहते	कुटिल चलना

उदुपधधातवः

१५४.	कुकँ आदाने	कुक्	कोक	कोकते	लेना, ग्रहण करना
१५५.	उखँ गतौ	उख्	ओख	ओखति	जाना
१५६.	शुचँ शोके	शुच्	शोच	शोचति	शोक करना
१५७.	कुचँ शब्दे तारे	कुच्	कोच	कोचति	प्रतिध्वनि करना, गूँजना
१५८.	कुचँ सम्पर्चन-कौटिल्यप्रतिष्टम्भ-विलेखनेषु	कुच्	कोच	कोचति	सम्पर्क करना, मिलाना, रोकना, क्षत करना, लपेटना, टेढ़ा करना
१५९.	म्रुचुँ गतौ	म्रुच्	म्रोच	म्रोचति	जाना, धोखा देना
१६०.	म्लुचुँ गतौ	म्लुच्	म्लोच	म्लोचति	जाना, धोखा देना
१६१.	ग्रुचुँ स्तेयकरणे	ग्रुच्	ग्रोच	ग्रोचति	चोरी करना, कूदना
१६२.	ग्लुचुँ स्तेयकरणे	ग्लुच्	ग्लोच	ग्लोचति	चोरी करना, कूदना

१६३.	ष्टुचँ प्रसादे	स्तुच्	स्तोच	स्तोचते	प्रसन्न करना
१६४.	रुचँ दीप्तावभि-प्रीतौ च	रुच्	रोच	रोचते	प्रकाशित होना, अच्छा लगना
१६५	कुजुँ स्तेयकरणे	कुज्	कोज	कोजति	चोरी करना, खोजना
१६६.	खुजुँ स्तेयकरणे	खुज्	खोज	खोजति	चोरी करना, खोजना
१६७	तुजँ हिंसायाम्	तुज्	तोज	तोजति	हिंसा करना, मारना
१६८.	मुजँ शब्दे	मुज्	मोज	मोजति	मौज करना
१६९	स्फुटँ विकसने	स्फुट्	स्फोट	स्फोटते	खिलना, विकसित होना
१७०	स्फुटिर् विशरणे	स्फुट्	स्फोट	स्फोटति	अलग अलग, करना, काटना
१७१.	लुटँ विलोडने	लुट्	लोट	लोटति	मन्थन करना, मथना
	डान्तोऽयमित्येके	लुड्	लोड	लोडति	आलोडित करना
१७२.	घुटँ परिवर्तने	घुट्	घोट	घोटते	बदलना, सञ्चलन करना
१७३	रुटँ प्रतिघाते	रुट्	रोट	रोटते	प्रतिहिंसा करना, बदले में मारना
१७४	लुटँ प्रतिघाते	लुट्	लोट	लोटते	प्रतिहिंसा करना,
	डान्तोऽयमित्येके	लुड्	लोड	लोडते	बदले में मारना
१७५	लुठँ प्रतिघाते	लुठ्	लोठ	लोठते	प्रतिहिंसा करना,लोटना
१७६.	रुठँ उपघाते	रुठ्	रोठ	रोठति	मारना, पीड़ा देना
१७७	लुठँ उपघाते	लुठ्	लोठ	लोठति	मारना, पीड़ा देना
१७८	उठँ उपघाते (ऊठ इत्येके)	उठ्	ओठ	ओठति	मारना, पीड़ा देना
१७९.	शुठँ गतिप्रतिघाते शुठिँ इति स्वामी	शुठ्	शोठ	शोठति	अपराध करना, रुकावट डालना
१८०.	मुडँ मर्दने	मुड्	मोड	मोडति	मसलना, कुचलना, मोड़ना
१८१.	प्रुडँ मर्दने	प्रुड्	प्रोड	प्रोडति	मसलना, कुचलना, तोड़ना
१८२.	तुडृँ तोडने	तुड्	तोड	तोडति	खोदना, झरना, निकलना

१८३.	हुडृँ गतौ	हुड्	होड	होडति	खोदना, खींचना, जानना
१८४	घुणँ भ्रमणे	घुण्	घोण	घोणते	घूमना, ग्रहण करना
१८५.	च्युतिर् आसेचने	च्युत्	च्योत	च्योतति	बहना, सींचना, च्युत होना
१८६.	श्चुतिर् क्षरणे	श्चुत्	श्चोत	श्चोतति	टपकना, बहना,
	श्च्युतिर् इत्येके।	श्च्युत्	श्च्योत	श्च्योतति	नष्ट होना
१८७.	युतृँ भासने	युत्	योत	योतते	चमकना,प्रकाशित होना
१८८.	जुतृँ भासने	जुत्	जोत	जोतते	चमकना,प्रकाशित होना
१८९.	द्युतँ दीप्तौ	द्युत्	द्योत	द्योतते	चमकना,प्रकाशित होना
१९०.	मुदँ हर्षे	मुद्	मोद	मोदते	प्रसन्न होना, आनन्दित होना
१९१.	गुदँ क्रीडायाम्	गुद्	गोद	गोदते	क्रीडा करना
१९२	बुधँ अवगमने	बुध्	बोध	बोधति	समझना, जानना
१९३.	बुधिँर् बोधने	बुध्	बोध	बोधति/ते	समझना, जानना
१९४.	चुपँ मन्दायां गतौ	चुप्	चोप	चोपति	धीरे चलना, मन्द मन्द चलना
१९५.	तुपँ हिंसायाम्	तुप्	तोप	तोपति	हिंसा करना, निन्दा करना
१९६.	त्रुपँ हिंसायाम्	त्रुप्	त्रोप	त्रोपति	हिंसा करना, निन्दा करना,
१९७.	तुफँ हिंसायाम्	तुफ्	तोफ	तोफति	हिंसा करना, निन्दा करना
१९८.	त्रुफँ हिंसायाम्	त्रुफ्	त्रोफ	त्रोफति	हिंसा करना, निन्दा करना, मारना
१९९.	ष्टुभुँ स्तम्भे	स्तुभ्	स्तोभ	स्तोभते	किसी काम को रोक देना
२००.	शुभँ भाषणे भासने च	शुभ्	शोभ	शोभति	बोलना, चमकना
२०१.	शुभँ दीप्तौ	शुभ्	शोभ	शोभते	चमकना, प्रकाशित होना
२०२.	क्षुभँ सञ्चलने	क्षुभ्	क्षोभ	क्षोभते	क्षुब्ध होना, रूप बदलना
२०३.	तुभँ हिंसायाम्	तुभ्	तोभ	तोभते	हिंसा करना
२०४.	पुलँ महत्त्वे	पुल्	पोल	पोलति	बढ़ना, ऊँचा होना

२०५.	कुलँ संस्त्याने बन्धुषु च	कुल्	कोल	कोलति	बटोरना
२०६.	हुलँ गतौ	हुल्	होल	होलति	जाना, ढाँकना
२०७.	क्रुशँ आह्वाने रोदने च	क्रुश्	क्रोश	क्रोशति	बुलाना, चिल्लाना, क्रन्दन करना
२०८.	घुषिर् अविशब्दने	घुष्	घोष	घोषति	घोष करना
२०९.	रुषँ हिंसायाम्	रुष्	रोष	रोषति	हिंसा करना, रोष करना
२१०.	उषँ दाहे	उष्	ओष	ओषति	जलाना, गरम करना
२११.	प्रुषँ दाहे	प्रुष्	प्रोष	प्रोषति	जलाना, गरम करना
२१२.	प्लुषुँ दाहे	प्लुष्	प्लोष	प्लोषति	जलाना, गरम करना
२१३.	पुषँ पुष्टौ	पुष्	पोष	पोषति	पोषण करना
२१४.	तुसँ शब्दे	तुस्	तोस	तोसति	शब्द करना
२१५.	तुहिर् अर्दने	तुह्	तोह	तोहति	याचना करना, माँगना
२१६.	दुहिर् अर्दने	दुह्	दोह	दोहति	याचना करना, माँगना
२१७.	उहिर् अर्दने	उह्	ओह	ओहति	याचना करना, माँगना
२१८.	रुहँ बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च	रुह्	रोह	रोहति	ऊगना, जन्म देना

ऋदुपधधातवः

२१९.	वृकँ आदाने	वृक्	वर्क	वर्कति	लेना, ग्रहण करना, कूदना
२२०.	धृजँ गतौ	धृज्	धर्ज	धर्जति	जाना, चलना
२२१.	गृजँ शब्दे	गृज्	गर्ज	गर्जति	शब्द करना, गरजना
२२२.	ऋजँ गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु	ऋज्	अर्ज	अर्जते	जाना, स्थित होना, धन कमाना
२२३.	भृजीँ भर्जने	भृज्	भर्ज	भर्जते	भूँजना, सेंकना
२२४.	वृतुँ वर्तने	वृत्	वर्त	वर्तते	व्यवहार करना, वर्तमान रहना
२२५.	वृधुँ वृद्धौ	वृध्	वर्ध	वर्धते	बढ़ना, आगे बढ़ना
२२६.	शृधुँ शब्दकुत्सायाम्	शृध्	शर्ध	शर्धते	अपानवायु छोड़ना
२२७.	शृधुँ उन्दने	शृध्	शर्ध	शर्धति/ते	गीला करना
२२८.	मृधुँ उन्दने	मृध्	मर्ध	मर्धति/ते	गीला करना, मर्दन करना

२२९.	सृप्लृँ गतौ	सृप्	सर्प	सर्पति	सरकना, चलना, रेंगना
२३०.	षृभुँ हिंसायाम्	सृभ्	सर्भ	सर्भति	हिंसा करना, मारना
२३१.	पृषुँ सेचने	पृष्	पर्ष	पर्षति	घर्षण करना, गीला करना
२३२.	वृषुँ सेचने हिंसासंक्लेशनयोश्च	वृष्	वर्ष	वर्षति	घर्षण करना, कष्ट देना, गीला करना
२३३.	मृषुँ सेचने, सहने च	मृष्	मर्ष	मर्षति	घर्षण करना, सहन करना
२३४.	घृषुँ संघर्षे	घृष्	घर्ष	घर्षति	रगड़ना, घिसना, संघर्ष करना
२३५.	हृषुँ अलीके	हृष्	हर्ष	हर्षति	आनन्दित होना, झूठ बोलना
२३६.	कृषँ विलेखने	कृष्	कर्ष	कर्षति	भूमि को हल.से.जोतना,
२३७.	दृहँ वृद्धौ	दृह्	दर्ह	दर्हति	बढ़ना, स्थूल होना
२३८.	बृहँ वृद्धौ बृहिँर् इत्येके	बृह्	बर्ह	बर्हति	बढ़ना, स्थूल होना, दृढ़ होना
२३९.	गृहूँ ग्रहणे	गृह्	गर्ह	गर्हते	ग्रहण करना

अवशिष्टधातव:, तत्र अदुपधा:

२४०.	ष्टकँ प्रतिघाते	स्तक्	स्तक	स्तकति	बदले में आघात करना
२४१.	अकँ कुटिलायां गतौ	अक्	अक	अकति	कुटिल चलना, टेढ़ा चलना
२४२.	तकँ हसने	तक्	तक	तकति	हँसना
२४३.	चकँ तृप्तौ प्रतिघाते च	चक्	चक	चकते	तृप्त होना, रुकावट करना
२४४.	चकँ तृप्तौ	चक्	चक	चकते	तृप्त होना
२४५.	ककँ लौल्ये	कक्	कक	ककते	चपलता करना अभिमान करना
२४६.	कखँ हसने	कख्	कख	कखति	हँसना

२४७.	कखँ हसने	कख्	कख	कखति	हँसना
२४८.	बखँ गतौ	बख्	बख	बखति	जाना
२४९.	मखँ गतौ	मख्	मख	मखति	प्रज्वलित होना
२५०.	णखँ गतौ	नख्	कख	नखति	अङ्कुरित होना
२५१.	रखँ गतौ	रख्	रख	रखति	जाना
२५२.	लखँ गतौ	लख्	लख	लखति	जाना
२५३.	रगँ शङ्कायाम्	रग्	रग	रगति	शङ्का करना
२५४.	अगँ कुटिलायां गतौ	अग्	अग	अगति	कुटिल चलना, टेढ़ा चलना
२५५.	लगँ सङ्गे	लग्	लग	लगति	लगना, चिपकना, मिलना
२५६.	ह्वगेँ संवरणे	ह्वग्	ह्वग	ह्वगति	ढाँकना, आच्छादित करना
२५७.	ह्लगेँ संवरणे	ह्लग्	ह्लग	ह्लगति	ढाँकना, आच्छादित करना
२५८.	षगेँ संवरणे	सग्	सग	सगति	ढाँकना, आच्छादित करना
२५९.	ष्टगेँ संवरणे	स्तग्	स्तग	स्तगति	ढाँकना, आच्छादित करना
२६०.	कगेँ नोच्यते, अस्यायमर्थ इति विशिष्य नोच्यते	कग्	कग	कगति	कल धातु के समान यह धातु भी अनेकार्थक है।
२६१.	घघँ हसने	घघ्	घघ	घघति	हँसना
२६२.	षचँ सेचने, सेवने च	सच्	सच	सचते	घिसना, रगड़ना
२६३.	षचँ समवाये	सच्	सच	सचति/ते	इकट्ठा करना
२६४.	शचँ व्यक्तायां वाचि	शच्	शच	शचते	स्पष्ट बोलना, सत्य बोलना
२६५.	श्वचँ गतौ	श्वच्	श्वच	श्वचते	चलना
२६६.	कचँ बन्धने	कच्	कच	कचते	बाँधना
२६७.	मचँ कल्कने	मच्	मच	मचते	ॠण देना
२६८.	डुपचँष् पाके	पच्	पच	पचति/ते	पकाना
२६९.	ध्रजँ गतौ	ध्रज्	ध्रज	ध्रजति	जाना
२७०.	ध्वजँ गतौ	ध्वज्	ध्वज	ध्वजति	ऊपर की ओर जाना
२७१.	खजँ मन्थे	खज्	खज	खजति	मथना
२७२.	लजँ भर्जने	लज्	लज	लजति	भूँजना, तलना,
२७३.	जजँ युद्धे	जज्	जज	जजति	उपद्रव करना

२७४.	गजँ शब्दे मदने च	गज्	गज	गजति	मतवाला होना, रोना
२७५.	वजँ गतौ	वज्	वज	वजति	वेग पूर्वक जाना, उड़ना
२७६.	व्रजँ गतौ	व्रज्	व्रज	व्रजति	वेग पूर्वक जाना, उड़ना
२७७.	भजँ सेवायाम्	भज्	भज	भजति/ते	सेवा करना, आश्रय लेना
२७८.	अजँ गतिक्षेपणयो:	अज्	अज	अजति	जाना, टेढ़ा चलना,फेंकना
२७९.	यजँ देवपूजा - सङ्गतिकरणदानेषु	यज्	यज	यजति/ते	देवपूजा, धारण करना, देना
२८०.	त्यजँ हानौ	त्यज्	त्यज	त्यजति	त्याग करना
२८१.	कटीँ गतौ	कट्	कट	कटति	जाना
२८२.	कटेँ वर्षावरणयो: चटेँ इत्येके।	कट्	कट	कटति	बरसाना, गिराना, ढाँकना
२८३.	अटँ गतौ	अट्	अट	अटति	घूमना, खेल खिलाना
२८४.	खटँ काङ्क्षायाम्	खट्	खट	खटति	इच्छा करना, भटकना, खटना
२८५.	घटँ चेष्टायाम्	घट्	घट	घटते	घटित होना, उचित
२८६.	जटँ संघाते	जट्	जट	जटति	चिपकाना, इकट्ठा करना
२८७.	झटँ संघाते	झट्	झट	झटति	चिपकाना इकट्ठा करना
२८८.	णटँ नृत्तौ	नट्	नट	नटति	नाचना, नाट्य करना
२८९.	णटँ नृत्तौ, गतौ, नतावित्येके	नट्	नट	नटति	नाचना, झुकना
२९०.	तटँ उच्छ्राये	तट्	तट	तटति	ऊँचा होना, उठना, किनारा करना
२९१.	पटँ गतौ	पट्	पट	पटति	ढाँकना, जाना, पाटना
२९२.	भटँ भृतौ	भट्	भट	भटति	मजदूरी करना
२९३.	भटँ परिभाषणे	भट्	भट	भटति	स्पष्ट बोलना, भौंकना
२९४.	रटँ परिभाषणे	रट्	रट	रटति	स्पष्ट बोलना, झूठ बोलना
२९५.	लटँ बाल्ये	लट्	लट	लटति	बालक्रीड़ा करना
२९६..	वट परिभाषणे	वट्	वट	वटति	स्पष्ट बोलना, झूठ बोलना
२९७.	वटँ वेष्टने	वट्	वट	वटति	लपेटना

२९८.	शटँ रुजाविशरण - गत्यवसादनेषु	शट्	शट	शटति	छेदन करना, जाना
२९९.	षटँ अवयवे	सट्	सट	सटति	चिपकना, समीप जाना
३००	हटँ दीप्तौ	हट्	हट	हटति	प्रकाशित होना
३०१.	पठँ व्यक्तायां वाचि	पठ्	पठ	पठति	पढ़ना, अध्ययन करना
३०२.	वठँ स्थौल्ये	वठ्	वठ	वठति	मोटा होना
३०३.	मठँ मदनिवासयो:	मठ्	मठ	मठति	निवास करना
३०४.	कठँ कृच्छ्रजीवने	कठ्	कठ	कठति	कष्ट पाना
३०५.	रठँ परिभाषणे रटँ इत्यन्ये।	रठ्	रठ	रठति	रटना, स्पष्ट बोलना
३०६.	हठँ प्लुतिशठत्वयो: बलात्कार इत्यन्ये	हठ्	हठ	हठति	बलपूर्वक करना, कूदना
३०७.	शठँ कैतवे च	शठ्	शठ	शठति	धूर्तता करना, जुआ खेलना
३०८.	अडँ उद्यमे	अड्	अड	अडति	उद्योग करना, प्रयास करना
३०९.	लडँ विलासे	लड्	लड	लडति	सन्तुष्ट होना, लड़ियाना
३१०.	कडँ मदे कडि इत्येके	कड्	कड	कडति	अहंकार करना
३११.	गडँ सेचने	गड्	गड	गडति	घिसना
३१२.	अणँ शब्दे	अण्	अण	अणति	ध्वनि करना
३१३.	रणँ शब्दे	रण्	रण	रणति	शब्द करना
३१४.	वणँ शब्दे	वण्	वण	वणति	बोलना
३१५.	भणँ शब्दे	भण्	भण	भणति	बोलना
३१६.	मणँ शब्दे	मण्	मण	मणति	कहना
३१७.	कणँ शब्दे	कण्	कण	कणति	शस्त्र से काटना
३१८.	क्वणँ शब्दे	क्वण्	क्वण	क्वणति	झनकार करना
३१९.	व्रणँ शब्दे	व्रण्	व्रण	व्रणति	चोट करना
३२०.	भ्रणँ शब्दे	भ्रण्	भ्रण	भ्रणति	चोट करना
३२१.	ध्वणँ शब्दे धणँ इत्यादि केचित्	ध्वण्	ध्वण	ध्वणति	ध्वनि करना, कोलाहल करना

३२२.	ध्रणँ शब्दे	ध्रण्	ध्रण	ध्रणति	आवाज करना,
	नान्तोऽयम्। बण इति केचित्।				शब्द करना
३२३.	कणँ गतौ	कण्	कण	कणति	जाना, काटना
३२४.	रणँ गतौ	रण्	रण	रणति	जाना, युद्ध करना
३२५	चणँ गतौ दाने च	चण्	चण	चणति	चमकना, देना
३२६.	शणँ गतौ दाने च	शण्	शण	शणति	उपद्रव करना, देना
३२७.	श्रणँ गतौ दाने च	श्रण्	श्रण	श्रणति	जाना, देना
	शणँ गतावित्यन्ये				
३२८.	फणँ गतौ	फण्	फण	फणति	आश्रय लेना, जाना,
					संकुचित होना
३२९.	यतीँ प्रयत्ने	यत्	यत	यतते	यत्न करना
३३०.	चतेँ याचने	चत्	चत	चतति/ते	याचना करना
३३१.	अतँ सातत्यगमने	अत्	अत	अतति	लगातार चलना,
					बिना रुके चलना
३३२.	पत्लृँ गतौ	पत्	पत	पतति	गिरना, पड़ना
३३३.	पथेँ गतौ	पथ्	पथ	पथति	मार्ग में चलना
३३४.	क्वथेँ निष्पाके	क्वथ्	क्वथ	क्वथति	उबलना, खौलना
३३५.	मथेँ विलोडने	मथ्	मथ	मथति	मथना, आलोडन करना
३३६.	व्यथँ	व्यथ्	व्यथ	व्यथते	व्यथित होना, डरना
	भयसञ्चलनयो:				
३३७.	प्रथँ प्रख्याने	प्रथ्	प्रथ	प्रथते	प्रसिद्ध होना
३३८.	श्रथँ हिंसायाम्	श्रथ्	श्रथ	श्रथति	मार डालना,
	श्नथँ, श्लथँ इति केचित्				पीड़ित करना
३३९.	श्लथँ हिंसायाम्	श्लथ्	श्लथ	श्लथति	मारना, शिथिल होना
३४०.	क्रथँ हिंसायाम्	क्रथ्	क्लथ	क्रथति	मारना, कूटना
३४१.	क्लथँ हिंसायाम्	क्लथ्	क्रथ	क्लथति	मारना, मार डालना
३४२.	हदँ पुरीषोत्सर्गे	हद्	हद	हदते	मल त्यागना
३४३.	वदँ व्यक्तायां वाचि	वद्	वद	वदति	स्पष्ट बोलना
३४४.	गदँ व्यक्तायां वाचि	गद्	गद	गदति	स्पष्ट बोलना
३४५.	बदँ स्थैर्ये	बद्	बद	बदति	स्थिर होना
३४६.	खदँ स्थैर्ये	खद्	खद	खदति	स्थिर होना

	हिंसायां च चाद् भक्षणे।				
३४७.	रदँ विलेखने	रद्	रद	रदति	खोदना, कुरेदना
३४८.	णदँ अव्यक्ते शब्दे	नद्	नद	नदति	अव्यक्त,
					कलकल ध्वनि करना
३४९.	ददँ दाने	दद्	दद	ददते	दान देना
३५०.	ष्वदँ आस्वादने	स्वद्	स्वद	स्वदते	स्वाद लेना,
					अच्छा लगना
३५१.	चदेँ याचने	चद्	चद	चदति/ते	माँगना, याचना करना
३५२.	म्रदँ मर्दने	म्रद्	म्रद	म्रदते	मसलना
३५३.	स्खदँ स्खदने	स्खद्	स्खद	स्खदते	काटना, स्खलित होना
३५४.	स्खदिँर् स्खदने	स्खद्	स्खद	स्खदति	काटना, स्खलित होना
३५५.	दधँ धारणे	दध्	दध	दधते	धारण करना
३५६.	खनुँ अवदारणे	खन्	खन	खनति/ते	खोदना
३५७.	ष्टनँ शब्दे	स्तन्	स्तन	स्तनति	मेघ गरजना,
					कर्कश आवाज करना
३५८.	वनँ शब्दे	वन्	वन	वनति	आवाज करना,
					शब्द करना
३५९.	वनँ सम्भक्तौ	वन्	वन	वनति	आवाज करना,
					शब्द करना
३६०.	वनुँ हिंसायाम्	वन्	वन	वनति	आवाज करना,
.			वन	वनति	हिंसा करना
					शब्द करना
३६१.	स्वनँ शब्दे	स्वन्	स्वन	स्वनति	आवाज करना,
					शब्द करना
३६२.	ध्वनँ शब्दे	ध्वन्	ध्वन	ध्वनति	आवाज करना,
					शब्द करना
३६३.	षणँ सम्भक्तौ	सन्	सन	सनति	सम्यक् सेवा करना
३६४.	कनीँ	कन्	कन	कनति	चमकना,
	दीप्तिकान्तिगतिषु				प्रकाशित करना
३६५.	तपँ सन्तापे	तप्	तप	तपति	दु:खी होना,
					प्रकाशित होना
३६६.	त्रपूँष् लज्जायाम्	त्रप्	त्रप	त्रपते	लज्जित होना

३६७.	डुवपँ बीजसन्ताने छेदनेऽपि	वप्	वप	वपति	बीज बोना
३६८.	शपँ आक्रोशे	शप्	शप	शपति/ते	निन्दा करना, शाप देना
३६९.	जपँ व्यक्तायां वाचि जपँ मानसे च।	जप्	जप	जपति	जपना, स्पष्ट बोलना
३७०.	चपँ सान्त्वने	चप्	चप	चपति	सान्त्वना देना
३७१.	षपँ समवाये	सप्	सप	सपति	इकट्ठा होना
३७२.	रपँ व्यक्तायां वाचि	रप्	रप	रपति	स्पष्ट बोलना
३७३.	लपँ व्यक्तायां वाचि	लप्	लप	लपति	बोलना, दु:ख प्रकट करना
३७४.	क्रपँ कृपायां गतौ च	क्रप्	क्रप	क्रपते	दया करना, जाना
३७५.	रफँ गतौ	रफ्	रफ	रफति	जाना
३७६.	कबृँ वर्णे	कब्	कब	कबते	शृङ्गार करना,रँगना
३७७.	रभँ राभस्ये	रभ्	रभ	रभते	कार्य प्रारम्भ करना,
३७८.	यभँ मैथुने	यभ्	यभ	यभति	मैथुन करना
३७९.	डुलभँष् प्राप्तौ	लभ्	लभ	लभते	प्राप्त करना
३८०.	णभँ हिंसायाम् अभावे च	नभ्	नभ	नभते	मारना
३८१.	छमुँ अदने	छम्	छम	छमति	खाना, भोजन करना
३८२.	जमुँ अदने	जम्	जम	जमति	निगलना
३८३.	झमुँ अदने	झम्	झम	झमति	खाना, भोजन करना
	जिमुँ इति केचित्	जिम्	जेम	जेमति	खाना, भोजन करना
३८४.	अमँ गतौ, शब्दे, सम्भक्तौ च	अम्	अम	अमति	जाना
३८५.	द्रमँ गतौ	द्रम्	द्रम	द्रमति	जाना, धारण पोषण करना
३८६.	षमँ अवैकल्ये	सम्	सम	समति	बाँटना, चुकता करना
३८७.	ष्टमँ अवैकल्ये	स्तम्	स्तम	स्तमति	बाँटना, चुकता करना
३८८.	क्षमूँष् सहने	क्षम्	क्षम	क्षमते	सहन करना, क्षमा करना
३८९.	स्यमुँ शब्दे	स्यम्	स्यम	स्यमति	आवाज करना
३९०.	टुवमँ उद्गिरणे	वम्	वम	वमति	उगलना, वमन करना
३९१.	णमँ प्रह्वत्वे शब्दे च	नम्	नम	नमति	झुकना, नमन करना

३९२.	रमुँ क्रीडायाम्	रम्	रम	रमते	खेलना, रमना, आनन्दित होना
३९३.	हयँ गतौ	हय्	हय	हयति	जाना, दौड़ना
३९४.	अयँ गतौ	अय्	अय	अयते	रवाना होना, जाना
३९५.	वयँ गतौ	वय्	वय	वयते	प्रस्थान करना, जाना
३९६.	पयँ गतौ	पय्	पय	पयते	प्रस्थान करना, जाना
३९७.	मयँ गतौ	मय्	मय	मयते	प्रस्थान करना, जाना
३९८.	चयँ गतौ	चय्	चय	चयते	निकलना, जाना
३९९.	तयँ गतौ	तय्	तय	तयते	प्रस्थान करना, जाना
४००.	णयँ गतौ	नय्	नय	नयते	प्रस्थान करना, जाना
४०१.	दयँ दानगतिरक्षण - हिंसाऽऽदानेषु	दय्	दय	दयते	जाना, देना, लेना
४०२.	रयँ गतौ, लय च	रय्	रय	रयते	वेग से जाना
४०३.	व्ययँ' गतौ	व्यय्	व्यय	व्ययति/ते	जाना, खर्च करना
४०४.	चरँ गतौ, चरति- र्भक्षणेऽपि, इति केचित्	चर्	चर	चरति	जाना, खाना, विचरण करना
४०५.	त्सरँ छद्मगतौ	त्सर्	त्सर	त्सरति	कुटिल या वक्रगति से चलना
४०६.	क्मरँ हूर्च्छने	क्मर्	क्मर	क्मरति	कुटिलता करना
४०७.	क्षरँ सञ्चलने	क्षर्	क्षर	क्षरति	रिसना, क्षरण होना
४०८.	ञित्वराँ सम्भ्रमे	त्वर्	त्वर	त्वरते	जल्दबाजी करना,
४०९.	ज्वरँ रोगे	ज्वर्	ज्वर	ज्वरति	बुखार आना, रोगी होना
४१०.	ञिफलाँ विशरणे	फल्	फल	फलति	फलना, झरना,
४११.	फलँ निष्पत्तौ	फल्	फल	फलति	पूर्ण होना, निष्पन्न होना
४१२.	ह्वलँ चलने	ह्वल्	ह्वल	ह्वलति	स्पन्दन करना, काँपना
४१३.	ह्मलँ चलने	ह्मल्	ह्मल	ह्मलति	स्पन्दन करना, काँपना
४१४.	ज्वलँ दीप्तौ	ज्वल्	ज्वल	ज्वलति	जलना, चमकना, प्रकाशित होना

४१५.	ज्वलँ दीप्तौ	ज्वल्	ज्वल	ज्वलति	जलना, चमकना, प्रकाशित होना
४१६.	अलँ भूषण-पर्याप्तिवारणेषु	अल्	अल	अलति	सजाना, रोकना, बस करना
४१७.	स्खलँ सञ्चलने	स्खल्	स्खल	स्खलति	स्खलित होना
४१८.	खलँ सञ्चये	खल्	खल	खलति	संग्रह करना, इकट्ठा करना
४१९.	गलँ अदने	गल्	गल	गलति	खाना, भोजन करना
४२०.	षलँ गतौ	सल्	सल	सलति	जाना
४२१.	दलँ विशरणे	दल्	दल	दलति	काटना
४२२.	श्वलँ आशुगमने	श्वल्	श्वल	श्वलति	तेज जाना
४२३.	वल॒ँ संवरणे संचरणे च	वल्	वल	वलते	आच्छादित करना,
४२४.	शल॒ँ चलन-संवरणयो:	शल्	शल	शलते	चलना, आच्छादित करना
४२५.	शलँ गतौ	शल्	शल	शलति	जाना
४२६.	मल॒ँ धारणे	मल्	मल	मलते	धारण करना
४२७.	भल॒ँ परिभाषण - हिंसादानेषु	भल्	भल	भलते	स्पष्ट बोलना, हिंसा करना
४२८.	कल॒ँ शब्दसंख्यानयो:	कल्	कल	कलते	बोलना, गिनना
४२९.	चलँ कम्पने	चल्	चल	चलति	चलना, काँपना,
४३०.	जलँ घातने	जल्	जल	जलति	तेज या पैना करना
४३१.	टलँ वैक्लव्ये	टल्	टल	टलति	भय से व्याकुल होना
४३२.	ट्वलँ वैक्लव्ये	ट्वल्	ट्वल	ट्वलति	भय से व्याकुल होना
४३३.	ष्ठलँ स्थाने	स्थल्	स्थल	स्थलति	स्थिर रहना, ठहरना
४३४.	हलँ विलेखने	हल्	हल	हलति	जोतना, कुरेदना, खींचना
४३५.	णलँ गन्धे, बन्धन इत्येके	नल्	नल	नलति	सूँघना, बाँधना
४३६.	पलँ गतौ	पल्	पल	पलति	जाना
४३७.	बलँ प्राणने	बल्	बल	बलति	शक्तिमान् होना
४३८.	मवँ बन्धने	मव्	मव	मवति	बाँधना
४३९.	अवँ रक्षणगति -	अव्	अव	अवति	रक्षा करना, जाना

	कान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादान-भागवृद्धिषु				
४४०.	शवँ गतौ	शव्	शव	शवति	जाना, विकृत होना
४४१.	मशँ शब्दे, रोषकृते च	मश्	मश	मशति	शब्द करना, क्रोध करना
४४२.	शशँ प्लुतगतौ	शश्	शश	शशति	उछलकर चलना
४४३.	स्पशँ' बाधन-स्पर्शनयो:	स्पश्	स्पश	स्पशति/ते	बाधा करना, गूँथना, बाँधना
४४४.	चषँ' भक्षणे	चष्	चष	चषति/ते	खाना, भक्षण करना
४४५.	छषँ' हिंसायाम्	छष्	छष	छषति/ते	मार डालना
४४६.	झषँ' आदान-संवरणयो:	झष्	झष	झषति/ते	लेना, आच्छादित करना
४४७.	झषँ हिंसायाम्	झष्	झष	झषति	मारना, दु:ख देना, भक्षण करना
४४८.	कषँ हिंसायाम्	कष्	कष	कषति	कोड़े से मारना, दु:ख देना
४४९.	खषँ हिंसायाम्	खष्	खष	खषति	मारना, दु:ख देना
४५०.	जषँ हिंसायाम्	जष्	जष	जषति	मारना, दु:ख देना, भक्षण करना
४५१.	मषँ हिंसायाम्	मष्	मष	मषति	मारना, दु:ख देना, दंश करना
४५२.	शषँ हिंसायाम्	शष्	शष	शषति	मारना, दु:ख देना
४५३.	वषँ हिंसायाम्	वष्	वष	वषति	मारना, भक्षण करना
४५४.	भषँ भर्त्सने	भष्	भष	भषति	निन्दा करना, भौंकना
४५५.	घ॒स्लृँ अदने	घस्	घस	घसति	खाना
४५६.	शसुँ हिंसायाम्	शस्	शस	शसति	हिंसा करना
४५७.	ह्रसँ शब्दे ह्रसिरल्पीभावेऽपि	ह्रस्	ह्रस्	ह्रसति	शब्द करना, घटना कम होना
४५८.	ह्लसँ शब्दे	ह्लस्	ह्लस	ह्लसति	शब्द करना
४५९.	रसँ शब्दे	रस्	रस	रसति	शब्द करना, मेघ गरजना आवाज करना

४६०.	लसँ श्लेषणक्रीडनयो:	लस्	लस	लसति	चिपकना, क्रीडा करना
४६१.	णसँ कौटिल्ये	नस्	नस	नसते	कुटिलता करना
४६२.	भ्यसँ भये	भ्यस्	भ्यस	भ्यसते	डरना, भयभीत होना
४६३.	कसँ गतौ	कस्	कस	कसति	खिलना, विकसित होना
४६४.	वसँ निवासे	वस्	वस	वसति	निवास करना
४६५.	ग्रसुँ अदने	ग्रस्	ग्रस	ग्रसते	निगलना
४६६.	ग्लसुँ अदने	ग्लस्	ग्लस	ग्लसते	खाना
४६७.	अस गतिदीप्त्यादानेषु	अस्	अस	असति	जाना, चमकना, लेना
	अष इत्येके	अस	असते	जाना,	चमकना, लेना
४६८.	हसँ हसने	हस्	हस	हसति	हँसना
४६९.	प्रसँ विस्तारे	प्रस्	प्रस	प्रसते	विस्तार करना,फैलाना
४७०.	दहँ भस्मीकरणे	दह्	दह	दहति	जलाना
४७१.	वहँ' प्रापणे	वह्	वह	वहति/ते	ले जाना, पहुँचाना
४७२.	रहँ त्यागे	रह्	रह	रहति	त्यागना,अकेला छोड़ना
४७३.	महँ पूजायाम्	मह्	मह	महति	महत्त्व देना, पूजा करना
४७४.	चहँ परिकल्कने	चह्	चह	चहति	दम्भ, शठता, छल करना
४७५.	ग्लहँ ग्रहणे	ग्लह्	ग्लह	ग्लहते	ग्रहण करना
४७६.	षहँ मर्षणे	सह्	सह	सहते	सहन करना
४७७.	तकिँ कृच्छ्रजीवने	तन्क्	तङ्क	तङ्कति	तङ्गी सहना, कमी सहना
४७८.	टीकृँ गतौ	टीक्	टीक	टीकते	जाना, क्रीडा करना
४७९.	तीकृँ गतौ	तीक्	तीक	तीकते	जाना, क्रीडा करना
४८०.	शीकृँ सेचने	शीक्	शीक	शीकते	घिसना, भिगोना
४८१.	लोकृँ दर्शने	लोक्	लोक	लोकते	देखना, अवलोकन करना
४८२.	श्लोकृँ संघाते	श्लोक्	श्लोक	श्लोकते	रचना, इकट्ठा करना
४८३.	द्रेकृँ शब्दोत्साहयो:	द्रेक्	द्रेक	द्रेकते	शब्द करना, उत्साह करना
४८४.	ध्रेकृँ शब्दोत्साहयो:	ध्रेक्	ध्रेक	ध्रेकते	---वही----
४८५.	रेकृँ शङ्कायाम्	रेक्	रेक	रेकते	शङ्का करना, सन्देह करना
४८६.	सेकृँ गतौ	सेक्	सेक	सेकते	जाना, प्रवाहित होना
४८७.	स्रेकृँ गतौ	स्रेक्	स्रेक	स्रेकते	जाना, प्रवाहित होना

४८८.	स्रकिँ गतौ	स्रन्क्	स्रङ्क	स्रङ्कते	प्रवाहित होना, बहना
४८९.	श्रकिँ गतौ	श्रन्क्	श्रङ्क	श्रङ्कते	बोना, जाना
४९०.	श्लकिँ गतौ	श्लन्क्	श्लङ्क	श्लङ्कते	जाना, सीना
४९१.	शकिँ शङ्कायाम्	शन्क्	शङ्क	शङ्कते	शङ्का करना, सन्देह करना
४९२.	अकिँ लक्षणे	अन्क्	अङ्क	अङ्कते	अङ्कित करना, पहिचानना
४९३.	वकिँ कौटिल्ये	वन्क्	वङ्क	वङ्कते	कुटिलता करना
४९४.	मकिँ मण्डने	मन्क्	मङ्क	मङ्कते	सजाना
४९५.	ककिँ गतौ	कन्क्	कङ्क	कङ्कते	उखाड़ना, सजाना
४९६.	वकिँ गतौ	वन्क्	वङ्क	वङ्कते	जाना, टेढ़ा चलना
४९७.	श्वकिँ गतौ स्वकि इति पाठान्तरम्।	श्वन्क्	श्वङ्क	श्वङ्कते	जाना, टेढ़ा चलना
४९८.	त्रकिँ गतौ	त्रन्क्	त्रङ्क	त्रङ्कते	जाना, टेढ़ा चलना
४९९.	ढौकृँ गतौ	ढौक्	ढौक	ढौकते	जाना, शब्द करना
५००.	त्रौकृँ गतौ	त्रौक्	त्रौक	त्रौकते	टूट पड़ना, जाना
५०१.	ष्वष्कँ गतौ	ष्वष्क्	ष्वष्क	ष्वष्कते	जाना, खिसकना
५०२.	वस्कँ गतौ	वस्क्	वस्क	वस्कते	जाना, शपथ ग्रहण करना
५०३.	मस्कँ गतौ	मस्क्	मस्क	मस्कते	जाना, छोड़ना
५०४.	बुक्कँ भषणे	बुक्क्	बुक्क	बुक्कति	भौंकना
५०५.	हिक्कँ' अव्यक्ते शब्दे	हिक्क्	हिक्क	हिक्कति/ते	हिचकी लेना, अव्यक्त बोलना
५०६.	फक्कँ नीचैर्गतौ	फक्क्	फक्क	फक्कति	व्यभिचार करना
५०७.	उखिँ गतौ	उन्ख्	उङ्ख	उङ्खति	प्रज्वलित होना, जाना
५०८.	वखिँ गतौ	वन्ख्	वङ्ख	वङ्खति	जाना, गूँथना
५०९.	मखिँ गतौ	मन्ख्	मङ्ख	मङ्खति	प्रज्वलित होना
५१०.	रखिँ गतौ	रन्ख्	रङ्ख	रङ्खति	ऊँचे चढ़ना
५११.	णखिँ गतौ	नन्ख्	नङ्ख	नङ्खति	अङ्कुरित होना
५१२.	लखिँ गतौ	लन्ख्	लङ्ख	लङ्खति	सीना
५१३.	इखिँ गतौ	इन्ख्	इङ्ख	इङ्खति	प्रवेश करना
५१४.	ईखिँ गतौ	ईन्ख्	ईङ्ख	ईङ्खति	प्रवेश करना,
५१५.	ओखृँ शोषणालमर्थयो:	ओख्	ओख	ओखति	सूखना, अलंकृत करना

५१६.	राखृँ शोषणालमर्थयो:	राख्	राख	राखति	सूखना, साथ जाना
५१७.	लाखृँ शोषणालमर्थयो:	लाख्	लाख	लाखति	सूखना,विस्मरण करना
५१८.	द्राखृँ शोषणालमर्थयो:	द्राख्	द्राख	द्राखति	सूखना, मुरझाना
५१९.	ध्राखृँ शोषणालमर्थयो:	ध्राख्	ध्राख	ध्राखति	सूखना, मुरझाना
५२०.	शाखृँ व्याप्तौ	शाख्	शाख	शाखति	ढाँकना, व्याप्त होना
५२१.	श्लाखृँ व्याप्तौ	श्लाख्	श्लाख	श्लाखति	ढाँकना,अङ्कुरित होना
५२२.	रगिँ गतौ	रन्ग्	रङ्ग	रङ्गति	रँगना
५२३.	लगिँ गतौ	लन्ग्	लङ्ग	लङ्गति	चञ्चल होना, हिलना
५२४.	अगिँ गतौ	अन्ग्	अङ्ग	अङ्गति	अङ्कुरित होना
५२५.	वगिँ गतौ	वन्ग्	वङ्ग	वङ्गति	मुरझाना, म्लान होना
५२६.	मगिँ गतौ	मन्ग्	मङ्ग	मङ्गति	उछलकर चलना
५२७.	तगिँ गतौ	तन्ग्	तङ्ग	तङ्गति	स्खलित होना
५२८.	श्रगिँ गतौ	श्रन्ग्	श्रङ्ग	श्रङ्गति	जाना, उपद्रव करना
५२९.	श्लगिँ गतौ	श्लन्ग्	श्लङ्ग	श्लङ्गति	जाना, उपद्रव करना
५३०.	इगिँ गतौ	इङ्ग्	इङ्ग	इङ्गति	कम हो जाना,
					चेष्टा करना
५३१.	रिगिँ गतौ	रिन्ग्	रिङ्ग	रिङ्गति	रेंगना,
					घुटनों के बल चलना
५३२.	लिगिँ गतौ	लिन्ग्	लिङ्ग	लिङ्गति	लक्ष्य करना
	रिख त्रख त्रखि शिखि इत्यपि केचित्				
५३३.	त्वगिँ गतौ	त्वन्ग्	त्वङ्ग	त्वङ्गति	काँपना,
	कम्पने च				हिलना, चलना
५३४.	युगिँ वर्जने	युन्ग्	युङ्ग	युङ्गति	त्यागना, छोड़ना
५३५.	जुगिँ वर्जने	जुन्ग्	जुङ्ग	जुङ्गति	त्यागना, छोड़ना
५३६.	बुगिँ वर्जने	बुन्ग्	बुङ्ग	बुङ्गति	त्यागना, छोड़ना
५३७.	वल्गँ गतौ	वल्ग्	वल्ग	वल्गति	कूदना फाँदना, उछलना
५३८.	मघिँ मण्डने	मन्घ्	मङ्घ	मङ्घति	सजाना, शोभित करना
५३९.	शिघिँ आघ्राणे	शिन्घ्	शिङ्घ	शिङ्घति	सूँघना
५४०.	रघिँ गतौ	रन्घ्	रङ्घ	रङ्घते	कूदना, लाँघना
५४१.	लघिँ गतौ	लन्घ्	लङ्घ	लङ्घते	कूदना, लाँघना
५४२.	अघिँ गत्याक्षेपे	अन्घ्	अङ्घ	अङ्घते	लँगड़ाकर चलना
५४३.	वघिँ गत्याक्षेपे	वन्घ्	वङ्घ	वङ्घते	लँगड़ाकर चलना

५४४.	मघिँ गत्याक्षेपे	मन्घ्	मङ्घ	मङ्घते	लँगड़ाकर चलना
५४५.	राघृँ सामर्थ्ये	राघ्	राघ	राघते	समर्थ होना
५४६.	लाघृँ सामर्थ्ये	लाघ्	लाघ	लाघते	समर्थ होना
५४७.	द्राघृँ सामर्थ्ये आयामे	द्राघ्	द्राघ	द्राघते	समर्थ होना, पीडित होना
	च। ध्राघृँ इत्यपि केचित्				
५४८.	श्लाघृँ कत्थने	श्लाघ्	श्लाघ	श्लाघते	डींग मारना,
					आत्मप्रशंसा करना
५४९.	कुञ्चँ कौटिल्याल्पी-	कुञ्च्	कुञ्च	कुञ्चति	मुड़ना, सिकुड़ना,
	भावयो:				कम होना
५५०.	क्रुञ्चँ कौटिल्याल्पी-	क्रुञ्च्	क्रुञ्च	क्रुञ्चति	मुड़ना, सिकुड़ना,
	भावयो:				कम होना
५५१.	लुञ्चँ अपनयने	लुञ्च्	लुञ्च	लुञ्चति	कतरना, छीलना, नोचना
५५२.	अञ्चुँ गतिपूजनयो:	अञ्च्	अञ्च	अञ्चति	जाना, प्रशंसा करना
५५३.	अञ्चुँ गतौ	अञ्च्	अञ्च	अञ्चति/ते	जाना, याचना करना
	याचने च, अचुँ इत्येके। अचि इत्यपरे।				
५५४.	चञ्चुँ गतौ	चञ्च्	चञ्च	चञ्चति	झूठ बोलना, हिलना
५५५.	वञ्चुँ गतौ	वञ्च्	वञ्च	वञ्चति	छल करना, कपट करना
५५६.	तञ्चुँ गतौ	तञ्च्	तञ्च	तञ्चति	छल करना, कपट करना
५५७.	त्वञ्चुँ गतौ	त्वञ्च्	त्वञ्च	त्वञ्चति	जाना
५५८.	म्रुञ्चुँ गतौ	म्रुञ्च्	म्रुञ्च	म्रुञ्चति	जुआ खेलना
५५९.	म्लुञ्चुँ गतौ	म्लुञ्च्	म्लुञ्च	म्लुञ्चति	गलती करना,
५६०.	ग्लुञ्चुँ गतौ	ग्लुञ्च्	ग्लुञ्च	ग्लुञ्चति	गुप्त रखना, छुपाना
५६१.	अर्चँ पूजायाम्	अर्च्	अर्च	अर्चति	पूजा करना,
					सम्मान करना
५६२.	चर्चँ परिभाषण-	चर्च्	चर्च	चर्चति	शङ्का करना
	हिंसातर्जनेषु।				
५६३.	वर्चँ दीप्तौ	वर्च्	वर्च	वर्चति	प्रकाशित होना,
५६४.	लोचृँ दर्शने	लोच्	लोच	लोचते	देखना, विचारना
५६५.	कचिँ	कन्च्	कञ्च	कञ्चते	व्यवहार करना, चमकना,
	दीप्तिबन्धनयो:				बाँधना
५६६.	काचिँ	कान्च्	काञ्च	काञ्चते	व्यवहार करना, चमकना,

	दीप्तिबन्धनयो:				बाँधना
५६७.	पचिँ व्यक्तीकरणे	पन्च्	पञ्च	पञ्चते	व्यवहार करना
५६८.	मचिँ धारणोच्छ्रायपूजनेषु	मन्च्	मञ्च	मञ्चते	ऐश्वर्यवान् होना
५६९.	मुचिँ कल्कने	मुन्च्	मुञ्च	मुञ्चते	ऋण प्रदान करना
५७०.	श्वचिँ गतौ	श्वन्च्	श्वञ्च	श्वञ्चते	दौड़ना, चलना, उभरना, हिलाना
	शचिँ च	शन्च्	शञ्च	शञ्चते	दौड़ना, चलना
५७१.	टुयाचृँ याच्ञायाम्	याच्	याच	याचति/ते	याचना करना, माँगना
५७२.	लाछिँ लक्षणे	लान्छ्	लाञ्छ	लाञ्छति	पहिचानना, परिचय प्राप्त करना
५७३.	वाछिँ इच्छायाम्	वान्छ्	वाञ्छ	वाञ्छति	चाहना, इच्छा करना
५७४.	आछिँ आयामे	आन्छ्	आञ्छ	आञ्छति	आगे पैर फैलाना
५७५.	उछिँ उञ्छे	उन्छ्	उञ्छ	उञ्छति	कण कण बीनना
५७६.	हुर्छाँ कौटिल्ये	हुर्च्छ्	हूर्च्छ	हूर्च्छति	छल करना, कपट करना
५७७.	मुर्छाँ मोहसमुच्छ्राययो:	मूर्च्छ्	मूर्च्छ	मूर्च्छति	भूलना, विस्मृत करना
५७८.	स्फुर्छाँ विस्तृतौ	स्फूर्च्छ्	स्फूर्च्छ	स्फूर्च्छति	भूलना, विस्मृत करना
५७९.	उच्छीँ विवासे	उच्छ्	उच्छ	उच्छति	बन्धन तोड़ना
५८०.	लछँ लक्षणे	लच्छ्	लच्छ	लच्छति	पहिचानना, परिचय प्राप्त करना
५८१.	ह्रीछँ लज्जायाम्	ह्रीच्छ्	ह्रीच्छ	ह्रीच्छति	लज्जित होना
५८२.	म्लेच्छँ अव्यक्ते शब्दे	म्लेच्छ्	म्लेच्छ	म्लेच्छति	अस्पष्ट बोलना
५८३.	युच्छँ प्रमादे	युच्छ्	युच्छ	युच्छति	धोखा खाना, ठगे जाना
५८४.	गुजिँ अव्यक्ते शब्दे	गुन्ज्	गुञ्ज	गुञ्जति	आवाज करना, आकर्षित करना
५८५.	ध्रजिँ गतौ	ध्रन्ज्	ध्रञ्ज	ध्रञ्जति	जाना
५८६.	धृजिँ गतौ	धृन्ज्	धृञ्ज	धृञ्जति	जाना
५८७.	ध्वजिँ गतौ ध्रिजँ च इति केचित्	ध्वन्ज्	ध्वञ्ज	ध्वञ्जति	जाना, ऊपर उठना

५८८.	खजिँ गतिवैकल्ये	खन्ज्	खञ्ज	खञ्जति	लँगड़ाकर चलना
५८९.	लजिँ भर्जने	लन्ज्	लञ्ज	लञ्जति	भूँजना, सेंकना
५९०.	लाजिँ भर्जने भर्त्सने च	लान्ज्	लाञ्ज	लाञ्जति	भूँजना, सेंकना
५९१.	जजिँ युद्धे	जन्ज्	जञ्ज	जञ्जति	उपद्रव करना, युद्ध करना
५९२.	तुजिँ पालने	तुन्ज्	तुञ्ज	तुञ्जति	पालन करना, जाना, मारना
५९३.	गजिँ शब्दे	गन्ज्	गञ्ज	गञ्जति	भ्रमण करना, भटकना, घूमना
५९४.	गृजिँ शब्दे	गृन्ज्	गृञ्ज	गृञ्जति	सीत्कार करना, सीटी बजाना
५९५.	मुजिँ शब्दे	मुन्ज्	मुञ्ज	मुञ्जति	दबाना, संपीडित करना
५९६.	टुओँस्फूर्जाँ वज्रनिर्घोषे	स्फूर्ज्	स्फूर्ज	स्फूर्जति	मेघ गरजना
५९७.	कूजँ अव्यक्ते शब्दे	कूज्	कूज	कूजति	अस्पष्ट आवाज करना,
५९८.	क्षीजँ अव्यक्ते शब्दे	क्षीज्	क्षीज	क्षीजति	अस्पष्ट आवाज करना, कराहना
५९९.	अर्जँ अर्जने	अर्ज्	अर्ज	अर्जति	अर्जन करना, कमाना, पाना
६००.	षर्जँ अर्जने	सर्ज्	सर्ज	सर्जति	अर्जन करना, कमाना, पाना
६०१.	गर्जँ शब्दे	गर्ज्	गर्ज	गर्जति	गरजना, चिल्लाना
६०२.	तर्जँ भर्त्सने	तर्ज्	तर्ज	तर्जति	पीड़ित करना, डराना, दु:ख देना
६०३.	कर्जँ व्यथने	कर्ज्	कर्ज	कर्जति	पीड़ित करना, गाली देना
६०४.	खर्जँ पूजने च	खर्ज्	खर्ज	खर्जति	पीडित करना, गाली
६०५.	जर्जँ परिभाषण- हिंसातर्जनेषु	जर्ज्	जर्ज	जर्जति	गप्प मारना, झूठ बोलना
६०६.	तेजँ पालने	तेज्	तेज	तेजति	पालन करना
६०७.	लाजँ भर्जने भत्सने च	लाज्	लाज	लाजति	भूँजना, सेंकना, पकाना, जलाना

६०८.	ऋजिँ भर्जने	ऋन्ज्	ऋञ्ज	ऋञ्जते	भूँजना, सेंकना, पकाना, जलाना
६०९.	क्षजिँ गतिदानयो:	क्षन्ज्	क्षञ्ज	क्षञ्जते	जाना, देना, चलना
६१०.	ईजँ गतिकुत्सनयो:	ईज्	ईज	ईजते	समय जानना, जाना, चलना
६११.	भ्राजृँ दीप्तौ	भ्राज्	भ्राज	भ्राजते	चमकना, प्रकाशित होना
६१२.	टुभ्राजृँ दीप्तौ	भ्राज्	भ्राज	भ्राजते	चमकना, प्रकाशित होना
६१३.	राजृँ दीप्तौ	राज्	राज	राजति/ते	चमकना, प्रकाशित होना
६१४.	एजृँ कम्पने	एज्	एज	एजति	काँपना, हिलना
६१५.	एजृँ दीप्तौ	एज्	एज	एजते	चमकना, प्रकाशित होना
६१६.	भ्रेजृँ दीप्तौ	भ्रेज्	भ्रेज	भ्रेजते	चमकना, प्रकाशित होना
६१७.	झर्झँ परिभाषण-हिंसातर्जनेषु।	झर्झ्	झर्झ	झर्झति	झर्झर ध्वनि करना, ताली बजाना
६१८.	रुटिँ स्तेये	रुन्ट्	रुण्ट	रुण्टति	चोरी करना, लूटमार करना
६१९.	लुटिँ स्तेये रुठिँ, लुठिँ, रुडिँ, लुडिँ इत्येके	लुन्ट्	लुण्ट	लुण्टति	चोरी करना, लूटमार करना
६२०.	शौटृँ गर्वे	शौट्	शौट	शौटति	अभिमान करना, गर्व करना
६२१.	यौटृँ बन्धे	यौट्	यौट	यौटति	सम्बद्ध होना, स्पर्श करना
६२२.	म्लेटृँ उन्मादे	म्लेट्	म्लेट	म्लेटति	उन्मत्त होना, अनादर करना
६२३.	अट्टँ अतिक्रमहिंसनयो:	अट्ट्	अट्ट	अट्टते	अतिक्रमण करना, मारना
६२४.	घट्टँ चलने	घट्ट्	घट्ट	घट्टते	कठोर होना, जाना
६२५.	चेष्टँ चेष्टायाम्	चेष्ट्	चेष्ट	चेष्टते	चेष्टा करना, इच्छा करना
६२६.	वेष्टँ वेष्टने	वेष्ट्	वेष्ट	वेष्टते	लपेटना, बाँधना
६२७.	गोष्टँ सङ्घाते	गोष्ट्	गोष्ट	गोष्टते	इकट्ठे होना, मिल जाना
६२८.	लोष्टँ सङ्घाते	लोष्ट्	लोष्ट	लोष्टते	इकट्ठे होना,

					मिल जाना
६२९.	रेटृँ परिभाषणे	रेट्	रेट	रेटति/रेटते	बकबक करना, ज्यादा बोलना
६३०.	कुठिँ गतिप्रतिघाते	कुन्ठ्	कुण्ठ	कुण्ठति	कुण्ठित होना, गतिहीन होना
६३१.	लुठिँ आलस्ये	लुन्ठ्	लुण्ठ	लुण्ठति	जाना,आलस्य करना
६३२.	लुठिँ गतौ	लुन्ठ्	लुण्ठ	लुण्ठति	जाना, दौड़ना, लोटना
६३३.	रुठिँ गतौ	रुन्ठ्	रुण्ठ	रुण्ठति	जाना, दौड़ना, लोटना
६३४.	शुठिँ शोषणे	शुन्ठ्	शुण्ठ	शुण्ठति	सूखना
६३५.	अठिँ गतौ	अन्ठ्	अण्ठ	अण्ठते	जाना, दौड़ना, कूदना, फाँदना
६३६.	वठिँ एकचर्यायाम्	वन्ठ्	वण्ठ	वण्ठते	एकान्त में रहना
६३७.	मठिँ शोके	मन्ठ्	मण्ठ	मण्ठते	पालन करना
६३८.	कठिँ शोके	कन्ठ्	कण्ठ	कण्ठते	शोक करना
६३९.	मुठिँ पालने	मुन्ठ्	मुण्ठ	मुण्ठते	पालन करना
६४०.	हेठँ विबाधायाम्	हेठ्	हेठ	हेठते	स्थिर होना, गतिरोध होना, ऐंठना
६४१.	एठँ विबाधायाम्	एठ्	एठ	एठते	स्थिर होना, गतिरोध होना, ऐंठना
६४२.	गडिँ वदनैकदेशे	गन्ड्	गण्ड	गण्डति	सहायता करना
६४३.	गडिँ वदनैकदेशे	गन्ड्	गण्ड	गण्डति	सहायता करना
६४४.	मडिँ भूषायाम्	मन्ड्	मण्ड	मण्डति	सजाना, सजना
६४५.	कुडिँ वैकल्ये	कुन्ड्	कुण्ड	कुण्डति	जलाना, विकल होना
६४६.	चुडिँ अल्पीभावे	चुन्ड्	चुण्ड	चुण्डति	कम होना
६४७.	हिडिँ गत्यनादरयो:	हिन्ड्	हिण्ड	हिण्डते	जाना, अनादर करना,
६४८.	मुडिँ खण्डने पुडिँ चेत्येके	मुन्ड्	मुण्ड	मुण्डति	टुकड़े करना, खण्डित करना
६४९.	म्रेडृँ उन्मादे	म्रेड्	म्रेड	म्रेडति	उन्मत्त होना, मतवाला होना
६५०.	क्रीडृँ विहारे	क्रीड्	क्रीड	क्रीडति	खेलना, क्रीडा करना
६५१.	हूडृँ गतौ	हूड्	हूड	हूडति	खोदना, ठूँसा मारना

६५२.	होडृँ गतौ	होड्	होड	होडति	खोदना, ठूँसा मारना
६५३.	होडृँ अनादरे	होड्	होड	होडते	उन्मत्त होना, मतवाला होना
६५४.	रौडँ ` अनादरे	रौड्	रौड	रौडति	अनादर करना
६५५.	रोड ँ उन्मादे	रोड्	रोड	रोडति	उन्मत्त होना, अनादर करना
६५६.	लोडँ ` उन्मादे	लोड्	लोड	लोडति	उन्मत्त होना, अनादर करना
६५७.	हेडँ वेष्टने	हेड्	हेड	हेडति	लपेटना
६५८.	चुड्डँ भावकरणे	चुड्ड्	चुड्ड	चुड्डति	मैथुन करना
६५९.	अड्डँ अभियोगे	अड्ड्	अड्ड	अड्डति	रहस्य होना, अपराध करना
६६०.	कड्डँ कार्कश्ये	कड्ड्	कड्ड	कड्डति	कठोर व्यवहार करना
६६१.	द्राडँ ` विशरणे	द्राड्	द्राड	द्राडते	लकड़ी आदि छीलना
६६२.	ध्राडँ ` विशरणे	ध्राड्	ध्राड	ध्राडते	लकड़ी आदि छीलना
६६३.	बाड ँ आप्लाव्ये	बाड्	बाड	बाडते	बाढ़ आना, डूबना
६६४.	शाडँ ` श्लाघायाम्	शाड्	शाड	शाडते	पूजित होना, प्रशंसित होना
६६५.	हेडँ अनादरे	हेड्	हेड	हेडते	उन्मत्त होना, अनादर करना
६६६.	हुडिँ सङ्घाते	हुन्ड्	हुण्ड	हुण्डते	इकट्ठा करना, संग्रह करना
६६७.	कुडिँ दाहे	कुन्ड्	कुण्ड	कुण्डते	जलाना
६६८.	वडिँ विभाजने	वन्ड्	वण्ड	वण्डते	बाँटना, विभाजन करना
६६९.	मडिँ विभाजने	मन्ड्	मण्ड	मण्डते	बाँटना, विभाजन करना
६७०.	भडिँ परिभाषणे	भन्ड्	भण्ड	भण्डते	गप्प मारना, झूठ बोलना
६७१.	पिडिँ सङ्घाते	पिन्ड्	पिण्ड	पिण्डते	इकट्ठा करना
६७२.	मडिँ मार्जने	मुन्ड्	मुण्ड	मुण्डते	स्नान करना, धोना, साफ करना
६७३.	तडिँ तोडने	तुन्ड्	तुण्ड	तुण्डते	तोड़ना, टुकड़े करना, खाना

६७४.	हुडिँ वरणे	हुन्ड्	हुण्ड	हुण्डते	वरण करना, हरना, मारना
६७५.	चडिँ कोपे	चन्ड्	चण्ड	चण्डते	क्रोध करना
६७६.	शडिँ रुजायां सङ्घाते च	शन्ड्	शण्ड	शण्डते	पीडित होना, निष्फल होना
६७७.	तडिँ ताडने	तन्ड्	तण्ड	तण्डते	मारना, तोड़ना
६७८.	पडिँ गतौ	पन्ड्	पण्ड	पण्डते	फैलना, पसरना, जाना
६७९.	कडिँ मदे	कन्ड्	कण्ड	कण्डते	उन्मत्त होना, मतवाला होना
६८०.	खडिँ मन्थे	खन्ड्	खण्ड	खण्डते	कूटना, खण्डन करना
६८१.	ओणँ ` अपनयने	ओण्	ओण	ओणति	छुपाना, हटाना, दूर करना
६८२.	शोणँ ` वर्णगत्योः	शोण्	शोण	शोणति	लाल होना, जाना
६८३.	श्रोणँ ` संघाते	श्रोण्	श्रोण	श्रोणति	इकट्ठा होना, सहन करना
६८४.	श्लोणँ ` संघाते	श्लोण्	श्लोण	श्लोणति	इकट्ठा होना, सहन करना
६८५.	पैण ँ गतिप्रेरण-श्लेषणेषु	पैण्	पैण	पैणति	जाना, बधाई देना
६८६.	घिणिँ ग्रहणे	घिन्ण्	घिण्ण	घिण्णते	ग्रहण करना
६८७.	घुणिँ ग्रहणे	घुन्ण्	घुण्ण	घुण्णते	ग्रहण करना, पीडित करना
६८८.	घ`णिँ ग्रहणे	घ`न्ण्	घ`ण्ण	घ`ण्णते	धक्का देना
६८९.	घूर्णँ भ्रमणे	घूर्ण्	घूर्ण	घूर्णति	घूमना, चक्कर खाना
६९०.	वेण ँ गतिज्ञान-चिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु।	वेण्	वेण	वेणति/ते	जाना, जानना
६९१.	अतिँ बन्धने	अन्त्	अन्त	अन्तति	बाँधना, बँधवाना
६९२.	कुथिँ हिंसासंक्लेशनयोः	कुन्थ्	कुन्थ	कुन्थति	वध करना, पीड़ा देना
६९३.	पुथिँ हिंसासंक्लेशनयोः	पुन्थ्	पुन्थ	पुन्थति	वध करना, पीड़ा देना

६९४.	लुथिँ हिंसासंक्लेशनयो:	लुन्थ्	लुन्थ	लुन्थति	वध करना, पीड़ा देना
६९५.	मथिँ हिंसासंक्लेशनयो:	मन्थ्	मन्थ	मन्थति	वध करना, पीड़ा देना
६९६.	मन्थँ विलोडने	मन्थ्	मन्थ	मन्थति	मथना,पीड़ित करना
६९७.	नाथृ॒ँ याच्ञोप-तापैश्वर्याशी:षु	नाथ्	नाथ	नाथते	मालिक होना, इच्छा करना
६९८.	वेथृ॒ँ याचने	वेथ्	वेथ	वेथते	भिक्षा माँगना, याचना करना
६९९.	कत्थ॒ँ श्लाघायाम्	कत्थ्	कत्थ	कत्थते	प्रशंसा करना, डींग हाँकना
७००.	श्रथि॒ँ शैथिल्ये	श्रन्थ्	श्रन्थ	श्रन्थते	शिथिल होना
७०१.	ग्रथि॒ँ कौटिल्ये	ग्रन्थ्	ग्रन्थ	ग्रन्थते	कुटिलता करना, ग्रन्थ लिखना
७०२.	प्रोथृँ॑ पर्याप्तौ	प्रोथ्	प्रोथ	प्रोथति/ते	पर्याप्त होना, शरण लेना
७०३.	अदिँ बन्धने	अन्द्	अन्द	अन्दति	बाँधना, बँधवाना
७०४.	इदिँ परमैश्वर्ये	इन्द्	इन्द	इन्दति	शासन करना
७०५.	बिदिँ अवयवे	बिन्द्	बिन्द	बिन्दति	अवयव बनना
७०६.	णिदिँ कुत्सायाम्	निन्द्	निन्द	निन्दति	निन्दा करना
७०७.	टुनदिँ समृद्धौ	नन्द्	नन्द	नन्दति	प्रसन्न होना
७०८.	चदिँ आह्लादे	चन्द्	चन्द	चन्दति	चमकना, आनन्दित होना
७०९.	त्रदिँ चेष्टायाम्	त्रन्द्	त्रन्द	त्रन्दति	जाना, चेष्टा करना
७१०.	कदिँ आह्वाने रोदने च	कन्द्	कन्द	कन्दति	चिल्लाना, बुलाना, रोना
७११.	क्रदिँ आह्वाने रोदने च	क्रन्द	क्रन्द	क्रन्दति	चिल्लाना, बुलाना, रोना
७१२.	क्लदिँ आह्वाने रोदने च	क्लन्द्	क्लन्द	क्लन्दति	चिल्लाना, बुलाना, रोना
७१३.	क्लिदि॒ँ परिदेवने	क्लिन्द्	क्लिन्द	क्लिन्दति क्लिन्दते	दु:खी होना विलाप करना
७१४.	क्लिदिँ परिदेवने	क्लिन्द्	क्लिन्द	क्लिन्दति क्लिन्दते	दु:खी होना विलाप करना

७१५.	कदि॒ँ वैक्लव्ये	कन्द्	कन्द	कन्दते	सन्तुष्ट होना, रोना, विकल होना
७१६.	क्रदि॒ँ वैक्लव्ये	क्रन्द्	क्रन्द	क्रन्दते	सन्तुष्ट होना, रोना, विकल होना
७१७.	क्लदि॒ँ वैक्लव्ये	क्लन्द्	क्लन्द	क्लन्दते	सन्तुष्ट होना, रोना, विकल होना
७१८.	श्विदि॒ँ श्वैत्ये	श्विन्द्	श्विन्द	श्विन्दते	सफेद होना
७१९.	स्कुदि॒ँ आप्रवणे	स्कुन्द्	स्कुन्द	स्कुन्दते	कूदना, उफान आना
७२०.	भदि॒ँ कल्याणेसुखे च	भन्द्	भन्द	भन्दते	शुभ होना
७२१.	वदि॒ँ अभिवादनस्तुत्यो:	वन्द्	वन्द	वन्दते	अभिवादन या स्तुति करना
७२२.	मदि॒ँ स्तुतिमोद-मदस्वप्नकान्तिगतिषु	मन्द्	मन्द	मन्दते	स्तुति करना, सोना
७२३.	स्पदि॒ँ किञ्चिच्चलने	स्पन्द्	स्पन्द	स्पन्दते	स्पन्दन करना
७२४.	स्क॒न्दिर् गतिशोषणयो:	स्कन्द्	स्कन्द	स्कन्दति	चलना, सूखना
७२५.	खादृँ भक्षणे	खाद्	खाद	खादति	खाना
७२६.	स्वर्द॒ँ आस्वादने	स्वर्द्	स्वर्द	स्वर्दति	स्वाद लेना, अच्छा लगना
७२७.	अर्दँ गतौ याचने च	अर्द्	अर्द	अर्दति	जाना, याचना करना
७२८.	नर्दँ शब्दे	नर्द्	नर्द	नर्दति	शब्द करना, गरजना
७२९.	गर्दँ शब्दे	गर्द्	गर्द	गर्दति	नाद करना
७३०.	तर्दँ हिंसायाम्	तर्द्	तर्द	तर्दति	हिंसा करना, मारना
७३१.	कर्दँ कुत्सिते शब्दे	कर्द्	कर्द	कर्दति	फेन जमना, अपान वायु छोड़ना
७३२.	खर्दँ दन्दशूके	खर्द्	खर्द	खर्दति	डसना, दंश करना
७३३.	स्यन्दूँ॒ प्रस्रवणे	स्यन्द्	स्यन्द	स्यन्दते	बहना, झरना, रिसना
७३४.	उर्द॒ँ माने क्रीडायां च	उर्द्	ऊर्द	ऊर्दति	नापना, खेलना, स्वाद लेना
७३५.	कुर्द॒ँ क्रीडायाम्	कूर्द्	कूर्द	कूर्दति	खेलना, कूदना
७३६.	खुर्द॒ँ क्रीडायाम्	खूर्द्	खूर्द	खूर्दति	खेलना, कूदना
७३७.	गुर्द॒ँ क्रीडायाम्	गूर्द्	गूर्द	गूर्दति	खेलना, कूदना
७३८.	स्वाद॒ँ आस्वादने	स्वाद्	स्वाद	स्वादते	स्वाद लेना,

					अच्छा लगना
७३९.	ह्रादँ अव्यक्ते शब्दे	ह्राद्	ह्राद	ह्रादते	अस्पष्ट शब्द करना
७४०.	ह्लादीँ सुखे च	ह्लाद्	ह्लाद	ह्लादते	सुखी होना, खेलना
७४१.	षूदँ क्षरणे	सूद्	सूद	सूदते	अस्वीकार करना
७४२.	पर्दँ कुत्सिते शब्दे	पर्द्	पर्द	पर्दते	अपान वायु छोड़ना
७४३.	णेदृँ कुत्सासन्निकर्षयो:	नेद्	नेद	नेदति/ते	निन्दा करना, निकट होना
७४४.	मेदृँ मेधाहिंसनयो:	मेद्	मेद	मेदति/ते	चलना, हिंसा करना,
७४५.	उँबुन्दिँर् निशामने	बुन्द्	बुन्द	बुन्दति/ते	चाक्षुष ज्ञान होना
७४६.	शुन्धँ शुद्धौ	शुन्ध्	शुन्ध	शुन्धति	शुद्ध करना
७४७.	एधँ वृद्धौ	एध्	एध	एधते	बढ़ना, वृद्धिंगत होना
७४८.	गाधृँ प्रतिष्ठा-लिप्सयोर्ग्रन्थे च	गाध्	गाध	गाधते	प्रतिष्ठित होना
७४९.	बाधृँ लोडने	बाध्	बाध	बाधते	रुकावट करना, पीड़ा देना
७५०.	नाधृँ याच्ञोपतापैश्वर्याशी:षु	नाध्	नाध	नाधते	माँगना, इच्छा करना
७५१.	स्पर्धँ सङ्घर्षे	स्पर्ध्	स्पर्ध	स्पर्धते	संघर्ष करना
७५२.	मेधृँ सङ्गमे च	मेध्	मेध	मेधति/ते	परस्पर मिलना, संगत होना
७५३.	तुम्पँ हिंसायाम्	तुम्प्	तुम्प	तुम्पति	मारना, आघात करना
७५४.	त्रुम्पँ हिंसायाम्	त्रुम्प्	त्रुम्प	त्रुम्पति	मारना, आघात करना
७५५.	जल्पँ व्यक्तायां वाचि, जपे मानसे च	जल्प्	जल्प	जल्पति	बोलना, बकबक करना
७५६.	पर्पँ गतौ	पर्प्	पर्प	पर्पति	जाना, संपीडित करना
७५७.	कपिँ चलने	कन्प्	कम्प	कम्पते	काँपना, हिलना
७५८.	तेपृँ क्षरणे कम्पने च	तेप्	तेप	तेपते	अस्वीकार करना, बहना, झरना
७५९.	ष्टेपृँ क्षरणे	स्तेप्	स्तेप	स्तेपते	अस्वीकार करना, बहना, झरना
७६०.	टुवेपृँ कम्पने	वेप्	वेप	वेपते	काँपना, हिलना

७६१.	केपृँ कम्पने गतौ च	केप्	केप	केपते	काँपना, हिलना
७६२.	गेपृँ कम्पने गतौ च	गेप्	गेप	गेपते	काँपना, हिलना
७६३.	ग्लेपृँ कम्पने, गतौ, दैन्ये च	ग्लेप्	ग्लेप	ग्लेपते	काँपना, हिलना दीन होना, दु:खी होना
७६४.	ग्लेपृँ दैन्ये,	ग्लेप्	ग्लेप	ग्लेपते	दीन होना, दु:खी होना
७६५.	मेपृँ गतौ	मेप्	मेप	मेपते	जाना
७६६.	रेपृँ गतौ	रेप्	रेप	रेपते	जाना
७६७.	लेपृँ गतौ	लेप्	लेप	लेपते	जाना
७६८.	रफिँ गतौ	रन्फ्	रम्फ	रम्फति	जाना, संपीडित करना
७६९.	तुम्फँ हिंसायाम्	तुम्फ्	तुम्फ	तुम्फति	मारना, हिंसा करना
७७०.	त्रुम्फँ हिंसायाम्	त्रुम्फ्	त्रुम्फ	त्रुम्फति	मारना, हिंसा करना
७७१.	कुबिँ आच्छादने	कुन्ब्	कुम्ब	कुम्बति	ढाँकना, आच्छादित करना
७७२.	लुबिँ अर्दने	लुन्ब्	लुम्ब	लुम्बति	मसलना, मिलाना
७७३.	तुबिँ अर्दने	तुन्ब्	तुम्ब	तुम्बति	विकसित होना, मसलना
७७४.	चुबिँ वक्त्रसंयोगे	चुन्ब्	चुम्ब	चुम्बति	चूमना, चुम्बन करना
७७५.	अर्बँ गतौ	अर्ब्	अर्ब	अर्बति	जाना, रौंदना, चलना
७७६.	पर्बँ गतौ	पर्ब्	पर्ब	पर्बति	जाना, रौंदना, चलना
७७७.	लर्बँ गतौ	लर्ब्	लर्ब	लर्बति	जाना, रौंदना, चलना
७७८.	बर्बँ गतौ	बर्ब्	बर्ब	बर्बति	जाना, संपीडित करना, चलना
७७९.	मर्बँ गतौ	मर्ब्	मर्ब	मर्बति	चलना, रहस्य जानना,
७८०.	कर्बँ गतौ	कर्ब्	कर्ब	कर्बति	जाना, आच्छादित करना
७८१.	खर्बँ गतौ	खर्ब्	खर्ब	खर्बति	छोटा होना,
७८२.	गर्बँ गतौ	गर्ब्	गर्ब	गर्बति	जाना, अभिमत्त होना
७८३.	शर्ब गतौ	शर्ब्	शर्ब	शर्बति	जाना, पूर्ण होना
७८४.	षर्बँ गतौ	सर्ब्	सर्ब	सर्बति	जाना, पूर्ण होना
७८५.	चर्बँ गतौ	चर्ब्	चर्ब	चर्बति	चबाना, जाना

७८६.	रबिँ शब्दे	रन्ब्	रम्ब	रम्बते	काँपना, आवाज करना
७८७.	लबिँ शब्दे	लन्ब्	लम्ब	लम्बते	काँपना, आवाज करना
७८८.	अबिँ शब्दे	अन्ब्	अम्ब	अम्बते	बोलना, शब्द करना
७८९.	लबिँ अवस्त्रंसने च	लन्ब्	लम्ब	लम्बते	लटकना, उतरना, शब्द करना
७९०.	क्लीबृँ अधाष्ट्र्ये	क्लीब्	क्लीब	क्लीबते	कायरता करना
७९१.	क्षीबृँ मदे	क्षीब्	क्षीब	क्षीबते	मतवाला होना
७९२.	षृम्भुँ हिंसार्थ: षिभुँ, षिम्भुँ इत्येके	सृम्भ्	सृम्भ	सृम्भति	हिंसा करना, मारना,
७९३.	शुम्भँ भाषणे, भासने इत्येके। हिंसायामित्यन्ये	शुम्भ्	शुम्भ	शुम्भति	बोलना, भाषण करना
७९४.	ष्टभिँ प्रतिबन्धे	स्तन्भ्	स्तम्भ	स्तम्भते	गड्ढे में रोपना
७९५.	स्कभिँ प्रतिबन्धे	स्कन्भ्	स्कम्भ	स्कम्भते	ऊँचा उठाना
७९६.	जृभिँ गात्रविनामे	जृन्भ्	जृम्भ	जृम्भते	जमुहाई लेना, अवलम्ब देना
७९७.	श्रम्भुँ प्रमादे, दन्त्यादिश्च	श्रम्भ्	श्रम्भ	श्रम्भते	असावधानी करना
७९८.	स्त्रंभुँ विश्वासे	स्त्रम्भ्	स्त्रम्भ	स्त्रम्भते	विश्वास करना
७९९.	शीभृँ कत्थने	शीभ्	शीभ	शीभते	पूज्य होना, श्लाघा करना
८००.	चीभृँ कत्थने	चीभ्	चीभ	चीभते	पूज्य होना, श्लाघा
८०१.	रेभृँ शब्दे	रेभ्	रेभ	रेभते	गरजना, आवाज करना
८०२.	शल्भँ कत्थने	शल्भ्	शल्भ	शल्भते	पूज्य होना, श्लाघा करना
८०३.	वल्भँ भोजने	वल्भ्	वल्भ	वल्भते	खाना, भोजन करना
८०४.	गल्भँ धाष्ट्र्ये	गल्भ्	गल्भ	गल्भते	धृष्टता करना, ढिठाई करना
८०५.	मीमृँ गतौ शब्दे च	मीम्	मीम	मीमति	चलना, जाना
८०६.	हम्मँ गतौ	हम्म्	हम्म	हम्मति	गर्व करना, प्रेरित करना
८०७.	भामँ क्रोधे	भाम्	भाम	भामते	क्रोध करना
८०८.	ईर्क्ष्यँ ईर्ष्यायाम्	ईर्क्ष्य्	ईर्क्ष्य	ईर्क्ष्यति	ईर्ष्या से दाँत पीसना

८०९.	सूर्क्ष्यँ ईर्ष्यायाम्	सूर्क्ष्य्	सूर्क्ष्य	सूर्क्ष्यति	ईर्ष्या से दाँत पीसना
८१०.	ईर्ष्यँ ईर्ष्यायाम्	ईर्ष्य्	ईर्ष्य	ईर्ष्यति	ईर्ष्या करना
८११.	हर्यँ गतिकान्त्यो:	हर्य्	हर्य	हर्यति	सूखना, चलना, इच्छा करना
८१२.	तायृँ संतानपालनयो:	ताय्	ताय	तायते	फूलना, बढ़ना, रक्षा करना
८१३.	क्ष्मायीँ विधूनने	क्ष्माय्	क्ष्माय	क्ष्मायते	देना, दान करना, कँपाना
८१४.	स्फायीँ वृद्धौ	स्फाय्	स्फाय	स्फायते	बढ़ना, वृद्धिंगत होना
८१५.	ओँप्यायीँ वृद्धौ	प्याय्	प्याय	प्यायते	बढ़ना, वृद्धिंगत होना
८१६.	ऊयीँ तन्तुसन्ताने	ऊय्	ऊय	ऊयते	कपड़ा आदि बुनना
८१७.	क्नूयीँ शब्दे उन्दे च	क्नूय्	क्नूय	क्नूयते	शब्द करना, गीला करना
८१८.	पूयीँ विशरणे दुर्गन्धे च	पूय्	पूय	पूयते	दुर्गन्ध देना, फूलना, बिखरना
८१९.	मव्यँ बन्धने	मव्य्	मव्य	मव्यति	बाँधना, रक्षा करना
८२०.	शुच्यँ अभिषवे चुच्यँ इत्येके।	शुच्य्	शुच्य	शुच्यति	मन्थन करना, मथना, काटना
८२१.	चायृँ पूजानिशामनयो:	चाय्	चाय	चायति/ते	पूजा करना, देखना,
८२२.	खोर्ऋँ गतिप्रतिघाते	खोर्	खोर	खोरति	रुकावट डालना, बाँधना, रोकना
८२३.	धोर्ऋँ गतिचातुर्ये	धोर्	धोर	धोरति	तेज चलना, काँपना, झूलना
८२४.	अभ्रँ गतौ	अभ्र्	अभ्र	अभ्रति	चलना, भटकना
८२५.	वभ्रँ गतौ	वभ्र्	वभ्र	वभ्रति	विवाद करना, चलना, घूमना
८२६.	मभ्रँ गतौ	मभ्र्	मभ्र	मभ्रति	अँगूठे से चिह्नित करना, जाना
८२७.	वेलृँ चलने	वेल्	वेल	वेलति	बीत जाना, अतिक्रान्त होना
८२८.	चेलृँ चलने	चेल्	चेल	चेलति	चलना

८२९.	केलृँ चलने	केल्	केल	केलति	क्रीडा करना, खेलना
८३०.	खेलृँ चलने	खेल्	खेल	खेलति	क्रीडा करना, खेलना,
८३१.	क्ष्वेलृँ चलने	क्ष्वेल्	क्ष्वेल	क्ष्वेलति	विलास करना,
८३२.	पेलृँ गतौ	पेल्	पेल	पेलति	पाँसों से जुआ खेलना
८३३.	फेलृँ गतौ	फेल्	फेल	फेलति	नाचना
८३४.	शेलृँ गतौ, षेलृँ इत्येके	शेल्	शेल	शेलति	जाना, श्लेष्मद्रव्य से जुड़ना
८३५.	खोलृँ गतिप्रतिघाते	खोल्	खोल	खोलति	रोकना, रुकावट डालना, बाँधना
८३६.	मीलँ निमेषणे	मील्	मील	मीलति	पलक बन्द करना
८३७.	श्मीलँ निमेषणे	श्मील्	श्मील	श्मीलति	पलक बन्द करना
८३८.	स्मीलँ निमेषणे	स्मील्	स्मील	स्मीलति	पलक बन्द करना
८३९.	क्ष्मीलँ निमेषणे	क्ष्मील्	क्ष्मील	क्ष्मीलति	पलक बन्द करना
८४०.	पीलँ प्रतिष्टम्भे	पील्	पील	पीलति	प्रतिष्ठापित करना
८४१.	णीलँ वर्णे	नील्	नील	नीलति	आच्छादित करना, रँगना
८४२.	शीलँ समाधौ	शील्	शील	शीलति	चरित्रवान् होना
८४३.	कीलँ बन्धने	कील्	कील	कीलति	कील ठोंकना,
८४४.	कूलँ आवरणे	कूल्	कूल	कूलति	परिश्रम करना, ढाँकना
८४५.	शूलँ रुजायां सङ्घोषे च	शूल्	शूल	शूलति	पीडित करना, रोग होना
८४६.	तूलँ निष्कर्षे	तूल्	तूल	तूलति	बाहर निकालना, हलका होना
८४७.	पूलँ संङ्घाते	पूल्	पूल	पूलति	पल्लवित होना, इकट्ठा होना
८४८.	मूलँ प्रतिष्ठायाम्	मूल्	मूल	मूलति	प्रतिष्ठापित करना, जमाना
८४९.	चुल्लँ भावकरणे	चुल्ल्	चुल्ल	चुल्लति	अभिप्राय सूचित करना
८५०.	फुल्लँ विकसने	फुल्ल्	फुल्ल	फुल्लति	खिलना, विकसित
८५१.	चिल्लँ शैथिल्ये भावकरणे च	चिल्ल्	चिल्ल	चिल्लति	होना, शिथिल होना

८५२.	वेल्लँ चलने	वेल्ल्	वेल्ल	वेल्लति	चलना, हिलना, डोलना
८५३.	खल्लँ आशुगमने	खल्ल्	खल्ल	खल्लति	भ्रमण करना, घूमना
८५४.	भल्लँ॒ परिभाषण-हिंसादानेषु	भल्ल्	भल्ल	भल्लते	बोलना, हिंसा करना, देना
८५५.	मल्लँ॒ धारणे	मल्ल्	मल्ल	मल्लते	धर्षण करना, झगड़ना, संघर्ष करना
८५६.	वल्लँ॒ संवरणे सञ्चरणे च	वल्ल्	वल्ल	वल्लते	विस्तार करना
८५७.	कल्लँ॒ अव्यक्ते शब्दे	कल्ल्	कल्ल	कल्लते	अव्यक्त शब्द करना
८५८.	पिविँ सेचने	पिन्व्	पिन्व	पिन्वति	बीज बोना, घिसना
८५९.	मिविँ सेचने	मिन्व्	मिन्व	मिन्वति	बीज बोना, सींचना
८६०.	णिविँ सेचने, षविँ इत्येके	निन्व्	निन्व	निन्वति	बूँद टपकाना
८६१.	हिविँ प्रीणने	हिन्व्	हिन्व	हिन्वति	जीना, शीतल करना, प्रसन्न करना
८६२.	दिविँ प्रीणने	दिन्व्	दिन्व	दिन्वति	जीना, नाचना, शीतल करना
८६३.	जिविँ प्रीणने	जिन्व्	जिन्व	जिन्वति	जीना, नाचना, शीतल करना
८६४.	रिविँ गतौ	रिन्व्	रिण्व	रिण्वति	जाना
८६५.	रविँ गतौ	रन्व्	रण्व	रण्वति	जाना
८६६.	धविँ गतौ	धन्व्	धन्व	धन्वति	जाना
८६७.	इविँ व्याप्तौ	इन्व्	इन्व	इन्वति	व्याप्त करना, व्याप्त होना
८६८.	मुर्वीँ बन्धने	मूर्व्	मूर्व	मूर्वति	बाँधना
८६९.	उर्वीँ हिंसायाम्	ऊर्व	ऊर्व	ऊर्वति	सहन करना
८७०.	तुर्वीँ हिंसायाम्	तूर्व्	तूर्व	तूर्वति	खुजलाना, क्षत करना
८७१.	थुर्वीँ हिंसायाम्	थूर्व्	थूर्व	थूर्वति	काटना
८७२.	दुर्वीँ हिंसायाम्	दूर्व्	दूर्व	दूर्वति	पीडा निवारण करना
८७३.	धुर्वीँ हिंसायाम्	धूर्व्	धूर्व	धूर्वति	देवताओं का कुपित होना
८७४.	गुर्वीँ उद्यमने	गूर्व्	गूर्व	गूर्वति	उद्योग करना, काम करना, उठाना

८७५.	क्षेवुँ निरसने	क्षेव्	क्षेव	क्षेवति	थूकना, त्यागना, छोड़ना
८७६.	जीवँ प्राणधारणे	जीव्	जीव	जीवति	प्राणधारण करना, जीना
८७७.	पीवँ स्थौल्ये	पीव्	पीव	पीवति	स्थूल होना, मोटा होना
८७८.	मीवँ स्थौल्ये	मीव्	मीव	मीवति	स्थूल होना, मोटा होना
८७९.	तीवँ स्थौल्ये	तीव्	तीव	तीवति	फूँकना
८८०.	णीवँ स्थौल्ये	नीव्	नीव	नीवति	फूलना
८८१.	पुर्वँ पूरणे	पूर्व्	पूर्व	पूर्वति	भरना
८८२.	पर्वँ पूरणे	पर्व्	पर्व	पर्वति	भरना, प्रसिद्ध होना
८८३.	मर्वँ पूरणे	मर्व्	मर्व	मर्वति	भरना, विस्तार करना
८८४.	चर्वँ अदने	चर्व्	चर्व	चर्वति	चबाना, खाना
८८५.	भर्वँ हिंसायाम्	भर्व्	भर्व	भर्वति	हिंसा करना, मारना
८८६.	कर्वँ दर्पे	कर्व्	कर्व	कर्वति	आच्छादित करना
८८७.	खर्वँ दर्पे	खर्व्	खर्व	खर्वति	बौना होना, छोटा होना
८८८.	गर्वँ दर्पे	गर्व्	गर्व	गर्वति	घमण्ड करना, गर्व करना
८८९.	अर्वँ हिंसायाम्	अर्व्	अर्व	अर्वति	लात से मारना
८९०.	शर्वँ हिंसायाम्	शर्व्	शर्व	शर्वति	मारना, कष्ट देना
८९१.	षर्वँ हिंसायाम्	सर्व्	सर्व	सर्वति	मारना, कष्ट देना
८९२.	गेवृँ देवने	गेव्	गेव	गेवते	सेवा करना,
८९३.	तेवृँ देवने	तेव्	तेव	तेवते	रिक्त होना, जुआ खेलना
८९४.	देवृँ देवने	देव्	देव	देवते	रिक्त होना, जुआ खेलना
८९५.	पेवृँ प्लवगतौ	पेव्	पेव	पेवते	शीतल करना, लगना, लगाना
८९६.	मेवृँ प्लवगतौ	मेव्	मेव	मेवते	शीतल करना, लगना, लगाना
८९७.	रेवृँ प्लवगतौ	रेव्	रेव	रेवते	श्रम से चलना, उछलकर चलना
८९८.	ग्लेवृँ सेवने	ग्लेव्	ग्लेव	ग्लेवते	फूलना
८९९.	म्लेवृँ सेवने	म्लेव्	म्लेव	म्लेवते	शीतल करना
	शेवृँ केवृँ, क्लेवृँ इत्येके				
९००.	षेवृँ सेवने	सेव्	सेव	सेवते	सेवा करना
९०१.	चीवृँ आदानसंवरणयो:	चीव्	चीव	चीवति/ते	ओढ़ना, ग्रहण करना लेना

९०२.	धावुँ गतिशुद्ध्योः	धाव्	धाव	धावति/ते	तेज जाना, धोना
९०३.	काशृँ दीप्तौ	काश्	काश	काशते	प्रकाशित होना, चमकना
९०४.	क्लेशँ अव्यक्तायां वाचि	क्लेश्	क्लेश	क्लेशते	कराहना, काँखना
९०५.	दाशृँ दाने	दाश्	दाश	दाशति/ते	देना, दास्य करना
९०६.	ईषँ उञ्छे	ईष्	ईष	ईषति	कण कण बीनना
९०७.	ऊषँ रुजायाम्	ऊष्	ऊष	ऊषति	रोगी होना, पीड़ित होना
९०८.	चूषँ पाने	चूष्	चूष	चूषति	चूसना, पीना
९०९.	तूषँ तुष्टौ	तूष्	तूष	तूषति	सन्तुष्ट होना, तृप्त होना
९१०.	पूषँ वृद्धौ	पूष्	पूष	पूषति	अधिक होना, बढ़ना
९११.	मूषँ स्तेये	मूष्	मूष	मूषति	चुराना, हरण करना
९१२.	लूषँ भूषायाम्	लूष्	लूष	लूषति	सजाना, सँवारना
९१३.	रूषँ भूषायाम्	रूष्	रूष	रूषति	सजाना, सँवारना
९१४.	शूषँ प्रसवे	शूष्	शूष	शूषति	आज्ञा देना
९१५.	यूषँ हिंसायाम्	यूष्	यूष	यूषति	मारना, हिंसा करना
९१६.	जूषँ हिंसायाम्	जूष्	जूष	जूषति	मारना, हिंसा करना
९१७.	भूषँ अलंकारे	भूष्	भूष	भूषति	सजाना, सँवारना
९१८.	काक्षिँ काङ्क्षायाम्	कान्क्ष्	काङ्क्ष	काङ्क्षति	इच्छा करना, आकाङ्क्षा करना
९१९.	वाक्षिँ काङ्क्षायाम्	वान्क्ष्	वाङ्क्ष	वाङ्क्षति	इच्छा करना, आकाङ्क्षा करना
९२०.	माक्षिँ काङ्क्षायाम्	मान्क्ष्	माङ्क्ष	माङ्क्षति	इच्छा करना, आकाङ्क्षा करना
९२१.	द्राक्षिँ काङ्क्षायां घोरवाशिते च	द्रान्क्ष्	द्राङ्क्ष	द्राङ्क्षति	कठोर भाषण करना
९२२.	ध्राक्षिँ काङ्क्षायां घोरवाशिते च	ध्रान्क्ष्	ध्राङ्क्ष	ध्राङ्क्षति	कठोर भाषण करना
९२३.	ध्वाक्षिँ काङ्क्षायां घोरवाशिते च	ध्वान्क्ष्	ध्वाङ्क्ष	ध्वाङ्क्षति	कठोर भाषण करना
९२४.	तक्षँ त्वचने पक्ष परिग्रह इत्येके	तक्ष्	तक्ष	तक्षति	आच्छादित करना बोलना

९२५.	उक्षँ सेचने	उक्ष्	उक्ष	उक्षति	सींचना, छिड़कना
९२६.	त्वक्षूँ तनूकरणे	त्वक्ष्	त्वक्ष	त्वक्षति	छीलना, पतला करना
९२७.	रक्षँ पालने	रक्ष्	रक्ष	रक्षति	रक्षा करना,
					पालन करना
९२८.	णिक्षँ चुम्बने	निक्ष्	निक्ष	निक्षति	चुम्बन करना, चूमना
९२९.	त्रक्षँ गतौ	त्रक्ष्	त्रक्ष	त्रक्षति	जाना, चलना
९३०.	ष्ट्रक्षँ गतौ	स्त्रक्ष्	स्त्रक्ष	स्त्रक्षति	जाना, चलना
	तृक्षँ, ष्टृक्षँ इति केचित्				
९३१.	णक्षँ गतौ	नक्ष्	नक्ष	नक्षति	आना
९३२.	वक्षँ रोषे	वक्ष्	वक्ष	वक्षति	रक्षा करना, क्रोध करना
९३३.	मृक्ष संघाते	मृक्ष्	मृक्ष	मृक्षति	इकट्ठा होना,
	म्रक्ष इत्येके				सङ्घ बनाना
९३४.	सूर्क्षँ आदरे	सूर्क्ष्	सूर्क्ष	सूर्क्षति	आदर करना, प्रिय होना
	अनादरे इति काशकृत्स्न: (षर्क्षँ इति केचित्)				
९३५.	भाषँ व्यक्तायां वाचि	भाष्	भाष	भाषते	बोलना, वार्तालाप करना
९३६.	ईषँ गतिहिंसादर्शनेषु	ईष्	ईष	ईषते	जाना, मारना, देखना
९३७.	एषृँ गतौ	एष्	एष	एषते	जाना
९३८.	गेषृँ अन्विच्छायाम्	गेष्	गेष	गेषते	अन्वेषण करना
	ग्लेषृँ इत्येके	ग्लेष्	ग्लेष	ग्लेषते	अन्वेषण करना
९३९.	जेषृँ गतौ	जेष्	जेष	जेषते	जाना
९४०.	णेषृँ गतौ	नेष्	नेष	नेषते	जाना
९४१.	पेषृँ प्रयत्ने	पेष्	पेष	पेषते	प्रयत्न करना
	एषृँ इत्यके, येषृँ इत्यप्यन्ये				
९४२.	प्रेषृँ गतौ	प्रेष्	प्रेष	प्रेषते	जाना
९४३.	रेषृँ अव्यक्ते शब्दे	रेष्	रेष	रेषते	भेड़िये का बोलना
९४४.	हेषृँ अव्यक्ते शब्दे	हेष्	हेष	हेषते	हिनहिनाना, नाचना
९४५.	ह्रेषृँ अव्यक्ते शब्दे	ह्रेष्	ह्रेष	ह्रेषते	हिनहिनाना, नाचना
	रेषृँ वृकशब्दे				
९४६.	घुषिँ कान्तिकरणे	घुन्ष्	घुंष	घुंषते	चमकना
९४७.	वर्षँ स्नेहने	वर्ष्	वर्ष	वर्षति	बरसना
९४८.	भेषृँ भये,	भेष्	भेष	भेषति/ते	डरना

९४९.	भ्रेषृँ गतौ	भ्रेष्	भ्रेष	भ्रेषति/ते	जाना, भ्रष्ट होना
९५०.	भ्लेषृँ गतौ	भ्लेष्	भ्लेष	भ्लेषति/ते	काँपना,जाना, चलना,
					भ्रष्ट होना
९५१.	भ्रक्षँ अदने	भ्रक्ष्	भ्रक्ष	भ्रक्षति/ते	खाना, भक्षण करना
९५२.	भ्लक्षँ अदने	भ्लक्ष्	भ्लक्ष	भ्लक्षति/ते	खाना, भक्षण करना
	भक्षँ इति मैत्रेय:				
९५३.	दक्षँ वृद्धौ	दक्ष्	दक्ष	दक्षते	बढ़ना, जल्दी करना
	शीघ्रार्थे च				
९५४.	दक्षँ गतिहिंसनयो:	दक्ष्	दक्ष	दक्षते	जाना, मारना,
					हिंसा करना
९५५.	धुक्षँ संदीपन -	धुक्ष्	धुक्ष	धुक्षते	भूखा होना, थकना
	क्लेशनजीवनेषु				
९५६.	धिक्षँ संदीपन -	धिक्ष्	धिक्ष	धिक्षते	भूखा होना, थकना
	क्लेशनजीवनेषु				
९५७.	भिक्षँ भिक्षायामलाभे	भिक्ष्	भिक्ष	भिक्षते	याचना करना, माँगना
	लाभे च				
९५८.	शिक्षँ विद्योपादाने	शिक्ष्	शिक्ष	शिक्षते	सीखना,
					विद्या ग्रहण करना
९५९.	ईक्षँ दर्शने	ईक्ष्	ईक्ष	ईक्षते	देखना, समझना
९६०.	दीक्षँ मौण्ड्येज्योप -	दीक्ष्	दीक्ष	दीक्षते	जीना, यज्ञ करना
	नयननियमव्रतादेशेषु				
९६१.	वृक्षँ वरणे	वृक्ष्	वृक्ष	वृक्षते	आच्छादित करना,
					ढाँकना
९६२.	शंसुँ स्तुतौ	शंस्	शंस	शंसति	प्रशंसा करना,
					सिफारिश करना
९६३.	पेसृँ गतौ	पेस्	पेस	पेसति	जाना, लगना, भरना
९६४.	कासृँ शब्दकुत्सायाम्	कास्	कास	कासते	खाँसना, खखारना
९६५.	णासृँ दीप्तौ	नास्	नास	नासते	आवाज करना
९६६.	भासृँ दीप्तौ	भास्	भास	भासते	चमकना,
					प्रकाशित होना
९६७.	रासृँ शब्दे	रास्	रास	रासते	गधे का बोलना,

					आवाज करना
९६८.	स्रंसुँ अवस्रंसने	स्रंस्	स्रंस	स्रंसते	गिरना, लटकना
९६९.	ध्वंसुँ अवस्रंसने गतौ च	ध्वंस्	ध्वंस	ध्वंसते	नष्ट होना, दूर होना
९७०.	भ्रंसुँ अवस्रंसने भ्रंशुँ इत्यपि केचित्	भ्रंस्	भ्रंस	भ्रंसते	गिरना, लटकना,
९७१.	आङः शसिँ इच्छायाम्	आशन्स्	आशंस	आशंसते	इच्छा करना, प्रशंसा करना
९७२.	दासृँ दाने	दास्	दास	दासति/ते	देना
९७३.	रहिँ गतौ	रन्ह्	रंह	रंहति	तेज चलना, वेग से झपटना
९७४.	दृहिँ वृद्धौ	दृन्ह्	दृंह	दृंहति	शब्द करना, बढ़ना
९७५.	बृहिँ वृद्धौ	बृन्ह्	बृंह	बृंहति	शब्द करना, बढ़ना
९७६.	अर्हँ पूजायाम्	अर्ह्	अर्ह	अर्हति	पूजा अथवा सम्मान के योग्य होना
९७७.	गाहूँ विलोडने	गाह्	गाह	गाहते	विलोडन करना,
९७८.	बाहृँ प्रयत्ने	बाह्	बाह	बाहते	वहन करना, प्रयत्न करना
९७९.	द्राहृँ निद्राक्षये	द्राह्	द्राह	द्राहते	जागना
९८०.	ईहँ चेष्टायाम्	ईह्	ईह	ईहते	इच्छा करना, चेष्टा करना
९८१.	ऊहँ वितर्के	ऊह्	ऊह	ऊहते	विचार करना, ऊहापोह करना
९८२.	वेहृँ (बेहृँ) प्रयत्ने	वेह्	वेह	वेहते	उद्योग करना, प्रयत्न करना
९८३.	जेहृँ प्रयत्ने (जेहृँ गतावपि)	जेह्	जेह	जेहते	विचार करना
९८४.	अहिँ गतौ	अन्ह्	अन्ह्	अंहते	टेढ़ा चलना, भेजना, कुटिल चलना
९८५.	महिँ वृद्धौ	मन्ह्	मंह	मंहते	बढ़ना, उत्पन्न होना
९८६.	बहिँ वृद्धौ	बन्ह्	बंह	बंहते	बढ़ना, सहायता करना

९८७.	गर्हँ कुत्सायाम्	गर्ह्	गर्ह	गर्हति	निन्दा करना
९८८.	गल्हँ कुत्सायाम्	गल्ह्	गल्ह	गल्हते	निन्दा करना
९८९.	बर्हँ प्राधान्ये	बर्ह्	बर्ह	बर्हति	मुखिया होना,प्रधान होना
९९०.	बल्हँ प्राधान्ये	बल्ह्	बल्ह	बल्हते	मुखिया होना,प्रधान होना
९९१.	वर्हँ परिभाषण-हिंसाच्छादनेषु	वर्ह्	वर्ह	वर्हति	कठोर बोलना, हिंसा करना, देना
९९२.	वल्हँ परिभाषण-हिंसाच्छादनेषु	वल्ह्	वल्ह	वल्हते	कठोर बोलना, हिंसा करना
९९३.	माहृँ' माने	माह्	माह	माहति/ते	मान करना, बरतना

इन धातुओं को भी भ्वादिगण में पढ़ें

ध्यान दें कि चुरादिगण में जो वैकल्पिक णिजन्त धातु हैं, उन सबसे पक्ष में शप् होता है, अत: इन सबको भी भ्वादिगण का ही समझना चाहिये। चुरादिगण के अन्दर पड़े होने से इनका वाग्व्यवहार नहीं होता है, अत: हम इन्हें संकलित करके हमने परिशिष्ट - ५ में दिया है। उन्हें यहाँ लाकर आप भ्वादिगण के साथ ही पढ़ें और इन सबको भ्वादिगण का ही समझकर शप् विकरण के साथ उनका व्यवहार भी करें।

दिवादिगण: - तत्र विशेषधातव:

दिवादिभ्य: श्यन् (३.१.६९) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर दिवादिगण के धातुओं से श्यन् विकरण लगाया जाता है। अत: दिवादिगण के धातुओं में श्यन् विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

९९४.	त्रसीँ उद्वेगे	त्रस्	त्रस्य	त्रस्यति/ त्रसति	उद्विग्न होना, त्रस्त होना
९९५.	यसुँ प्रयत्ने	यस्	यस्य	यस्यति/ यसति	यत्न करना, आयास करना
९९६.	जनीँ प्रादुर्भावे	जन्	जाय	जायते	उत्पन्न होना, पैदा होना
९९७.	ञिमिदाँ स्नेहने	मिद्	मेद्य	मेद्यति	पिघलना, स्निग्ध होना
९९८.	दिवुँ क्रीडा - विजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु	दिव्	दीव्य	दीव्यति	लेना, खेलना, चाहना
९९९.	षिवुँ तन्तुसन्ताने	सिव्	सीव्य	सीव्यति	सीना, बोना, रोपना
१०००.	स्रिवुँ गतिशोषणयो:	स्रिव्	स्रीव्य	स्रीव्यति	सूखना, जाना,सरकना

१००१.	ष्ठिवुँ निरसने	ष्ठिव्	ष्ठीव्य	ष्ठीव्यति	थूकना
१००२.	दो अवखण्डने	दो	द्य	द्यति	अवखण्डन करना, तोड़ना
१००३.	शो तनूकरणे	शो	श्य	श्यति	छीलना, पतला करना
१००४.	छो छेदने	छो	छ्य	छ्यति	काटना, छेदन करना
१००५.	षो अन्तकर्मणि	षो	स्य	स्यति	समाप्त करना, पूरा करना
१००६.	जॄष् वयोहानौ	जॄ	जीर्य	जीर्यति	जीर्ण होना, वृद्ध होना
१००७.	झॄष् वयोहानौ	झॄ	झीर्य	झीर्यति	जीर्ण होना, वृद्ध होना
१००८.	रञ्जँ रागे	रञ्ज्	रज्य	रज्यति/ते	रँगना, अनुरक्त होना
१००९.	भ्रंशुँ अध:पतने	भ्रंश्	भ्रश्य	भ्रश्यति	गिरना, फिसलना
१०१०.	व्यधँ ताडने	व्यध्	विध्य	विध्यति	बिंधना, घुसना, चुभना

शमाद्यन्तर्गण:

१०११.	शमुँ उपशमे	शम्	शाम्य	शाम्यति	शान्त होना, बुझना
१०१२.	तमुँ काङ्क्षायाम्	तम्	ताम्य	ताम्यति	उत्कट इच्छा करना
१०१३.	दमुँ उपशमे	दम्	दाम्य	दाम्यति	दमन करना, दबाना
१०१४.	श्रमुँ तपसि खेदे च	श्रम्	श्राम्य	श्राम्यति	थकना, खिन्न होना, श्रान्त होना
१०१५.	भ्रमुँ अनवस्थाने	भ्रम्	भ्राम्य	भ्राम्यति	घूमना, भटकना
१०१६.	क्षमूँ सहने	क्षम्	क्षाम्य	क्षाम्यति	सहन करना, क्षमा करना
१०१७.	क्लमुँ ग्लानौ	क्लम्	क्लाम्य	क्लाम्यति क्लामति	ग्लान होना, थकना
१०१८.	मदीँ हर्षे	मद्	माद्य	माद्यति	प्रसन्न होना

दिवादिगणस्य शेषधातव:

१०१९.	माङ् माने	मा	माय	मायते	नापना, तौलना,समाना
१०२०.	पीङ् पाने	पी	पीय	पीयते	पीना
१०२१.	ईङ् गतौ	ई	ईय	ईयते	जाना
१०२२.	प्रीङ् प्रीतौ	प्री	प्रीय	प्रीयते	प्रसन्न होना
१०२३.	रीङ् स्रवणे	री	रीय	रीयते	बहना, चूना, टपकना,
१०२४.	व्रीङ् वृणोत्यर्थे	व्री	व्रीय	व्रीयते	ढूँढना, ढाँकना, स्वीकार करना

१०२५.	डीङ् विहायसा गतौ	डी	डीय	डीयते	आकाश में उड़ना
१०२६.	दीङ् क्षये	दी	दीय	दीयते	क्षीण होना
१०२७.	धीङ् आधारे	धी	धीय	धीयते	धारण करना
१०२८.	मीङ् हिंसायाम्	मी	मीय	मीयते	हिंसा करना
१०२९.	लीङ् श्लेषणे	ली	लीय	लीयते	विलीन होना, चिपकना
१०३०.	षूङ् प्राणिप्रसवे	सू	सूय	सूयते	प्रसव करना,जन्म देना
१०३१.	दूङ् परितापे	दू	दूय	दूयते	दु:खी होना

अदुपध-धातव:

१०३२.	शकँ विभाषितो मर्षणे	शक्	शक्य	शक्यति/ते	कर सकना, क्षमा करना
१०३३.	अणँ प्राणने (अन इत्येके)	अण्	अण्य	अण्यते	जीवित रहना, प्राणधारण करना
१०३४.	पदँ गतौ	पद्	पद्य	पद्यते	जाना, होना, घटित होना
१०३५.	रधँ हिंसासंराद्ध्यो:	रध्	रध्य	रध्यति	मारना, भोजन पकाना
१०३६.	मनँ ज्ञाने	मन्	मन्य	मन्यते	मानना, समझना, अनुमान करना
१०३७.	तपँ दाहे ऐश्वर्ये वा	तप्	तप्य	तप्यति/ते	तपना, जलाना, ऐश्वर्यवान् होना
१०३८.	शपँ आक्रोशे	शप्	शप्य	शप्यति/ते	आक्रोश करना, विरोध करना,
१०३९.	णभँ हिंसायाम्	नभ्	नभ्य	नभ्यति	मारना, हिंसा करना
१०४०.	णशँ अदर्शने	नश्	नश्य	नश्यति	नष्ट होना, दिखाई न पड़ना
१०४१.	असुँ क्षेपणे	अस्	अस्य	अस्यति	फेंकना, रखना
१०४२.	जसुँ मोक्षणे	जस्	जस्य	जस्यति	छोड़ना, त्यागना
१०४३.	तसुँ उपक्षये	तस्	तस्य	तस्यति	रखना, स्थापित करना, क्षीण होना
१०४४.	दसुँ उपक्षये	दस्	दस्य	दस्यति	रखना, स्थापित करना, क्षीण होना
१०४५.	वसुँ स्तम्भे भसुँ इत्यपि केचित्	वस्	वस्य	वस्यति	स्थित रहना, स्तब्ध होना

१०४६.	मसीँ परिणामे, समी इत्येके।	मस्	मस्य	मस्यति	विकृत होना, परिवर्तित होना
१०४७.	ष्णसुँ निरसने	स्नस्	स्नस्य	स्नस्यति	बाहर निकालना, हटाना
१०४८.	क्नसुँ ह्वरणदीप्त्यो:	क्नस्	क्नस्य	क्नस्यति	कुटिलता करना
१०४९.	णहँ बन्धने	नह्	नह्य	नह्यति/ते	बाँधना
१०५०.	षहँ चक्यर्थे	सह्	सह्य	सह्यति	तृप्त होना

इदुपध-धातव:

१०५१.	ष्विदाँ गात्रप्रक्षरणे	स्विद्	स्विद्य	स्विद्यति	पसीना छूटना
१०५२.	क्लिदूँ आर्द्रीभावे	क्लिद्	क्लिद्य	क्लिद्यति	गीला करना
१०५३.	ञिक्ष्विदाँ स्नेहनमोचनयो:	क्ष्विद्	क्ष्विद्य	क्ष्विद्यति	नहाना, मुक्त करना
१०५४.	खिदँ दैन्ये	खिद्	खिद्य	खिद्यते	दु:खी होना
१०५५.	विदँ सत्तायाम्	विद्	विद्य	विद्यते	जीना, रहना, विद्यमान रहना
१०५६.	षिधुँ संराद्धौ	सिध्	सिध्य	सिध्यति	निर्णय करना, पूर्ण होना
१०५७.	डिपँ क्षेपे	डिप्	डिप्य	डिप्यति	भेजना, निन्दा करना
१०५८.	क्षिपँ प्रेरणे	क्षिप्	क्षिप्य	क्षिप्यति	फेंकना
१०५९.	तिमँ आर्द्रीभावे	तिम	तिम्य	तिम्यति	आर्द्र होना, छिपना
१०६०.	ष्टिमँ आर्द्रीभावे	स्तिम्	स्तिम्य	स्तिम्यति	गीला होना,भाप बनना
१०६१.	क्लिशँ उपतापे	क्लिश्	क्लिश्य	क्लिश्यते	क्लेश पाना,दु:खी होना
१०६२.	लिशँ अल्पीभावे	लिश्	लिश्य	लिश्यते	कम करना
१०६३.	श्लिषँ आलिङ्गने	श्लिष्	श्लिष्य	श्लिष्यति	आलिङ्गन करना, गले लगाना
१०६४.	इषँ गतौ	इष्	इष्य	इष्यति	भेजना, प्रेरित करना
१०६५.	रिषँ हिंसायाम्	रिष्	रिष्य	रिष्यति	मार डालना,कम होना
१०६६.	बिसँ प्रेरणे	बिस्	बिस्य	बिस्यति	फेंकना, उड़ना
१०६७.	ष्णिहँ प्रीतौ	स्निह्	स्निह्य	स्निह्यति	स्नेह करना, प्रीति करना

उदुपधधातव:

१०६८.	ईँशुचिँर् पूतीभावे	शुच्	शुच्य	शुच्यति/ते	शुद्ध होना
१०६९.	उचँ समवाये	उच्	उच्य	उच्यति	इकट्ठा करना

१०७०.	युजँ समाधौ	युज्	युज्य	युज्यते	उचित होना
१०७१.	लुठँ विलोडने	लुठ्	लुठ्य	लुठ्यति	लोटना, काँपना, हिलना
१०७२.	कुथँ पूतीभावे	कुथ्	कुथ्य	कुथ्यति	दुर्गन्ध आना
१०७३.	पुथँ हिंसायाम्	पुथ्	पुथ्य	पुथ्यति	मारना, पटकना
१०७४.	बुधँ अवगमने	बुध्	बुध्य	बुध्यते	समझना
१०७५.	युधँ संप्रहारे	युध्	युध्य	युध्यते	लड़ना, युद्ध करना
१०७६.	अनो रुधँ कामे	अनुरुध्	अनुरुध्य	अनुरुध्यते	दया करना, अनुमोदन करना
१०७७.	गुधँ परिवेष्टने	गुध्	गुध्य	गुध्यति	घेरना
१०७८.	क्रुधँ क्रोधे	क्रुध्	क्रुध्य	क्रुध्यति	क्रोध करना
१०७९.	क्षुधँ बुभुक्षायाम्	क्षुध्	क्षुध्य	क्षुध्यति	भूखा होना
१०८०.	शुधँ शौचे	शुध्	शुध्य	शुध्यति	शुद्ध होना,पवित्र होना
१०८१.	कुपँ क्रोधे	कुप्	कुप्य	कुप्यति	क्रोध करना
१०८२.	गुपँ व्याकुलत्वे	गुप्	गुप्य	गुप्यति	व्याकुल होना
१०८३.	युपँ विमोहने	युप्	युप्य	युप्यति	चित्त विकल होना
१०८४.	रुपँ विमोहने	रुप्	रुप्य	रुप्यति	चित्त विकल होना
१०८५	लुपँ विमोहने (ष्टुपँ समुच्छ्राये)	लुप्	लुप्य	लुप्यति	चित्त विकल होना
१०८६.	लुभँ गार्ध्ये	लुभ्	लुभ्य	लुभ्यति	लोभ करना
१०८७.	क्षुभँ सञ्चलने	क्षुभ्	क्षुभ्य	क्षुभ्यति	क्षुब्ध करना
१०८८.	तुभँ हिंसायाम्	तुभ्	तुभ्य	तुभ्यति	मार डालना
१०८९.	पुषँ पुष्टौ	पुष्	पुष्य	पुष्यति	पुष्ट होना, बढ़ाना
१०९०.	शुषँ शोषणे	शुष्	शुष्य	शुष्यति	सूखना
१०९१.	तुषँ प्रीतौ	तुष्	तुष्य	तुष्यति	संतुष्ट होना, खुश होना
१०९२.	दुषँ वैकृत्ये	दुष्	दुष्य	दुष्यति	दूषित होना,
१०९३.	व्युषँ दाहे	व्युष्	व्युष्य	व्युष्यति	जलाना, भूँजना, अलग करना
१०९४.	व्युषँ विभागे वुसँ इति केचित्।	व्युष्	व्युष्य	व्युष्यति	विभाग करना
१०९५.	प्लुषँ दाहे	प्लुष्	प्लुष्य	प्लुष्यति	जलाना, भूँजना
१०९६.	प्लुषँ दाहे	प्लुष्	प्लुष्य	प्लुष्यति	जलाना, भूँजना

१०९७.	रुषँ हिंसायाम्	रुष्	रुष्य	रुष्यति	मारना, कष्ट देना
१०९८.	कुसँ संश्लेषणे	कुस्	कुस्य	कुस्यति	चिपकना, लगना
१०९९.	बुसँ उत्सर्गे	बुस्	बुस्य	बुस्यति	छोड़ना, त्यागना
११००.	मुसँ खण्डने	मुस्	मुस्य	मुस्यति	टुकड़े करना, चीरना
११०१.	ष्णुसुँ अदने अदर्शन इत्यपरे, आदान इत्येके	स्नुस्	स्नुस्य	स्नुस्यति	खाना, निगलना
११०२.	षुहँ चक्यर्थे	सुह्	सुह्य	सुह्यति	तृप्त होना,प्रसन्न होना
११०३.	द्रुहँ जिघांसायाम्	द्रुह्	द्रुह्य	द्रुह्यति	द्वेष करना
११०४.	मुहँ वैचित्ये	मुह्	मुह्य	मुह्यति	पागल होना
११०५.	ष्णुहँ उद्गिरणे	स्नुह्	स्नुह्य	स्नुह्यति	उल्टी करना

ऋदुपधधातव:

११०६.	सृजँ विसर्गे	सृज्	सृज्य	सृज्यते	छोड़ना, परित्याग करना
११०७.	वृतुँ वरणे (वावृतु इति केचित्)	वृत्	वृत्य	वृत्यते	वरण करना, स्वीकार करना
११०८.	नृतीँ गात्रविक्षेपे	नृत्	नृत्य	नृत्यति	नाचना, नर्तन करना
११०९.	ऋधुँ वृद्धौ	ऋध्	ऋध्य	ऋध्यति	बढ़ना
१११०.	गृधुँ अभिकाङ्क्षायाम्	गृध्	गृध्य	गृध्यति	ललचाना, चाहना
११११.	तृपँ प्रीणने	तृप्	तृप्य	तृप्यति	तृप्त होना
१११२.	दृपँ हर्षमोहनयो:	दृप्	दृप्य	दृप्यति	प्रसन्न होना
१११३.	भृशुँ अध:पतने	भृश्	भृश्य	भृश्यति	भ्रष्ट होना, पतित होना
१११४.	वृशँ वरणे	वृश्	वृश्य	वृश्यति	वरण करना, स्वीकार करना
१११५.	कृशँ तनूकरणे	कृश्	कृश्य	कृश्यति	कृश होना,पतला होना
१११६.	ञितृषाँ पिपासायाम्	तृष्	तृष्य	तृष्यति	प्यासा होना
१११७.	हृषँ तुष्टौ	हृष्	हृष्य	हृष्यति	प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना
१११८.	मृषँ तितिक्षायाम्	मृष्	मृष्य	मृष्यति/ते	सहन करना

शेषधातव:

१११९.	व्रीडँ चोदने	व्रीड्	व्रीड्य	व्रीड्यति	लज्जित होना,

	लज्जायाञ्च				प्रेरित करना
११२०.	राधोऽकर्मकाद् वृद्धावेव	राध्	राध्य	राध्यति	बढ़ना, सिद्ध होना
११२१.	पुष्पँ विकसने	पुष्प्	पुष्प्य	पुष्प्यति	फलना, फूलना, खिलना
११२२.	दीपीँ दीप्तौ	दीप्	दीप्य	दीप्यते	चमकना, प्रदीप्त होना
११२३.	ष्टीमँ आर्द्रीभावे	स्तीम्	स्तीम्य	स्तीम्यति	गीला होना
११२४.	पूरीँ आप्यायने	पूर्	पूर्य	पूर्यति	भरना, पूरना, पूरा करना
११२५.	तूरीँ गतित्वरणहिंसनयो:	तूर्	तूर्य	तूर्यति	शीघ्रता करना, हिंसा करना
११२६.	धूरीँ	धूर्	धूर्य	धूर्यति	हिंसा करना, जाना, चलना
११२७.	गूरीँ हिंसागत्यो:	गूर्	गूर्य	गूर्यति	हिंसा करना, जाना, चलना
११२८.	घूरीँ	घूर्	घूर्य	घूर्यति	नाश होना, जीर्ण होना
११२९.	जूरीँ हिंसावयोहान्यो:	जूर्	जूर्य	जूर्यति	नाश होना, जीर्ण होना
११३०.	शूरीँ हिंसास्तम्भनयो:	शूर्	शूर्य	शूर्यति	नष्ट होना,स्थिर होना
११३१.	चूरीँ दाहे	चूर्	चूर्य	चूर्यति	जलना
११३२.	काशृँ दीप्तौ	काश्	काश्य	काश्यते	प्रकाशित होना, चमकना
११३३.	वाशृँ शब्दे दिवादिराकृतिगण इति केचित्।	वाश्	वाश्य	वाश्यते	शब्द करना, आवाज करना

तुदादिगण: - तत्र विशेषधातव:

तुदादिभ्य: श: (३.१.७७) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर तुदादिगण के धातुओं से 'श' विकरण लगाया जाता है। अत: तुदादिगण के धातुओं में 'श' विकरण लगाकर सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

११३४.	रि गतौ	रि	रिय	रियति	जाना
११३५.	पि गतौ	पि	पिय	पियति	जाना
११३६.	धि धारणे	धि	धिय	धियति	जाना

११३७. क्षि निवासगत्योः क्षि क्षिय क्षियति जाना

११३८. गु पुरीषोत्सर्गे गु गुव गुवति मलत्याग करना

११३९. ध्रु गतिस्थैर्ययोः ध्रु ध्रुव ध्रुवति स्थिर होना, जाना

११४०. कुङ् शब्दे कु कुव कुवते आवाज करना

११४१. णू स्तवने नू नुव नुवति स्तुति करना, प्रशंसा करना

११४२. धू विधूनने धू धुव धुवति कँपाना, सम्भ्रान्त करना, हिलाना

११४३. षू प्रेरणे सू सुव सुवति प्रेरित करना

११४४. मृङ् प्राणत्यागे मृ म्रिय म्रियते मरना

११४५. पृङ् व्यायामे पृ प्रिय प्रियते किसी कार्य में लगे रहना

११४६. दृङ् आदरे दृ द्रिय द्रियते आदर होना

११४७. धृङ् अवस्थाने धृ ध्रिय ध्रियते स्थित होना, जीवित होना

११४८. कॄ विक्षेपे कॄ किर किरति बिखेरना, फैलाना

११४९. गॄ निगरणे गॄ गिर गिरति निगलना

११५०. षद्लृँ विशरण - गत्यवसादनेषु सद् सीद सीदति काटना, जाना, दुःखी होना

११५१. शद्लृँ शातने शद् शीय शीयते काटना, स्थित होना

११५२. इषँ इच्छायाम् इष् इच्छ इच्छति इच्छा करना

११५३. त्रुटँ छेदने त्रुट् त्रुट त्रुटति काटना, तोड़ना

११५४. ओँलस्जीँ व्रीडायाम् लज्ज् लज्ज लज्जते शर्माना, लज्जित होना

११५५. टुमस्जोँ शुद्धौ मज्ज् मज्ज मज्जति निर्मल करना, स्वच्छ करना

११५६. विच्छँ गतौ विच्छ् विच्छाय विच्छायति रुक रुक कर चलना, लड़खड़ाना

११५७. ओँव्रश्चूँ छेदने व्रश्च् वृश्च वृश्चति काटना, छेदना

११५८. प्रच्छँ ज्ञीप्सायाम् प्रच्छ् पृच्छ पृच्छति पूछना, जिज्ञासा करना

११५९. भ्रस्जँ पाके भ्रज्ज् भृज्ज भृज्जति/ते भूँजना, तलना, पकाना

११६०. व्यचँ व्याजीकरणे व्यच् विच विचति छल करना, ठगना, फँसाना

मुचाद्यन्तर्गणः

११६१. मुच्लृँ मोक्षणे मुच् मुञ्च मुञ्चति/ते छोड़ना, त्यागना, मुक्त करना

११६२. षिचँ क्षरणे सिच् सिञ्च सिञ्चति/ते प्रोक्षण करना, सींचना

११६३. विद्लृँ लाभे विद् विन्द विन्दति/ते प्राप्त करना, पाना

११६४. खिदँ परिघाते खिद् खिन्द खिन्दति/ते दुःख देना, सताना, रोकना

११६५. पिशँ अवयवे पिश् पिंश पिंशति टुकड़े टुकड़े करना,

११६६. कृतीँ छेदने कृत् कृन्त कृन्तति कतरना, काटना

११६७. लिपँ उपदेहे लिप् लिम्प लिम्पति/ते लीपना, विलेपन करना, बढ़ाना

११६८. लुप्लृँ छेदने लुप् लुम्प लुम्पति/ते काटना, छीनना, चुराना

तृम्फाद्यन्तर्गणः

शे तृम्फादीनां नुम्वाच्यः (वार्तिक) - तुदादिगण में ये जो 'तृम्फादि धातु' हैं। इनसे 'अपित् अर्थात् ङित् सार्वधातुक प्रत्यय' 'श' परे होने पर, **अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति** सूत्र से इनके 'न्' का लोप कीजिये।

लोप होने के बाद, **शे तृम्फादीनां नुम्वाच्यः (वार्तिक)** से इन्हें पुनः नुम् का आगम हो जाता है।

११६९. तृम्फँ तृप्तौ तृम्फ् तृम्फ तृम्फति शीतल होना, तृप्त होना

११७०. ऋम्फँ हिंसायाम् ऋम्फ् ऋम्फ ऋम्फति खटखटाना

११७१. दृम्फँ उत्क्लेशे दृम्फ् दृम्फ दृम्फति कष्ट भोगना

११७२. तुम्पँ हिंसायाम् तुम्प् तुम्प तुम्पति कोड़े से मारना

११७३. गुम्फँ ग्रन्थे गुम्फ् गुम्फ गुम्फति गूँथना

११७४. तुम्फँ हिंसायाम् तुम्फ् तुम्फ तुम्फति काटना, कतरना

११७५. उम्भँ पूरणे उम्भ् उम्भ उम्भति भरना, पूरना

११७६. शुम्भँ शोभार्थे शुम्भ् शुम्भ शुम्भति शोभा देना, अच्छा दिखना

११७७. तृन्हूँ हिंसार्थः तृंह् तृंह तृंहति मारना, हिंसा करना

अदुपधधातवः

११७८. त्वचँ संवरणे त्वच् त्वच त्वचति आच्छादित करना, ढाँकना

११७९. ओँलजीँ व्रीडायाम् लज् लज लजते लज्जित होना

११८०.	कडँ मदे	कड्	कड	कडति	अहङ्कारयुक्त होना
११८१.	चलँ विलसने	चल्	चल	चलति	चलना, गतिमान् होना

इदुपधधातव:

११८२.	लिखँ अक्षरविन्यासे	लिख्	लिख	लिखति	लिखना, कुरेदना, अङ्कित करना
११८३.	ओँविजीँ भयचलनयो:	विज्	उद्विज	उद्विजते	आपद्ग्रस्त करना
११८४.	विधँ विधाने	विध्	विध	विधति	क्रम से रखना
११८५.	क्षिपँ प्रेरणे	क्षिप्	क्षिप	क्षिपति/ते	भेजना, उड़ाना
११८६.	डिपँ क्षेपे	डिप्	डिप	डिपति	भेजना, निन्दा करना
११८७.	रिफँ कत्थनयुद्ध - निन्दाहिंसादानेषु। रिहँ इत्येके।	रिफ्	रिफ	रिफति	युद्ध करना,दोष लगाना
११८८.	किलँ श्वैत्यक्रीडनयो:	किल्	किल	किलति	सफेद होना, खेलना
११८९.	तिलँ स्नेहने	तिल्	तिल	तिलति	चिकना होना, तेल लगाना
११९०.	चिलँ वसने	चिल्	चिल	चिलति	कपड़े पहनना
११९१.	इलँ स्वप्नक्षेपणयो:	इल्	इल	इलति	नींद लेना, बिखेरना, भेजना
११९२.	विलँ संवरणे	विल्	विल	विलति	छिद्र करना, वस्त्र पहनना
११९३.	बिलँ भेदने	बिल्	बिल	बिलति	ढाँकना, छिपाना,खोदना
११९४.	णिलँ गहने	निल्	निल	निलति	कुछ का कुछ समझना
११९५.	हिलँ भावकरणे	हिल्	हिल	हिलति	नखरा करना
११९६.	मिलँ सङ्गमे	मिल्	मिल	मिलति/ते	मिलना, संयुक्त होना
११९७.	मिलँ श्लेषणे	मिल्	मिल	मिलति	स्पर्धा करना, मिलना
११९८.	शिलँ उञ्छे	शिल्	शिल	शिलति	एक एक करके बीनना
११९९.	षिलँ उञ्छे	सिल्	सिल	सिलति	एक एक करके बीनना
१२००.	दिशँ अतिसर्जने	दिश्	दिश	दिशति/ते	पारितोषिक देना, कहना, बोलना
१२०१.	रिशँ हिंसायाम्	रिश्	रिश	रिशति	मारने का यत्न करना, दु:ख देना

१२०२.	लिशँ गतौ	लिश्	लिश	लिशति	जाना, आना
१२०३.	विशँ प्रवेशने च	विश्	विश	विशति	घुसना, प्रवेश करना, भीतर जाना
१२०४.	मिषँ स्पर्धायाम्	मिष्	मिष	मिषति	झपकना, देखना

उदुपधधातव:

१२०५.	कुचँ सङ्कोचने	कुच्	कुच	कुचति	संकुचित होना, समाप्त होना
१२०६.	गुजँ शब्दे	गुज्	गुज	गुजति	शब्द करना, गुँजाना
१२०७.	रुजोँ भङ्गे	रुज्	रुज	रुजति	रोगी होना, कष्ट भोगना
१२०८.	भुजोँ कौटिल्ये	भुज्	भुज	भुजति	टेढ़ा होना, वक्रता करना
१२०९.	कुटँ कौटिल्ये	कुट्	कुट	कुटति	कुटिलता करना
१२१०.	पुटँ संश्लेषणे	पुट्	पुट	पुटति	आलिङ्गन करना बन्द करके रखना
१२११.	स्फुटँ विकसने	स्फुट्	स्फुट	स्फुटति	खिलना, विकसित होना
१२१२.	मुटँ आक्षेपमर्दनयो:	मुट्	मुट	मुटति	निन्दा करना, मसलना
१२१३.	तुटँ कलहकर्मणि	तुट्	तुट	तुटति	कलह करना, झगड़ना
१२१४.	चुटँ छेदने	चुट्	चुट	चुटति	काटना, तोड़ना
१२१५.	छुटँ छेदने	छुट्	छुट	छुटति	काटना, तोड़ना
१२१६.	घुटँ प्रतिघाते	घुट्	घुट	घुटति	रुकावट डालना, बाधा करना
१२१७.	लुटँ संश्लेषणे लुठँ इत्येके, लुडँ इत्यन्ये	लुट्	लुट	लुटति	लोटना, आलिङ्गन करना
१२१८.	जुडँ बन्धने जुट इत्येके	जुड्	जुड	जुडति	बाँधना, जोड़ना, जुटाना
१२१९.	कुडँ बाल्ये	कुड्	कुड	कुडति	बचपना करना
१२२०.	पुडँ उत्सर्गे	पुड्	पुड	पुडति	छोड़ना, त्यागना
१२२१.	तुडँ तोडने	तुड्	तुड	तुडति	रुकावट डालना
१२२२.	थुडँ संवरणे	थुड्	थुड	थुडति	आच्छादित करना, ढाँकना
१२२३.	स्थुडँ संवरणे खुडँ, छुडँ इत्येके	स्थुड्	स्थुड	स्थुडति	आच्छादित करना, ढाँकना
१२२४.	गुडँ रक्षायाम्	गुड्	गुड	गुडति	रक्षा करना

१२२५. स्फुडँ संवरणे	स्फुड्	स्फुड	स्फुडति	आच्छादित करना, ढाँकना
१२२६. चुडँ संवरणे	चुड्	चुड	चुडति	आच्छादित करना,ढाँकना
१२२७. ब्रुडँ संवरणे	ब्रुड्	ब्रुड	ब्रुडति	आच्छादित करना, ढाँकना
१२२८. क्रुडँ निमज्जने	क्रुड्	क्रुड	क्रुडति	डूबना
१२२९. जुडँ गतौ	जुड्	जुड	जुडति	जोड़ना, प्रबन्ध करना
१२३०. घुणँ भ्रमणे	घुण्	घुण	घुणति	घूमना, चक्कर खाना
१२३१. तुणँ कौटिल्ये	तुण्	तुण	तुणति	कुटिलता करना
१२३२. द्रुणँ हिंसागति-कौटिल्येषु	द्रुण्	द्रुण	द्रुणति	मारना, कुटिलता करना
१२३३. पुणँ कर्मणि शुभे	पुण्	पुण	पुणति	पुण्यकर्म करना
१२३४. मुणँ प्रतिज्ञाने	मुण्	मुण	मुणति	प्रतिज्ञा करना, वचन देना
१२३५. कुणँ शब्दोपकरणयो:	कुण्	कुण	कुणति	शब्द करना, स्पर्श करना
१२३६. तुदँ व्यथने	तुद्	तुद	तुदति/ते	पीडित करना
१२३७. णुदँ प्रेरणे	नुद्	नुद	नुदति/ते	प्रेरित करना, कहना
१२३८. णुदँ प्रेरणे	नुद्	नुद	नुदति	प्रेरित करना, कहना
१२३९. शुनँ गतौ	शुन्	शुन	शुनति	काटना
१२४०. छुपँ स्पर्शे	छुप्	छुप	छुपति	छूना, स्पर्श करना
१२४१. तुपँ हिंसायाम्	तुप्	तुप	तुपति	मारना, पीडित करना
१२४२. तुफँ हिंसायाम्	तुफ्	तुफ	तुफति	पीड़ित करना,कतरना, काटना
१२४३. गुफँ ग्रन्थे	गुफ्	गुफ	गुफति	गूँथना, गुम्फन करना, रचना
१२४४. लुभँ विमोहने	लुभ्	लुभ	लुभति	ललचाना, दीन होना
१२४५. उभँ पूरणे	उभ्	उभ	उभति	भरना, पूर्ण करना
१२४६. शुभँ शोभार्थे	शुभ्	शुभ	शुभति	शोभित होना, चमकना
१२४७. छुरँ छेदने	छुर्	छुर	छुरति	छेदना, काटना
१२४८. षुरँ ऐश्वर्यदीप्त्यो:	सुर्	सुर	सुरति	धनवान् होना, चमकना
१२४९. खुरँ छेदने	खुर्	खुर	खुरति	छेदना, काटना

१२५०. कुरँ शब्दे	कुर्	कुर	कुरति	शब्द करना
१२५१. क्षुरँ विलेखने	क्षुर्	क्षुर	क्षुरति	काटना,आकर्षित करना
१२५२. मुरँ संवेष्टने	मुर्	मुर	मुरति	लपेटना, आवेष्टित करना
१२५३. घुरँ भीमार्थशब्दयो:	घुर्	घुर	घुरति	भयानक शब्द करना
१२५४. पुरँ अग्रगमने	पुर्	पुर	पुरति	आगे आगे चलना
१२५५. गुरीँ उद्यमने	गुर्	गुर	गुरते	उद्योग करना
१२५६. स्फुरँ सञ्चलने	स्फुर्	स्फुर	स्फुरति	मालूम होना, दिखना, प्रकट होना
१२५७. स्फुलँ सञ्चलने	स्फुल्	स्फुल	स्फुलति	दिखाई देना, इकट्ठा करना
स्फुरँ स्फुरणे, स्फुलँ सञ्चलने इत्येके। स्फर इत्यन्ये।				
१२५८. रुशँ हिंसायाम्	रुश्	रुश	रुशति	मारना, कष्ट देना
१२५९. जुषीँ प्रीतिसेवनयो:	जुष्	जुष	जुषते	सेवन करना, प्रसन्न करना

ऋदुपध-धातु

१२६०. ऋचँ स्तुतौ	ऋच्	ऋच	ऋचति	प्रशंसा करना, आच्छादित करना
१२६१. सृजँ विसर्गे	सृज्	सृज	सृजति	रचना, बनाना
१२६२. कृडँ घनत्वे	कृड्	कृड	कृडति	गाढ़ा होना, सान्द्र होना
१२६३. भृडँ निमज्जने	भृड्	भृड	भृडति	गोद में घुसना, डूबना
१२६४. मृडँ सुखने	मृड्	मृड	मृडति	सुख देना,प्रसन्न करना
१२६५. पृडँ च	पृड्	पृड	पृडति	आनन्द करना, संतोष करना
१२६६. पृणँ प्रीणने	पृण्	पृण	पृणति	आनन्द करना, संतोष करना
१२६७. वृणँ प्रीणने	वृण्	वृण	वृणति	आनन्द करना, उत्साह करना
१२६८. मृणँ हिंसायाम्	मृण्	मृण	मृणति	दु:ख देना, पीड़ा देना
१२६९. चृतीँ हिंसाश्रन्थनयो:	चृत्	चृत	चृतति	पीड़ा करना, एकत्र करके बाँधना

१२७०.	तृपँ तृप्तौ फान्त इत्येके	तृप्	तृप	तृपति	तृप्त होना, तृप्त करना
१२७१.	दृपँ उत्क्लेशे फान्त इत्येके	दृप्	दृप	दृपति	पीड़ा करना, दुख देना
१२७२.	ऋफँ हिंसायाम्	ऋफ्	ऋफ	ऋफति	पीड़ा करना, छुरा भौंकना
१२७३.	दृभीँ ग्रन्थे	दृभ्	दृभ	दृभति	रचना, गूँथना, आरम्भ करना
१२७४.	स्पृशँ संस्पर्शने	स्पृश्	स्पृश	स्पृशति	स्पर्श करना, हाथ से लेना
१२७५.	मृशँ आमर्शने	मृश्	मृश	मृशति	स्पर्श करना, देखना
१२७६.	कृषँ विलेखने	कृष्	कृष	कृषति/ते	कृषि कर्म करना
१२७७.	ऋषीँ गतौ	ऋष्	ऋष	ऋषति	जाना, आना, मारना
१२७८.	वृहूँ उद्यमने बृहूँ इत्यन्ये	वृह्	वृह	वृहति	यत्न करना
१२७९.	तृहूँ हिंसायाम्	तृह्	तृह	तृहति	मारना, पीडा देना
१२८०.	स्तृहूँ हिंसायाम्	स्तृह्	स्तृह	स्तृहति	मार डालना, पीडा देना

शेष-धातवः

१२८१.	चर्चँ परिभाषणभर्त्सनयोः	चर्च्	चर्च	चर्चति	विचार विमर्श करना
१२८२.	उच्छीँ विवासे	उच्छ्	उच्छ	उच्छति	तोड़ना, काटना
१२८३.	ऋच्छँ गतीन्द्रिय - प्रलयमूर्तिभावेषु	ऋच्छ्	ऋच्छ	ऋच्छति	जाना, पाना, पहुँचना
१२८४.	मिच्छँ उत्क्लेशे	मिच्छ्	मिच्छ	मिच्छति	कष्ट भोगना, श्रम करना
१२८५.	उछिँ उञ्छे	उञ्छ्	उञ्छ	उञ्छति	कण कण बीनना
१२८६.	उब्जँ आर्जवे	उब्ज्	उब्ज	उब्जति	सीधा होना
१२८७.	जर्जँ परिभाषणभर्त्सनयोः	जर्ज्	जर्ज	जर्जति	गप्प मारना
१२८८.	झर्झँ परिभाषणभर्त्सनयोः	झर्झ्	झर्झ	झर्झति	झर्झर शब्द करना
१२८९.	उज्झँ उत्सर्गे	उज्झ्	उज्झ	उज्झति	परित्याग करना

१२९०.	घूर्णँ भ्रमणे	घूर्ण्	घूर्ण	घूर्णति	चक्कर खाना, घूमना

चुरादिगणः

चुरादिगण के धातुओं में **'सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्'** सूत्र से पहिले स्वार्थ में णिच् प्रत्यय लगाया जाता है। णिच् प्रत्यय लगाने के बाद ही इनसे कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर 'कर्तरि शप्' सूत्र से शप् विकरण लगाया जाता है। अतः यहाँ चुरादिगण के धातुओं में णिच्+शप् लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

चुरादिगण के धातुओं में पद का निर्णय

णिचश्च (१.३.७४) - चुरादिगण के धातुओं में, स्वार्थ में णिच् प्रत्यय लगाया जाता है। णिच् प्रत्यय लगने से, ये सारे धातु णिजन्त हो जाते है। जो धातु णिजन्त होते हैं, उनमें परस्मैपद या आत्मनेपद में से, कोई भी प्रत्यय लगाये जा सकते हैं। **चुरादिगण में कुछ धातु ऐसे हैं, जिनसे विकल्प से णिच्प्रत्यय लगता है और कुछ धातु ऐसे हैं, जिनसे नित्य णिच्प्रत्यय लगता है। पहिले नित्यणिजन्त चुरादि धातु बतला रहे हैं-**

नित्यणिजन्ताश्चुरादयः

अजन्तधातवः

१२९१.	ज्ञा नियोगे	ज्ञा	ज्ञापय	ज्ञापयति/ते	आज्ञा देना
१२९२.	च्यु सहने हसने चेत्येके	च्यु	च्यावय	च्यावयति-ते	हँसना, सहना
१२९३.	भुवोऽवकल्कने चिन्तने इत्येके	भू	भावय	भावयति-ते	मिश्रित करना, विचार करना
१२९४.	घृ प्रस्रवणे स्रावण इत्येके।	घृ	घारय	घारयति-ते	बहना, रिसना

अदुपधधातवः

१२९५.	रकँ आस्वादने	रक्	राकय	राकयति-ते	स्वाद लेना
१२९६.	लगँ आस्वादने	लग्	लागय	लागयति-ते	स्वाद लेना
१२९७.	गजँ शब्दे	गज्	गाजय	गाजयति-ते	शब्द करना
१२९८.	भजँ विश्राणने	भज्	भाजय	भाजयति-ते	देना, भोजन पकाना
१२९९.	व्रजँ मार्गसंस्कारगत्योः	व्रज्	व्राजय	व्राजयति-ते	पूरा करना,सिद्ध करना
१३००.	घटँ संघाते	घट्	घाटय	घाटयति-ते	इकट्ठा करना
१३०१.	चटँ भेदने	चट्	चाटय	चाटयति-ते	चटकाना, तोड़ना

१३०२. नटँ अवस्यन्दने नट् नाटय नाटयति-ते गिरना, नाचना

१३०३. शठँ असंस्कारगत्यो: शठ् शाठय शाठयति-ते ठीक न बनना, जाना

१३०४. श्वठँ असंस्कारगत्यो: श्वठ् श्वाठय श्वाठयति-ते ठीक न बनना, जाना
श्वठिँ इत्येके

१३०५. खडँ भेदने खड् खाडय खाडयति-ते टुकड़े करना

१३०६. तडँ आघाते तड् ताडय ताडयति-ते मारना, चोट करना

१३०७. लडँ उपसेवायाम् लड् लाडय लाडयति-ते पालन करना, लाड़ करना

१३०८. कणँ निमीलने कण् काणय काणयति-ते आँख मूँदना,बन्द करना

१३०९. श्रणँ दाने श्रण् श्राणय श्राणयति-ते देना, पूर्ण करना

१३१०. यतँ निकारोपस्कारयो: यत् यातय यातयति-ते अपमान करना

१३११. प्रथँ प्रख्याने प्रथ् प्राथय प्राथयति-ते फैलाना, बखान करना

१३१२. श्रथँ प्रयत्ने श्रथ् श्राथय श्राथयति-ते प्रयत्न करना
प्रस्थान इत्येके

१३१३. बधँ संयमने बध् बाधय बाधयति-ते बाँधना
बन्ध इति चान्द्रा:

१३१४. ह्लपँ ह्लप ह्लापय ह्लापयति-ते स्पष्ट बोलना
व्यक्तायां वाचि। क्लपँ इत्येके, ह्रप इत्यन्ये

१३१५. अमँ रोगे अम् आमय आमयति-ते रोगी होना

१३१६. चरँ संशये चर् चारय चारयति-ते संशय करना, विचार करना

१३१७. कलँ क्षेपे कल् कालय कालयति-ते फेंकना, आक्षेप करना

१३१८. चलँ भृतौ चल् चालय चालयति-ते पालना, बढ़ाना

१३१९. तलँ प्रतिष्ठायाम् तल् तालय तालयति-ते पूर्ण करना, स्थापित करना

१३२०. जलँ अपवारणे जल् जालय जालयति-ते जाल से ढाँकना, छुपाना

१३२१. क्षलँ शौचकर्मणि क्षल् क्षालय क्षालयति-ते स्वच्छ करना, धोना

१३२२. पशँ बन्धने पश् पाशय पाशयति-ते बाँधना

१३२३. लसँ शिल्पयोगे लस् लासय लासयति-ते कुशल होना

१३२४. त्रसँ धारणे त्रस् त्रासय त्रासयति-ते पकड़ना, जबरन लेना, डराना

१३२५. नसँ नस् नासय नासयति-ते दया करना, कतरना

स्नेहच्छेदापहरणेषु

ज्ञपादयो मित:

नान्ये मितोऽहेतौ (गणसूत्र) - णिच् प्रत्यय दो प्रकार का होता है। चुरादिगण में लगने वाला स्वार्थिक णिच्, और प्रयोज्य प्रयोजक व्यापार होने पर '**हेतुमति च**' सूत्र से लगने वाला णिच् प्रत्यय। जिन धातुओं में स्वार्थिक णिच् लगता है, उनमें केवल ज्ञप से चिञ् तक छह धातु ही मित् कहलाते हैं और णिच् परे होने पर इनकी उपधा को **ही** '**मितां ह्रस्व:**' सूत्र से ह्रस्व होता है, अन्य को नहीं।

१३२६. ज्ञपँ ज्ञाने ज्ञापने च ज्ञप ज्ञपय ज्ञपयति-ते बताना, ज्ञापित करना,

१३२७. यमँ च परिवेषणे यम् यमय यमयति-ते परिवेष्टन करना, घेरना

१३२८. चहँ परिकल्कने चह् चहय चहयति-ते ठगना, दम्भ करना
चपँ इत्येके

१३२९. रहँ त्यागे च रह् रहय रहयति-ते छोड़ना, अकेला करना

१३३०. बलँ प्राणने बल् बलय बलयति-ते शक्ति देना
चिञ् चयने चि चयय चययति-ते बटोरना, चुनना
चपयति-ते
चय चयति-ते

इदुपधधातव:

१३३१. तिजँ निशातने तिज् तेजय तेजयति-ते तेज करना

१३३२. स्मिटँ अनादरे स्मिट् स्मेटय स्मेटयति-ते अनादर करना
ष्मिङ् इत्येके।

१३३३. डिपँ क्षेपे डिप् डेपय डेपयति-ते आक्षेप करना

१३३४. इलँ प्रेरणे इल् एलय एलयति-ते प्रेरित करना

१३३५. तिलँ स्नेहने तिल् तेलय तेलयति-ते चिकना करना

१३३६. बिलँ भेदने बिल् बेलय बेलयति-ते बिल बनाना, भेद करना

१३३७. विलँ क्षेपे विल् वेलय वेलयति-ते आक्षेप करना

१३३८. श्लिषँ श्लेषणे श्लिष् श्लेषय श्लेषयति-ते आलिङ्गन करनाा

१३३९. पिसँ गतौ पिस् पेसय पेसयति-ते जाना

१३४०. ष्णिहँ स्नेहने स्नेह् स्नेहय स्नेहयति-ते चिकना करना
स्फिटँ इत्येके।

उदुपधधातव:

१३४१. मुचँ प्रमोचने मुच् मोचय मोचयति-ते छोड़ना, द्रव्यादि देना

	मोदने च				
१३४२.	चुटँ छेदने	चुट्	चोटय	चोटयति-ते	कतरना, चोट मारना
१३४३.	मुटँ संचूर्णने	मुट्	मोटय	मोटयति-ते	चूर्ण करना,मर्दन करना
१३४४.	स्फुटँ भेदने	स्फुट्	स्फोटय	स्फोटयति-ते	कतरना, छेदना
१३४५.	शुठँ आलस्ये	शुठ्	शोठय	शोठयति-ते	आलस्य करना
१३४६.	जुडँ प्रेरणे	जुड्	जोडय	जोडयति-ते	प्रेरणा करना, भेजना, चूर्ण करना
१३४७.	चुदँ संचोदने	चुद्	चोदय	चोदयति-ते	हाँकना, प्रेरित करना
१३४८.	मुदँ संसर्गे	मुद्	मोदय	मोदयति-ते	मिश्रित करना, एकत्र करना
१३४९.	ष्टुपँ समुच्छ्राये	स्तुप्	स्तोपय	स्तोपयति-ते	ढेर करना,राशि करना
१३५०.	चुरँ स्तेये	चुर्	चोरय	चोरयति-ते	चोरी करना
१३५१.	चुलँ समुच्छ्राये	चुल्	चोलय	चोलयति-ते	बढ़ाना, भिगोना
१३५२.	तुलँ उन्माने	तुल्	तोलय	तोलयति-ते	तौलना
१३५३.	दुलँ उत्क्षेपे	दुल्	दोलय	दोलयति-ते	उचकाना, उठाना
१३५४.	पुलँ महत्वे	पुल्	पोलय	पोलयति-ते	ढेर होना, बढ़ना
१३५५.	रुषँ रोषे, रुटँ इत्येके	रुष्	रोषय	रोषयति-ते	क्रोध करना

ऋदुपधधातव:

१३५६.	पृथँ प्रक्षेपे	पृथ	पर्थय	पर्थयति-ते	फेंकना, उड़ाना
१३५७.	कृपँ अवकल्कने	कल्प्	कल्पय	कल्पयति-ते	मिलाना, विचार करना,, सोचना
१३५८.	कॄतँ संशब्दने	कीर्त्	कीर्तय	कीर्तयति-ते	प्रसिद्ध करना

शेषधातव:

१३५९.	अर्कँ स्तवने, तपन इत्येके	अर्क्	अर्कय	अर्कयति-ते	तपाना, प्रशंसा करना
१३६०.	चक्कँ व्यथने	चक्क्	चक्कय	चक्कयति-ते	दु:ख देना
१३६१.	चुक्कँ व्यथने	चुक्क्	चुक्कय	चुक्कयति-ते	दु:ख देना, दु:ख होना
१३६२.	नक्कँ नाशने	नक्क्	नक्कय	नक्कयति-ते	उच्छेद करना
१३६३.	धक्कँ नाशने	धक्क्	धक्कय	धक्कयति-ते	नष्ट करना, हटाना
१३६४.	बुक्कँ भषणे	बुक्क्	बुक्कय	बुक्कयति-ते	भौंकना,
१३६५.	शुल्कँ अतिस्पर्शने	शुल्क्	शुल्कय	शुल्कयति-ते	उत्पत्ति कर देना

१३६६.	श्वल्कँ परिभाषणे	श्वल्क्	श्वल्कय	श्वल्कयति-ते	भाषण करना, बोलना
१३६७.	वल्कँ परिभाषणे	वल्क्	वल्कय	वल्कयति-ते	बोलना, असत्य बोलना
१३६८.	चर्चँ अध्ययने	चर्च्	चर्चय	चर्चयति-ते	पढ़ना, पदच्छेद करना
१३६९.	मर्चँ शब्दार्थ:	मर्च्	मर्चय	मर्चयति-ते	शब्द करना
१३७०.	पिच्छँ कुट्टने	पिच्छ्	पिच्छय	पिच्छयति-ते	कूटना, कुचलना
१३७१.	म्लेच्छँ अव्यक्तायां वाचि	म्लेच्छ्	म्लेच्छय	म्लेच्छयति-ते	अस्पष्ट बोलना
१३७२.	अर्जँ प्रतियत्ने	अर्ज्	अर्जय	अर्जयति-ते	उद्योग करना

अयमर्थान्तरेऽपि - द्रव्यमर्जयति।

१३७३.	ऊर्जँ बलप्राणनयो:	ऊर्ज्	ऊर्जय	ऊर्जयति-ते	शक्तिमान् होना, जिलाना
१३७४.	पूजँ पूजायाम्	पूज्	पूजय	पूजयति-ते	पूजा करना
१३७५.	मार्जँ शब्दे	मार्ज्	मार्जय	मार्जयति-ते	शब्द करना
१३७६.	कीटँ वर्णे	कीट्	कीटय	कीटयति-ते	रँगना, बाँधना
१३७७.	अट्टँ अनादरे	अट्ट्	अट्टय	अट्टयति-ते	अनादर करना, सूक्ष्म होना
१३७८.	कुट्टँ छेदनभर्त्सनयो:	कुट्ट्	कुट्टय	कुट्टयति-ते	कतरना, दोष लगाना
१३७९.	खट्टँ संवरणे	खट्ट्	खट्टय	खट्टयति-ते	आच्छादन करना
१३८०.	घट्टँ चलने	घट्ट्	घट्टय	घट्टयति-ते	स्थानान्तर करना
१३८१.	पुट्टँ अल्पीभावे	पुट्ट्	पुट्टय	पुट्टयति-ते	घटना, न्यून होना
१३८२.	चुट्टँ अल्पीभावे	चुट्ट्	चुट्टय	चुट्टयति-ते	कम होना
१३८३.	षट्टँ हिंसायाम्	सट्ट्	सट्टय	सट्टयति-ते	मार डालना
१३८४.	षुट्टँ अनादरे	सुट्ट्	सुट्टय	सुट्टयति-ते	अपमान करना
१३८५.	स्फिट्टँ हिंसायाम्	स्फिट्ट्	स्फिट्टय	स्फिट्टयति-ते	मार डालना, हिंसा करना
१३८६.	लुण्ठँ स्तेये	लुण्ठ्	लुण्ठय	लुण्ठयति-ते	चुराना
१३८७.	ईडँ स्तुतौ	ईड्	ईडय	ईडयति-ते	प्रशंसा करना
१३८८.	पीडँ अवगाहने	पीड्	पीडय	पीडयति-ते	प्रतिकूल होना, पीड़ा देना
१३८९.	चूर्णँ प्रेरणे	चूर्ण	चूर्णय	चूर्णयति-ते	खींचना, पीसना
१३९०.	चूर्णँ सङ्कोचने	चूर्ण्	चूर्णय	चूर्णयति-ते	प्रेरणा करना, आकर्षण करना
१३९१.	वर्णँ प्रेरणे	वर्ण्	वर्णय	वर्णयति-ते	बखानना, प्रकाशित करना
१३९२.	पुस्तँ	पुस्त्	पुस्तय	पुस्तयति-ते	आदर करना,

	आदरानादरयो:			अनादर करना
१३९३.	बुस्तँ आदरानादरयो:	बुस्त्	बुस्तय	बुस्तयति-ते	आदर सत्कार देना, धिक्कारना
१३९४.	मुस्तँ सङ्घाते	मुस्त्	मुस्तय	मुस्तयति-ते	ढेर करना, बटोरना
१३९५.	यत्रिँ संकोचे	यन्त्र्	यन्त्रय	यन्त्रयति-ते	यन्त्रणा देना
१३९६.	कुद्रिँ अनृतभाषणे	कुन्द्र	कुन्द्रय	कुन्द्रयति-ते	झूठ बोलना
१३९७.	आङः क्रन्दँ सातत्ये	आक्रन्द्	आक्रन्दय	आक्रन्दयति-ते	पुकारना, चिल्लाना
१३९८.	गुर्दँ पूर्वनिकेतने	गूर्द्	गूर्दय	गूर्दयति-ते	वास करना, आमन्त्रण करना
१३९९.	छर्दँ वमने	छर्द्	छर्दय	छर्दयति-ते	वमन करना,कै करना
१४००.	शब्दँ उपसर्गादा- विष्कारे भषणे च।	शब्द्	प्रतिशब्दय	प्रतिशब्दयति प्रतिशब्दयते	शब्द करना, भौंकना
१४०१.	श्वर्तँ गत्याम्	श्वर्त्	श्वर्तय	श्वर्तयति-ते	जाना, गड्ढे में गिरना
१४०२.	षूदँ क्षरणे	सूद्	सूदय	सूदयति-ते	झरना, बहना
१४०३.	वर्धँ छेदनपूरणयो:	वर्ध्	वर्धय	वर्धयति-ते	काटना, चीरना, भरना
१४०४.	शूर्पँ माने	शूर्प्	शूर्पय	शूर्पयति-ते	नापना, तौल करना, गिनना
१४०५.	षम्बँ सम्बन्धने	सम्ब्	सम्बय	सम्बयति-ते	संयोग करना, ढेर करना
१४०६.	शम्बँ सम्बन्धने	शम्ब्	शम्बय	शम्बयति-ते	ढेर करना, राशि करना
१४०७.	शुल्बँ माने	शुल्ब्	शुल्बय	शुल्बयति-ते	नापना, गिनना
१४०८.	श्वभ्रँ गत्याम्	श्वभ्र्	श्वभ्रय	श्वभ्रयति-ते	जाना, छेदना
१४०९.	पालँ रक्षणे	पाल्	पालय	पालयति-ते	पालन करना,
१४१०.	पूलँ सङ्घाते पूर्णँ इत्येके, पुण इत्यन्ये	पूल्	पूलय	पूलयति-ते	ढेर करना, बटोरना
१४११.	मूलँ रोहणे	मूल्	मूलय	मूलयति-ते	बीजारोपण करना, मजबूत जमाना
१४१२.	षान्त्वँ सम्प्रयोगे	सान्त्व्	सान्त्वय	सान्त्वयति-ते	समाधान करना
१४१३.	भूषँ अलङ्करणे	भूष्	भूषय	भूषयति-ते	सँवारना, अलंकृत करना
१४१४.	लूषँ हिंसायाम्	लूष्	लूषय	लूषयति-ते	हिंसा करना
१४१५.	पक्षँ परिग्रहे	पक्ष्	पक्षय	पक्षयति-ते	पक्षपात करना,
१४१६.	भक्षँ अदने	भक्ष्	भक्षय	भक्षयति-ते	खाना, भोजन करना
१४१७.	म्रक्षँ म्लेच्छने	म्रक्ष्	म्रक्षय	म्रक्षयति-ते	मिश्रित करना,

					अशुद्ध करना
१४१८.	लक्षँ दर्शनाङ्कनयो:	लक्ष्	लक्षय	लक्षयति-ते	संकेत लगाना
१४१९.	धूसँ कान्तिकरणे	धूस्	धूसय	धूसयति-ते	शोभित करना
१४२०.	पुंसँ अभिवर्धने	पुंस्	पुंसय	पुंसयति-ते	बढ़ना, वृद्धि होना
१४२१.	ब्रूसँ हिंसायाम्	ब्रूस्	ब्रूसय	ब्रूसयति-ते	मार डालना
१४२२.	बर्हँ हिंसायाम्	बर्ह्	बर्हय	बर्हयति-ते	मार डालना
१४२३.	अर्हँ पूजायाम्	अर्ह्	अर्हय	अर्हयति-ते	पूजा करना

नित्यणिजन्ता आकुस्मीया:

गणसूत्र - आकुस्मादात्मनेपदिन: - १४२४ से लेकर १४६२ तक जो धातु कहे जा रहे हैं, वे आकुस्मीय धातु हैं। ये आकुस्मीय धातु आत्मनेपदी ही होते हैं।

१४२४.	यु जुगुप्सायाम्	यु	यावय	यावयते	अपमान करना, निन्दा करना
१४२५.	गृ विज्ञाने	गृ	गारय	गारयते	समझना, जानना
१४२६.	शठँ श्लाघायाम्	शठ्	शाठय	शाठयते	प्रशंसा करना,स्तुति करना
१४२७.	मदँ तृप्तियोगे	मद्	मादय	मादयते	तृप्त करना, समाधान करना
१४२८.	डपँ सङ्घाते	डप्	डापय	डापयते	एकत्र करना, बटोरना
१४२९.	शमँ आलोचने	शम्	शामय	शामयते	प्रसिद्ध करना, जाहिर करना
१४३०.	स्यमँ वितर्के	स्यम्	स्यामय	स्यामयते	चिन्तन करना, मनन करना
१४३१.	गलँ स्रवणे	गल्	गालय	गालयते	टपकना
१४३२.	भलँ आभण्डने	भल्	भालय	भालयते	निरूपण करना
१४३३.	ललँ ईप्सायाम्	लल्	लालय	लालयते	इच्छा करना, स्थापित करना
१४३४.	स्पशँ ग्रहणसंश्लेषणयो:	स्पश्	स्पाशय	स्पाशयते	लेना, संयोग करना
१४३५.	चितँ संचेतने	चित्	चेतय	चेतयते	विचार करना
१४३६.	विदँ चेतनाख्या- ननिवासेषु	विद्	वेदय	वेदयते	जानना, अनुभव करना
१४३७.	डिपँ संघाते	डिप्	डेपय	डेपयते	मारना, एकत्र करना

१४३८. त्रुटँ छेदने	त्रुट्	त्रोटय	त्रोटयते	कतरना, तोड़ना
१४३९. वृषँ शक्तिबन्धने	वृष्	वर्षय	वर्षयते	शक्ति बढ़ाना
१४४०. निष्कँ परिमाणे	निष्क्	निष्कय	निष्कयते	नापना, तौलना, गिनना
१४४१. विष्कँ हिंसायाम्	विष्क्	विष्कय	विष्कयते	दु:ख देना, मारना
१४४२. तर्जँ तर्जने	तर्ज्	तर्जय	तर्जयते	निन्दा करना, डराना
१४४३. कूटँ आप्रदाने अवसादने इत्येके	कूट्	कूटय	कूटयते	मालूम न होना छल करना
१४४४ कुट्टँ प्रतापने	कुट्ट्	कुट्टय	कुट्टयते	गरम करना, कूटना
१४४५. कूणँ सङ्कोचे	कूण्	कूणय	कूणयते	संकोचित करना, ऐंठना
१४४६. तूणँ पूरणे	तूण्	तूणय	तूणयते	भरना, पूर्ण करना
१४४७ भ्रूणँ आशाविशङ्कयो:	भ्रूण्	भ्रूणय	भ्रूणयते	आशा करना, भरोसा करना
१४४८. बस्तँ अर्दने	बस्त्	बस्तय	बस्तयते	जाना, माँगना,मार डालना
१४४९. तत्रिँ कुटुम्बधारणे	तन्त्र्	तन्त्रय	तन्त्रयते	कुटुम्ब पोषण करना, फैलाना
१४५०. मत्रिँ गुप्तपरिभाषणे	मन्त्र्	मन्त्रय	मन्त्रयते	गुप्त भाषण करना, सलाह करना
१४५१. गन्धँ अर्दने	गन्ध्	गन्धय	गन्धयते	दु:ख देना, मार डालना
१४५२. मानँ स्तम्भने	मान्	मानय	मानयते	बन्द करना, गर्वीला होना
१४५३. कुस्मँ नाम्नो वा	कुस्म्	कुस्मय	कुस्मयते	अयोग्य कुत्सित
१४५४. गूरँ उद्यमने	गूर्	गूरय	गूरयते	प्रयत्न करना, भक्षण करना
१४५५. यक्षँ पूजायाम्	यक्ष्	यक्षय	यक्षयते	आराधना करना, सत्कार करना
१४५६. लक्षँ आलोचने	लक्ष्	लक्षय	लक्षयते	देखना, संकेत लगाना
१४५७. कुत्सँ अवक्षेपणे	कुत्स्	कुत्सय	कुत्सयते	तिरस्कार करना
१४५८. भर्त्सँ तर्जने	भर्त्स्	भर्त्सय	भर्त्सयते	धिक्कार करना

वा णिजन्ताश्चुरादय:

विशेष - चुरादिगण के भीतर आपको एक वर्ग में 'वैकल्पिक णिच् वाले धातु' मिलेंगे। इनमें जब णिच् प्रत्यय लगेगा, तब तो इनसे परस्मैपद या आत्मनेपद में से, कोई

भी प्रत्यय लग सकेंगे किन्तु जब इनसे णिच् न लगकर केवल शप् विकरण लगेगा, तब इनसे 'शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्' सूत्र से केवल परस्मैपद के प्रत्यय लगेंगे।

ये वैकल्पिक णिच् वाले धातु भी यदि 'अनुदात्तेत्' या 'ङित्' हों तब इनसे भी केवल आत्मनेपद के प्रत्यय लगेंगे, परस्मैपद के नहीं।

ये वैकल्पिक णिच् वाले धातु यदि 'स्वरितेत्' या 'ञित्' हों, तब इनसे परस्मैपद या आत्मनेपद में से, कोई भी प्रत्यय लग सकेंगे।

अब चुरादिगण के वे धातु बतला रहे हैं, जिनमें णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है। हम विचार करें कि इनमें क्यों विकल्प से णिच् होता है ?

धातुओं में इदित्करण का फल होता है, 'अनिदितां हल उपधाया: क्ङिति' से होने वाले उपधा के नकार के लोप को रोकना। यह नकारलोप चुरादिगण के धातुओं में सम्भव नहीं है, क्योंकि बीच में णिच् होने के कारण इनसे साक्षात् कोई कित्, ङित् प्रत्यय हो ही नहीं सकता। अत: चुरादिगण में यह इदित्करण व्यर्थ होकर ज्ञापन करता है कि चुरादिगण के ऐसे इदित् धातुओं से विकल्प से णिच् हो।

चिति - चिन्तयति, चिन्तति। किन्तु जिन इदित् धातुओं की उपधा में नकार नहीं है, वहाँ णिच् का विकल्प नहीं होता - यत्रि - यन्त्रयति।

इसी प्रकार धातुओं में उदित्करण का फल होता है, इनसे क्त्वा परे होने पर उसे 'उदितो वा' से विकल्प से इट् हो। किन्तु बीच में णिच् होने के कारण चुरादिगण के उदित् धातुओं से साक्षात् क्त्वा प्रत्यय हो ही नहीं सकता। अत: यह उदित्करण व्यर्थ होकर ज्ञापन करता है कि चुरादिगण के ऐसे उदित् धातुओं से विकल्प से णिच् हो।

दिवु - देवयति, देवति।

धातुओं में ईदित्करण का फल होता है, इनसे परे आने वाले निष्ठा प्रत्यय को 'श्वीदितो निष्ठायाम्' से विकल्प से इट् न हो। किन्तु बीच में णिच् होने के कारण चुरादिगण के उदित् धातुओं से साक्षात् निष्ठा प्रत्यय हो ही नहीं सकता। अत: यह ईदित्करण व्यर्थ होकर ज्ञापन करता है कि चुरादिगण के ऐसे ईदित् धातुओं से विकल्प से णिच् हो।

पूरी - पूरयति, पूरति।

१. वा णिजन्ता आकुस्मीया:

१४५९. दिवुँ परिकूजने	दिव्	देवय	देवयते देवति	दु:खी होना, शोक करना
१४६०. वञ्चुँ प्रलम्भने	वन्च्	वञ्चय	वञ्चयते वञ्चति	ठगना, फँसाना
१४६१. दशिँ दंशने	दंश्	दंशय	दंशयते	डंक मारने

			दंशति	जैसा बोलना, चमकना
१४६२. दसिँ दर्शनदंशनयोः	दंस्	दंसय	दंसयते दंसति	देखना, काटना, डसना

२. वा णिजन्ता आस्वदीयाः

आस्वदः सकर्मकात् (गणसूत्रम्) - स्वद को छोड़कर सारे आस्वदीय धातु सकर्मक हैं। जब ये सकर्मक होते हैं, तब इनसे णिच् होता है। जब ये अकर्मक होते हैं, तब इनसे णिच् नहीं होता। आङ्पूर्वक स्वद सकर्मक होता है, तब उससे णिच् होता है।

१४६३. चि भाषार्थः	चि	चायय चय	चाययति/ते चयति	प्रकाशित करना
१४६४. जि भाषार्थः	जि	जायय जय	जाययति/ते जयति	प्रकाशित करना
(जुचिँ) इत्येके		जुञ्च	जुञ्चयति/ते जुञ्चति	
१४६५. घटँ भाषार्थः	घट्	घाटय घट	घाटयति/ते घटति	चमकना, बोलना
१४६६. पटँ भाषार्थः	पट्	पाटय पट	पाटयति/ते पटति	चमकना, बोलना
१४६७. नटँ भाषार्थः	नट्	नाटय नट	नाटयति/ते नटति	चमकना, बोलना
१४६८. तडँ भाषार्थः	तड्	ताडय तड	ताडयति/ते तडति	चमकना, बोलना
१४६९. णदँ भाषार्थः	नद्	नादय नद	नादयति/ते नदति	चमकना, बोलना
१४७०. ष्वदँ आस्वादने स्वादँ इत्येके। अयं षोपदेशः	स्वद्	स्वाद स्वाद	स्वादयति/ते स्वादति स्वदति	स्वाद लेना
१४७१. दलँ विदारणे	दल्	दालय दल	दालयति/ते दलति	दलना, तोड़ना काटना कुचलना
१४७२. नलँ भाषार्थः	नल्	नालय नल	नालयति/ते नलति	चमकना, बोलना
१४७३. ग्रसँ ग्रहणे	ग्रस्	ग्रासय ग्रस	ग्रासयति/ते ग्रसति	घेर लेना, निगलना

१४७४. रुजँ हिंसायाम्	रुज्	रोजय रोज	रोजयति/ते रोजति	मारना, दुःखी करना
१४७५. पुटँ भाषार्थः	पुट्	पोटय पोट	पोटयति/ते पोटति	चमकना, बोलना
१४७६. रुटँ भाषार्थः	रुट्	रोटय रोट	रोटयति/ते रोटति	चमकना, बोलना
१४७७. लुटँ भाषार्थः	लुट्	लोटय लोट	लोटयति/ते लोटति	चमकना, बोलना
१४७८. पुथँ भाषार्थः	पुथ्	पोथय पोथ	पोथयति/ते पोथति	चमकना, बोलना
१४७९. कुपँ भाषार्थः	कुप्	कोपय कोप	कोपयति/ते कोपति	चमकना, बोलना
१४८०. गुपँ भाषार्थः	गुप्	गोपय गोप	गोपयति/ते गोपति	चमकना, बोलना
१४८१. पुषँ धारणे	पुष्	पोषय पोष	पोषयति/ते पोषति	धारण करना
१४८२. वृतुँ भाषार्थः	वृत्	वर्तय वर्त	वर्तयति/ते वर्तति	बोलना, चमकना
१४८३. वृधुँ भाषार्थः	वृध्	वर्धय वर्ध	वर्धयति/ते वर्धति	बोलना, चमकना
१४८४. तर्कँ भाषार्थः	तर्क्	तर्कय तर्क	तर्कयति/ते तर्कति	चमकना, बोलना
१४८५. लोकृँ भाषार्थः	लोक्	लोकय लोक	लोकयति/ते लोकति	चमकना, बोलना
१४८६. शीकँ भाषार्थः	शीक्	शीकय शीक	शीकयति/ते शीकति	चमकना, बोलना
१४८७. लोचृँ भाषार्थः	लोच्	लोचय लोच	लोचयति/ते लोचति	चमकना, बोलना
१४८८. रघिँ भाषार्थः	रन्घ्	रङ्घय रंघ	रङ्घयति-ते रङ्घति	चमकना, बोलना
१४८९. लघिँ भाषार्थः	लन्घ्	लङ्घय	लङ्घयति-ते	चमकना, बोलना

		लंघ	लङ्घति	
१४९०. लघिँ भाषार्थ:	लन्घ्	लङ्घय	लङ्घयति-ते	चमकना, बोलना
		लङ्घ	लङ्घति	
१४९१. विच्छँ भाषार्थ:	विच्छ्	विच्छायय	विच्छाययति-ते	चमकना, बोलना
		विच्छाय	विच्छायति	
१४९२. अजिँ भाषार्थ:	अञ्ज्	अञ्जय	अञ्जयति-ते	चमकना, बोलना
		अञ्ज	अञ्जति	
१४९३. तुजिँ भाषार्थ:	तुन्ज्	तुञ्जय	तुञ्जयति-ते	चमकना, बोलना
		तुञ्ज	तुञ्जति	
१४९४. पिजिँ भाषार्थ:	पिन्ज्	पिञ्जय	पिञ्जयति-ते	चमकना, बोलना
		पिञ्ज	पिञ्जति	
१४९५. भजिँ भाषार्थ:	भन्ज्	भञ्जय	भञ्जयति-ते	चमकना, बोलना
		भञ्ज	भञ्जति	
१४९६. लजिँ भाषार्थ:	लन्ज्	लञ्जय	लञ्जयति-ते	निन्दा करना,
		लञ्ज	लञ्जति	गाली देना, चमकना
१४९७. मिजिँ भाषार्थ:	मिन्ज्	मिञ्जय	मिञ्जयति-ते	मींजना, चमकना,
		मिञ्ज	मिञ्जति	
१४९८. लुजिँ भाषार्थ:	लुन्ज्	लुञ्जय	लुञ्जयति-ते	चमकना, बोलना
		लुञ्ज	लुञ्जति	
१४९९. घटिँ भाषार्थ:	घन्ट्	घण्टय	घण्टयति-ते	चमकना, बोलना
		घण्ट	घण्टति	
१५००. पुटिँ भाषार्थ:	पुन्ट्	पुण्ट्य	पुण्टयति-ते	चमकना, बोलना
		पुण्ट	पुण्टति	
१५०१. लडिँ भाषार्थ:	लन्ड्	लण्डय	लण्डयति-ते	चमकना, बोलना
		लण्ड	लण्डति	
१५०२. धूपँ भाषार्थ:	धूप्	धूपायय	धूपाययति-ते	चमकना, बोलना
		धूपाय	धूपायति	
१५०३. पूरीँ आप्यायने	पूर्	पूरय	पूरयति-ते	आनन्द करना
		पूर	पूरति	
१५०४. चीवँ भाषार्थ:	चीव्	चीवय	चीवयति-ते	चमकना, बोलना
		चीव	चीवति	
१५०५. कुशिँ भाषार्थ:	कुंश्	कुंशय	कुंशयति-ते	चमकना, बोलना

		कुंश	कुंशति	
१५०६. भृशिँ भाषार्थ:	भृंश्	भृंशय	भृंशयति-ते	चमकना, बोलना
		भृंश	भृंशति	
१५०७. दशिँ भाषार्थ:	दंश्	दंशय	दंशयति-ते	चमकना, बोलना
		दंश	दंशति	
१५०८. रुशिँ भाषार्थ:	रुंश्	रुंशय	रुंशयति-ते	चमकना, बोलना
		रुंश	रुंशति	
१५०९. कुसिँ भाषार्थ:	कुंस्	कुंसय	कुंसयति-ते	चमकना, बोलना
		कुंस	कुंसति	
१५१०. त्रसिँ भाषार्थ:	त्रंस्	त्रंसय	त्रंसयति-ते	बोलना, चमकना
		त्रंस	त्रंसति	
१५११. दसिँ भाषार्थ:	दंस्	दंसय	दंसयति-ते	चमकना, बोलना
		दंस	दंसति	
१५१२. पिसिँ भाषार्थ:	पिंस्	पिंसय	पिंसयति-ते	चमकना, बोलना
		पिंस	पिंसति	
१५१३. रुसिँ भाषार्थ:	रुंस्	रुंसय	रुंसयति-ते	चमकना, बोलना
		रुंस	रुंसति	
१५१४. अहिँ भाषार्थ:	अंह्	अंहय	अंहयति-ते	चमकना, बोलना
		अंह	अंहति	
१५१५. रहिँ भाषार्थ:	रंह्	रंहय	रंहयति-ते	चमकना, बोलना
		रंह	रंहति	
१५१६. बृहिँ भाषार्थ:	बृंह्	बृंहय	बृंहयति-ते	बढ़ना, चमकना,
		बृंह	बृंहति	
१५१७. महिँ भाषार्थ:	मंह्	मंहय	मंहयति-ते	चमकना, बोलना
		मंह	मंहति	
१५१८. बर्हँ भाषार्थ:	बर्ह्	बर्हय	बर्हयति-ते	चमकना, बोलना
		बर्ह	बर्हति	
१५१९. बल्हँ भाषार्थ:	बल्ह्	बल्हय	बल्हयति-ते	प्रकाशित होना, बोलना
		बल्ह	बल्हति	

३. वा णिजन्ता आधृषीया, युजादयो वा

आधृषाद् वा (गणसूत्रम्) - (१५२० - १५६४) इन आधृषीय धातुओं से विकल्प से णिच् होता है। जब णिच् न लगे, तब केवल शप् लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक

प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनते हैं। इन्हें युजादि धातु भी कहते हैं।

धातु				अर्थ
१५२०. ज्रि वयोहानौ	ज्रि	ज्रायय	ज्राययति-ते	वृद्ध होना, जीर्ण होना
		ज्रय	ज्रयति	
१५२१. मी गतौ	मी	मायय	माययति-ते	समझना, जानना
		मय	मयति	
१५२२. प्रीञ् तर्पणे	प्री	प्रीणय	प्रीणयति-ते	प्रीति करना, तृप्त करना
		प्रायय	प्राययति-ते	
		प्रय	प्रयति-ते	
१५२३. ली द्रवीकरणे	ली	लायय	लाययति-ते	पतला करना, गलाना
		लय	लयति	
१५२४. धूञ् कम्पने	धू	धूनय	धूनयति-ते	कँपाना
		धावय	धावयति-ते	
		धव	धवति-ते	
१५२५. भू प्राप्तौ	भू	भावय	भावयते	प्राप्त होना
आत्मनेपदी		भव	भवते	
णिच्सन्नियोगेनैवात्मनेपदमित्येके				
१५२६. वृञ् आवरणे	वृ	वारय	वारयति-ते	पसन्द करना, ढाँकना
		वर	वरति-ते	
१५२७. जॄ वयोहानौ	जॄ	जारय	जारयति-ते	वृद्ध होना, जीर्ण होना
		जर	जरति	
१५२८. वचँ परिभाषणे	वच्	वाचय	वाचयति-ते	बोलना, समझाना
		वच	वचति	
१५२९. श्रथँ मोक्षणे	श्रथ्	श्राथय	श्राथयति-ते	मुक्त करना
		श्रथ	श्रथति	
१५३०. वदँ सन्देशवचने	वद्	वादय	वादयति-ते	कहना, स्पष्ट बोलना
		स्वरितेत्, अनुदात्तेदित्येके	वद	वदति-वदते
१५३१. छदँ अपवारणे	छद्	छादय	छादयति-ते	हटाना, छिपाना, ढाँकना
स्वरितेत्		छद	छदयति-ते	
		छद	छदति-ते	
१५३२. आङः षदँ पद्यर्थे	आसद्	आसादय	आसादयति-ते	चढ़ाई करना, जाना
		आसीद	आसीदति	

धातु				अर्थ
१५३३. तनुँ	तन्	तानय	तानयति-ते	भरोसा करना,
श्रद्धोपकरणयो:,		तन	तनति	आश्रय देना
उपसर्गाच्च दैर्घ्ये,		चानय	चानयति-ते	
चनँ श्रद्धोपहननयो: इत्येके		चन	चनति	
१५३४. तपँ दाहे	तप्	तापय	तापयति-ते	जलना, जलाना
		तप	तपति	
१५३५. षहँ मर्षणे	सह्	साहय	साहयति-ते	सहन करना
		सह	सहति	
१५३६. रिचँ	रिच्	रेचय	रेचयति-ते	खाली करना, मिलाना
वियोजनसम्पर्चनयो:		रेच	रेचति	
१५३७. शिषँ असर्वोपयोगे	शिष्	शेषय	शेषयति-ते	शेष रखना
		शेष	शेषति	
१५३८. युजँ संयमने	युज्	योजय	योजयति-ते	संयत करना
		योज	योजति	
१५३९. जुषँ परितर्कणे	जुष्	जोषय	जोषयति-ते	विचार करना
		जोष	जोषति	
१५४०. पृचँ संयमने	पृच्	पर्चय	पर्चयति-ते	स्पर्श करना
		पर्च	पर्चति	
१५४१. मृजूँ	मृज्	मार्जय	मार्जयति-ते	स्वच्छ करना, धोना
शौचालङ्कारयो:		मार्ज	मार्जति	
१५४२. वृजीँ वर्जने	वृज्	वर्जय	वर्जयति-ते	छोड़ना, वर्जित करना
		वर्ज	वर्जति	
१५४३. छृदीँ संदीपने	छृद्	छर्दय	छर्दयति-ते	जलाना, प्रज्वलित
		छर्द	छर्दति	
१५४४. तृपँ तृप्तौ	तृप्	तर्पय	तर्पयति-ते	तृप्त करना,
सन्दीपने इत्येके		तर्प	तर्पति	प्रसन्न करना
१५४५.दृभँ सन्दर्भे	दृभ्	दर्भय	दर्भयति-ते	सन्दर्भ लगाना
		दर्भ	दर्भति	
१५४६. दृभीँ भये	दृभ्	दर्भय	दर्भयति-ते	डरना, सम्बन्ध लगाना
		दर्भ	दर्भति	
१५४७.धृषँ प्रसहने	धृष्	धर्षय	धर्षयति-ते	जीतना, पराभव करना
		धर्ष	धर्षति	

१५४८. मृषँ तितिक्षायाम् स्वरितेत्	मृष्	मर्षय	मर्षयति-ते	सहन करना
		मर्ष	मर्षति-ते	
१५४९. चीकँ आमर्षणे	चीक्	चीकय	चीकयति-ते	उतावला होना
		चीक	चीकति	
१५५०. शीकँ आमर्षणे	शीक्	शीकय	शीकयति-ते	स्पर्श करना
		शीक	शीकति	
१५५१. मार्गँ अन्वेषणे	मार्ग्	मार्गय	मार्गयति-ते	ढूँढ़ना, स्वच्छ करना
		मार्ग	मार्गति	
१५५२. अर्चँ पूजायाम्	अर्च्	अर्चय	अर्चयति-ते	पूजा करना
		अर्च	अर्चति	
१५५३. कठिँ शोके	कन्ठ	कण्ठय	कण्ठयति-ते	शोक करना, रोकना
		कण्ठ	कण्ठति	
१५५४. अर्दँ हिंसायाम् स्वरितेत्	अर्द्	अर्दय	अर्दयति-ते	मारना, वध करना
		अर्द	अर्दति-ते	
१५५५. ग्रन्थँ बन्धने	ग्रन्थ	ग्रन्थय	ग्रन्थयति-ते	बाँधना, गाँठ लगाना
		ग्रन्थ	ग्रन्थति	
१५५६. श्रन्थँ सन्दर्भे	श्रन्थ	श्रन्थय	श्रन्थयति-ते	रचना करना
		श्रन्थ	श्रन्थति	
१५५७. ग्रन्थँ सन्दर्भे	ग्रन्थ्	ग्रन्थय	ग्रन्थयति-ते	ग्रन्थ लिखना
		ग्रन्थ	ग्रन्थति	
१५५८. शुन्धँ शौचकर्मणि	शुन्ध्	शुन्धय	शुन्धयति-ते	शुद्ध होना
		शुन्ध	शुन्धति	
१५५९. मानँ पूजायाम्	मान्	मानय	मानयति-ते	सत्कार करना
		मान	मानति	
१५६०. आप्लृँ लम्भने स्वरितेदयमित्यन्ये	आप्	आपय	आपयति-ते	प्राप्त कराना, पाना
		आप	आपति-आपते	
१५६१. ईरँ क्षेपे	ईर्	ईरय	ईरयति-ते	जाना, हाँकना
		ईर	ईरति	
१५६२. हिसिँ हिंसायाम्	हिंस्	हिंसय	हिंसयति-ते	मारना, वध करना
		हिंस	हिंसति	
१५६३. अर्हँ पूजायाम्	अर्ह्	अर्हय	अर्हयति-ते	सत्कार करना

		अर्ह	अर्हति	
१५६४. गर्हँ विनिन्दने	गर्ह्	गर्हय	गर्हयति-ते	दोष लगाना,
		गर्ह	गर्हति	निन्दा करना

४. वा णिजन्ताश्चुरादयः

धातुओं में ञित्करण का फल होता है, 'स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले' सूत्र से उभयपद के प्रत्यय होना। किन्तु चुरादिगण के धातुओं से णिच् होने के कारण इनसे 'णिचश्च' सूत्र से ही उभयपद हो सकता था, अतः यह ञित्करण व्यर्थ होकर ज्ञापन करता है कि चुरादिगण के ऐसे ञित् धातुओं से विकल्प से णिच् हो।

१५६५. चिञ् चयने	चि	चयय	चययति-ते	चुनना, बटोरना
		चपय	चपयति-ते	
		चय	चयति-ते	

पॄ धातु में ह्रस्व ऋकार पढ़ते, तो भी 'अचो ञ्णिति' से वृद्धि होकर 'पारयति' रूप बन सकता था, अतः दीर्घकरण व्यर्थ होकर ज्ञापन करता है कि चुरादिगण के ऐसे धातुओं से विकल्प से णिच् हो।

१५६६. पॄ पूरणे	पॄ	पारय	पारयति-ते	भरना, पूर्ण करना
		पर	परति	

घुषिर् का इरित्करण ज्ञापन करता है कि इससे विकल्प से णिच् हो।

१५६७. घुषिँर् विशब्दने	घुष्	घोषय	घोषयति-ते	घोषित करना, बोलना
		घोष	घोषति	

५. वा णिजन्ता, इदितः, ईदितः, उदितः,

१५६८. टकिँ बन्धने	टन्क्	टङ्कय	टङ्कयति-ते	बाँधना, टाँकना
		टङ्क	टङ्कति	
१५६९. लिगिँ चित्रीकरणे	लिन्ग्	लिङ्गय	लिङ्गयति-ते	अनेक तरह का
		लिङ्ग	लिङ्गति	
१५७०. अञ्चुँ विशेषणे	अञ्च्	अञ्चय	अञ्चयति-ते	विशेषित करना
		अञ्च	अञ्चति	
१५७१. पचिँ विस्तारवचने	पन्च्	पञ्चय	पञ्चयति-ते	फैलना, पसारना
		पञ्च	पञ्चति	
१५७२. छजिँ कृच्छ्रजीवने	छन्ज्	छञ्जय	छञ्जयति-ते	तंगी से जीना
		छञ्ज	छञ्जति	
१५७३. तुजिँ हिंसाबला-	तुन्ज्	तुञ्जय	तुञ्जयति-ते	मार डालना, रहना

	दाननिकेतनेषु		तुञ्ज	तुञ्जति	
१५७४.	पिजिँ हिंसाबलादान-	पिन्ज्	पिञ्जय	पिञ्जयति-ते	मार डालना, रहना,
	निकेतनेषु		पिञ्ज	पिञ्जति	
१५७५.	चुटिँ छेदने	चुन्ट्	चुण्टय	चुण्टयति-ते	कतरना, नोचना
			चुण्ट	चुण्टति	
१५७६.	वटिँ विभाजने	वन्ट्	वण्टय	वण्टयति-ते	पृथक् करना, बाँटना
	वडिँ इति केचित्।		वण्ट	वण्टति / वण्डति	
१५७७.	शुठिँ शोषणे	शुन्ठ्	शुण्ठय	शुण्ठयति-ते	सूखना, सुखाना
			शुण्ठ	शुण्ठति	
१५७८.	कडिँ भेदने	कन्ड्	कण्डय	कण्डयति-ते	टुकड़े करना
			कण्ड	कण्डति	
१५७९.	कुडिँ रक्षणे	कुन्ड्	कुण्डय	कुण्डयति-ते	रक्षा करना, सँभालना
			कुण्ड	कुण्डति	
१५८०.	खडिँ खण्डने	खन्ड्	खण्डय	खण्डयति-ते	टुकड़े करना
			खण्ड	खण्डति	
१५८१.	खुडिँ खण्डने	खुन्ड्	खुण्डय	खुण्डयति-ते	चीरना, टुकड़े करना
			खुण्ड	खुण्डति	
१५८२.	पडिँ नाशने	पन्ड्	पण्डय	पण्डयति-ते	नष्ट करना
			पण्ड	पण्डति	
१५८३.	गुडिँ वेष्टने	गुन्ड्	गुण्डय	गुण्डयति-ते	घेरना, पीसना
	रक्षणे इत्येके।		गुण्ड	गुण्डति	
	कुठिँ इत्यन्ये। गुठिँ इत्यपरे।				
१५८४.	पिडिँ सङ्घाते	पिन्ड्	पिण्डय	पिण्डयति-ते	राशि करना
			पिण्ड	पिण्डति	
१५८५.	भडिँ कल्याणे	भन्ड्	भण्डय	भण्डयति-ते	शुद्ध करना
			भण्ड	भण्डति	
१५८६.	मडिँ भूषायाम्	मन्ड्	मण्डय	मण्डयति-ते	सँवारना
	हर्षे च		मण्ड	मण्डति	
१५८७.	ओँलडिँ उत्क्षेपणे	लन्ड्	लण्डय	लण्डयति-ते	ऊपर को फेंकना
	ओकारो धात्वयव इत्येके,		लण्ड	लण्डति	
१५८८.	स्फुडिँ परिहासे	स्फुन्ड्	स्फुण्डय	स्फुण्डयति-ते	विनोद करना

	स्फुटिँ इत्यपि		स्फुण्ड	स्फुण्डति	
१५८९.	चितिँ स्मृत्याम्	चिन्त्	चिन्तय	चिन्तयति-ते	चिन्ता करना, सोचना
			चिन्त	चिन्तति	
१५९०.	पथिँ गतौ	पन्थ्	पन्थय	पन्थयति-ते	जाना, घूमना
			पन्थ	पन्थति	
१५९१.	छदिँ संवरणे	छन्द्	छन्दय	छन्दयति-ते	ढाँकना
			छन्द	छन्दति	
१५९२.	मिदिँ स्नेहने	मिन्द्	मिन्दय	मिन्दयति-ते	चिकना होना
			मिन्द	मिन्दति	
१५९३.	शृधुँ प्रसहने	शृध्	शर्धय	शर्धयति-ते	सहना
			शर्ध	शर्धति	
१५९४.	चपिँ गत्याम्	चम्प्	चम्पय	चम्पयति-ते	जाना
			चम्प	चम्पति	
१५९५.	क्षपिँ क्षान्त्याम्	क्षम्प्	क्षम्पय	क्षम्पयति-ते	सहना, दया करना
			क्षम्प	क्षम्पति	
१५९६.	कुबिँ आच्छादने	कुम्ब्	कुम्बय	कुम्बयति-ते	आच्छादित करना
	कुभिँ इत्येके।		कुम्ब	कुम्बति	
१५९७.	चुबिँ हिंसायाम्	चुम्ब्	चुम्बय	चुम्बयति-ते	मार डालना
			चुम्ब	चुम्बति	
१५९८.	लुबिँ अदर्शने	लुम्ब्	लुम्बय	लुम्बयति-ते	अन्तर्हित होना
			लुम्ब	लुम्बति	
१५९९.	तुबिँ अदर्शने	तुम्ब्	तुम्बय	तुम्बयति-ते	अन्तर्हित होना, छुपाना
	अर्दन इत्येके।		तुम्ब	तुम्बति	
१६००.	जभिँ नाशने	जम्भ्	जम्भय	जम्भयति-ते	नष्ट करना
			जम्भ	जम्भति	
१६०१.	दिवुँ मर्दने	दिव्	देवय	देवयति-ते	मसलना
			देव	देवति	
१६०२.	उध्रसँ उञ्छे	उध्रस्	उध्रासय	उध्रासयति-ते	बीनना
	उकार इत्।		ध्रासय	ध्रासयति-ते	
	उकार धात्ववयव इत्येके।		उध्रस	उध्रसति	
			ध्रस	ध्रसति	
१६०३.	जसुँ ताडने	जस्	जासय	जासयति-ते	मारना

		जस	जसति	
१६०४. जसुँ हिंसायाम्	जस्	जासय	जासयति-ते	जान से मारना
		जस	जसति	
१६०५. जसिँ रक्षणे	जंस	जंसय	जंसयति-ते	संरक्षण करना
		जंस	जंसति	
१६०६. तसिँ अलङ्करणे	तंस्	तंसय	तंसयति-ते	सजाना, अलंकृत करना
		तंस	तंसति	
१६०७. पसिँ नाशने	पंस्	पंसय	पंसयति-ते	नष्ट करना
		पंस	पंसति	

अथ-अदन्ता:

चुरादिगण के भीतर जो अदन्त धातु हैं, इनके अन्त में 'अ' है। अभी तक के धातुओं की भाँति 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से इस 'अ' की इत् संज्ञा नहीं होती। इसलिये ये धातु 'अदन्त धातु' कहलाते हैं। अदन्त होने के कारण ये ये अनेकाच् ही होते हैं। इन धातुओं में ये बातें ध्यान देने योग्य हैं -

१. णिच् प्रत्यय परे होने पर अदन्त धातुओं के अन्तिम 'अ' का 'अतो लोप:' सूत्र से लोप कीजिये। 'अ' का लोप होने से ये धातु 'अग्लोपी' धातु कहलाते हैं।

जैसे - कथ + णिच् = कथ् + इ / अब देखिये कि अन्तिम 'अ' का 'अतो लोप:' सूत्र से लोप करने के बाद, धातु की 'उपधा' में 'अ' है। णिच् परे होने पर, इस उपधा के 'अ' को **'अत उपधाया:'** सूत्र से वृद्धि प्राप्त है। यह 'वृद्धि' मत कीजिये क्योंकि **'अच: परस्मिन् पूर्वविधौ'** सूत्र, 'अतो लोप:' सूत्र से लोप किये हुए, उस लुप्त 'अ' को स्थानिवत् कर देता है। अत: **'अत उपधाया:'** सूत्र को 'अतो लोप:' सूत्र से लोप किया हुआ अन्तिम 'अ' दिखता रहता है। इसलिये उपधा को 'वृद्धि' न करके, 'धातु + इ' को, ज्यों का त्यों जोड़ दिया जाता है। जैसे - कथ + णिच् - कथ् + इ = कथि / कथि + शप् - सार्वधातुकार्धधातुकयो: सूत्र से गुण करके - कथे + अ / एचोऽयवायाव: सूत्र से अय् आदेश करके - कथय् + अ - कथय = कथयति / इसी प्रकार - गण + णिच् - गण् + अ = गणि / गणि + शप् - गणय = गणयति आदि।

२. अन्तिम 'अ' का 'अतो लोप:' सूत्र से लोप करने के बाद जब धातु की 'उपधा' में 'लघु इक्' दिखे, तब इस उपधा के 'लघु इक्' को **'पुगन्तलघूपधस्य च'** सूत्र से जो गुण प्राप्त है, वह 'गुण' मत कीजिये, क्योंकि **'अच: परस्मिन् पूर्वविधौ'** सूत्र, 'अतो लोप:' सूत्र से लोप किये हुए, उस लुप्त 'अ' को स्थानिवत् कर देता है।

अत: **'पुगन्तलघूपधस्य च'** सूत्र को 'अतो लोप:' सूत्र से लोप किया हुआ, अन्तिम

'अ' दिखता रहता है। उपधा को 'गुण' न करके, अब 'धातु + इ' को, ज्यों का त्यों जोड़ दिया जाता है। जैसे -

क्षिप + णिच् - क्षिप् + अ = क्षिपि / क्षिपि + शप् - क्षिपय = क्षिपयति
गुण + णिच् - गुण् + अ = गुणि / गुणि + शप् - गुणय = गुणयति
मृग + णिच् - मृग् + अ = मृगि / मृगि + शप् - मृगय = मृगयते।

६. वा णिजन्ता अदन्ता:

जिन अदन्त धातुओं की उपधा में 'ह्रस्व अ' 'लघु इक्' अथवा 'गुरु स्वर' नहीं हैं, जो धातु 'अषोपदेश' नहीं हैं, तथा जो धातु, नामधातु भी नहीं हैं, उन धातुओं से णिच् प्रत्यय विकल्प से लगता है।

१६०८. वल्क दर्शने	वल्क	वल्कय	वल्कयति-ते	देखना
		वल्क	वल्कति	
१६०९. विष्क दर्शने	विष्क	विष्कय	विष्कयति-ते	देखना
		विष्क	विष्कति	
१६१०. दण्ड दण्डनिपातने	दण्ड	दण्डय	दण्डयति-ते	शासन करना
		दण्ड	दण्डति	
१६११. पर्ण हरितभावे	पर्ण	पर्णय	पर्णयति-ते	हरा करना
		पर्ण	पर्णति	
१६१२. वर्ण वर्णगुणक्रिया-	वर्ण	वर्णय	वर्णयति-ते	वर्णन करना
विस्तारवचनेषु		वर्ण	वर्णति	
१६१३. पत गतौ	पत	पतय	पतयति-ते	नीचे गिरना
वा णिजन्त:,		पातय	पातयति-ते	
वा अदन्त इत्येके		पत	पतति	
१६१४. कत्र शैथिल्ये	कत्र	कत्रय	कत्रयति-ते	ढीला करना
कर्त इत्येके		कत्र	कत्रति	
		कर्तय	कर्तयति-ते	
		कर्त	कर्तति	
१६१५. तुत्थ आवरणे	तुत्थ	तुत्थय	तुत्थयति-ते	परदा डालना,
		तुत्थ	तुत्थति	आच्छादित करना
१६१६. चित्र चित्रीकरणे	चित्र	चित्रय	चित्रयति-ते	तस्वीर खींचना
कदाचिद्दर्शने		चित्र	चित्रति	

१६१७. मूत्र प्रस्रवणे	मूत्र	मूत्रय	मूत्रयति-ते	मूत्र त्याग करना
		मूत्र	मूत्रति	
१६१८. छिद्र कर्णभेदने	छिद्र	छिद्रय	छिद्रयति-ते	छेद करना,
करणभेदने इत्येके		छिद्र	छिद्रति	कानों को छिदवाना
कर्ण इति धात्वन्तर इत्यपरे				
१६१९. मिश्र सम्पर्के	मिश्र	मिश्रय	मिश्रयति-ते	मिश्रित करना
		मिश्र	मिश्रति	
१६२०. रूक्ष पारुष्ये	रूक्ष	रूक्षय	रूक्षयति-ते	कठिन होना, सूखना
		रूक्ष	रूक्षति	

आगर्वीया:

गणसूत्र - आगर्वादात्मनेपदिन: - इस अदन्तवर्ग के भीतर पद गतौ (१६२१) से लेकर गर्व माने (१६३०) तक धातुओं को आगर्वीय धातु कहते हैं।

इन आगर्वीय धातुओं की विशेषता यह है कि इनसे आत्मनेपद के ही प्रत्यय लगते हैं, परस्मैपद के नहीं। अदन्त होने के कारण इन धातुओं की उपधा को कोई अङ्गकार्य भी नहीं होता। जैसे - गृह् + अय = गृहयते, कुह् + अय = कुहयते आदि।

वा णिजन्तोऽदन्त आगर्वीय आत्मनेपदी

१६२१. गर्व माने	गर्व	गर्वय	गर्वयते	अभिमान करना
(आगर्वीय:)		गर्व	गर्वते	

नित्यणिजन्ता अदन्ता आगर्वीया:

१६२२. पद गतौ	पद	पदय	पदयते	जाना, स्थानान्तरण करना
१६२३. कुह विस्मापने	कुह	कुहय	कुहयते	ऊगना, चमत्कार करना
१६२४. मृग अन्वेषणे	मृग	मृगय	मृगयते	शिकार करना, ढूँढ़ना
१६२५. गृह ग्रहणे	गृह	गृहय	गृहयते	लेना, स्वीकार करना
१६२६. अर्थ उपयाच्ञायाम्	अर्थ	अर्थय	अर्थयते	माँगना, याचना करना
		अर्थ	अर्थते	
१६२७. शूर विक्रान्तौ	शूर	शूरय	शूरयते	पराक्रमी होना, शूर होना
१६२८. वीर विक्रान्तौ	वीर	वीरय	वीरयते	शूरवीर होना,
				पराक्रम करना
१६२९. सत्र सन्तानक्रियायाम्	सत्र	सत्रय	सत्रयते	फैलाना, विस्तार करना
१६३०. स्थूल परिबृंहणे	स्थूल	स्थूलय	स्थूलयते	मोटा होना, स्थूल होना

शेषा अदन्ता:

१६३१. रच प्रतियत्ने	रच	रचय	रचयति-ते	रचना, ग्रन्थ बनाना
१६३२. लज प्रकाशने	लज	लजय	लजयति-ते	प्रकट होना, स्पष्ट होना
वटि लजि इत्येके				
१६३३. पट ग्रन्थे	पट	पटय	पटयति-ते	गूँथना, हिस्से में बाँटना
१६३४. वट ग्रन्थे	वट	वटय	वटयति-ते	गूँथना, हिस्से में बाँटना
१६३५. वट विभाजने	वट	वटय	वटयति-ते	विभाग करना, बाँटना
१६३६. शठ सम्यगवभाषणे	शठ	शठय	शठयति-ते	दुर्भाषण करना,
				मौन धारण करना
१६३७. श्वठ सम्यगवभाषणे	श्वठ	श्वठय	श्वठयति-ते	आशीर्वाद देना,
				शुभ बोलना
१६३८. गण संख्याने	गण	गणय	गणयति-ते	गिनना, नापना, मानना,
				समझना
१६३९. कथ वाक्यप्रबन्धे	कथ	कथय	कथयति-ते	कहना, व्याख्यान करना
१६४०. श्रथ दौर्बल्ये	श्रथ	श्रथय	श्रथयति-ते	दुर्बल होना
१६४१. गद देवशब्दे	गद	गदय	गदयति-ते	मेघ का गरजना
१६४२. छद अपवारणे	छद	छदय	छदयति-ते	हटाना, ढाँकना
१६४३. ध्वन शब्दे	ध्वन	ध्वनय	ध्वनयति-ते	शब्द करना,
				आवाज करना
१६४४. स्तन देवशब्दे	स्तन	स्तनय	स्तनयति-ते	मेघ की गर्जना होना
१६४५. व्यय वित्तसमुत्सर्गे	व्यय	व्ययय	व्यययति-ते	खर्च करना
१६४६. वर ईप्सायाम्	वर	वरय	वरयति-ते	इच्छा करना, चाहना
१६४७. स्वर आक्षेपे	स्वर	स्वरय	स्वरयति-ते	शब्द करना,
				आवाज करना
१६४८. कल गतौ,	कल	कलय	कलयति-ते	जाना,
संख्याने च				गिनना
१६४९. पष अनुपसर्गात् गतौ	पष	पषय	पषयति-ते	जाना, फाँस लगाना
१६५०. रस आस्वादनस्नेहनयो:	रस	रसय	रसयति-ते	स्वाद लेना
१६५०. वस निवासे	वस	वसय	वसयति-ते	निवास करना
१६५२. चह परिकल्कने	चह	चहय	चहयति-ते	पीसना, कूटना
१६५३. मह पूजायाम्	मह	महय	महयति-ते	सम्मान करना,
				पूजा करना

धातु				अर्थ
१६५४. रह त्यागे	रह	रहय	रहयति-ते	अकेला छोड़ना
१६५५. क्षिप प्रेरणे	क्षिप	क्षिपय	क्षिपयति-ते	फेंकना, भेजना
१६५६. सुख तत्क्रियायाम्	सुख	सुखय	सुखयति-ते	सुखी करना
१६५७. पुट संसर्गे	पुट	पुटय	पुटयति-ते	आलिङ्गन करना, बन्द करना
१६५८. कुण आमन्त्रणे	कुण	कुणय	कुणयति-ते	उपदेश करना
१६५९. गुण आमन्त्रणे चात्कूटोऽपि इति मैत्रेयः।	गुण	गुणय	गुणयति-ते	बुलाना, उपदेश करना
१६६०. कृप दौर्बल्ये	कृप	कृपय	कृपयति-ते	दुर्बल होना
१६६१. स्पृह ईप्सायाम्	स्पृह्	स्पृहय	स्पृहयति-ते	इच्छा करना
१६६२. अङ्क पदे लक्षणे च	अङ्क	अङ्कय	अङ्कयति-ते	चिह्न करना, टेढ़ा जाना
१६६३. धेक दर्शने	धेक	धेकय	धेकयति-ते	देखना
१६६४. दुःख तत्क्रियायाम्	दुःख	दुःखय	दुःखयति-ते	दुःखी करना
१६६५. अङ्ग पदे लक्षणे च	अङ्ग	अङ्गय	अङ्गयति-ते	चिह्न करना, टेढ़ा जाना
१६६६. सूच पैशुन्ये	सूच	सूचय	सूचयति-ते	सूचित करना, चुगली करना
१६६७. भाज पृथक्कर्मणि	भाज	भाजय	भाजयति-ते	टुकड़े-टुकड़े करना
१६६८. सभाज प्रीतिदर्शनयोः, प्रीतिसेवनयोरित्येके	सभाज	सभाजय	सभाजयति-ते	प्रीति करना, सम्मान करना
१६६९. कूट परितापे अयमामन्त्रणेऽपि इति मैत्रेयः। परिदाह इत्यन्ये	कूट	कूटय	कूटयति-ते	दुःख देना, पीड़ित करना, जलाना
१६७०. खेट भक्षणे खोट इति अन्ये। तृतीयान्त इत्येके।	खेट	खेटय	खेटयति-ते	खाना, भक्षण करना
१६७१. क्षोट क्षेपे	क्षोट	क्षोटय	क्षोटयति-ते	भेजना, फेंकना
१६७२. कूण सङ्कोचने	कूण	कूणय	कूणयति-ते	बुलाना, आमन्त्रित करना
१६७३. व्रण गात्रविचूर्णने	व्रण	व्रणय	व्रणयति-ते	क्षत करना, घाव करना
१६७४. केत श्रावणे निमन्त्रणे च, आमन्त्रणेऽपि	केत	केतय	केतयति-ते	आमन्त्रित करना, सलाह देना

धातु				अर्थ
१६७५. वात सुखसेवनयोः गतिसुखसेवनेषु इति केचित्	वात	वातय	वातयति-ते	सुखी होना, सेवा करना, जाना
१६७६. संकेत आमन्त्रणे	संकेत	संकेतय	संकेतयति-ते	आमन्त्रण करना, संकेत करना
१६७७. छेद द्वैधीकरणे	छेद	छेदय	छेदयति-ते	कतरना, छेद करना
१६७८. अन्ध दृष्ट्युपघाते उपसंहार इत्येके	अन्ध	अन्धय	अन्धयति-ते	अन्धा करना
१६७९. ऊन परिहाणे	ऊन	ऊनय	ऊनयति-ते	कम करना, घटाना
१६८०. स्तेन चौर्ये	स्तेन	स्तेनय	स्तेनयति-ते	चुराना, लूटना
१६८१. रूप रूपक्रियायाम्	रूप	रूपय	रूपयति-ते	बनाना, आकार देना
१६८२. लाभ प्रेरणे	लाभ	लाभय	लाभयति-ते	प्रेरणा करना,
१६८३. ग्राम आमन्त्रणे	ग्राम	ग्रामय	ग्रामयति-ते	बुलाना, उपदेश करना
१६८४. गोम उपलेपने	गोम	गोमय	गोमयति-ते	लीपना, पोतना
१६८५. भाम क्रोधने	भाम	भामय	भामयति-ते	घुड़कना, क्रोध करना,
१६८६. साम सान्त्वप्रयोगे	साम	सामय	सामयति-ते	सान्त्वना देना
१६८७. सङ्ग्राम युद्धे अनुदात्तेत्	सङ्ग्राम	सङ्ग्रामय	सङ्ग्रामयते	युद्ध करना
१६८८. स्तोम श्लाघायाम्	स्तोम	स्तोमय	स्तोमयति-ते	प्रशंसा करना
१६८९. कुमार क्रीडायाम्	कुमार	कुमारय	कुमारयति-ते	बालक के समान
१६९०. सार दौर्बल्ये	सार	सारय	सारयति-ते	दुर्बल होना
१६९१. पार कर्मसमाप्तौ	पार	पारय	पारयति-ते	कार्य पूर्ण करना, कर सकना
१६९२. तीर कर्मसमाप्तौ	तीर	तीरय	तीरयति-ते	पार लगाना, काम पूरा करना
१६९३. सूत्र वेष्टने	सूत्र	सूत्रय	सूत्रयति-ते	सूत से लपेटना, मुक्त करना
१६९४. पल्यूल लवनपवनयोः	पल्यूल	पल्यूलय	पल्यूलयति-ते	काटना, कतरना,
१६९५. वेल कालोपदेशे, कालइति पृथग् धातुरित्येके	वेल	वेलय	वेलयति-ते	काल गणना करना
१६९६. शील उपधारणे	शील	शीलय	शीलयति-ते	किसी भी विषय का अभ्यास करना

१६९७. गवेष मार्गणे गवेष गवेषय गवेषयति-ते ढूँढ़ना, पता करना
१६९८. अंस समाघाते अंस अंसय अंसयति-ते विभाग करना, बाँटना
१६९९. वास उपसेवायाम् वास वासय वासयति-ते वासित करना
१७००. निवास आच्छादने निवास निवासय निवासयति-ते आच्छादित करना

इसके बाद कुछ गणसूत्र दे रहे हैं -

हन्त्यर्थाश्च - सारे गणों में कहे गये सारे हन्त्यर्थक धातुओं से स्वार्थ में णिच् होता है, अत: इन सभी हिंसार्थक धातुओं को पक्ष में चुरादिगण का जानना चाहिये।

प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च / तत्करोति तदाचष्टे / तेनातिक्रामति / धातु रूपं च / आख्यानात्कृतस्तदाचष्टे कृल्लुक्प्रकृतिप्रत्ययापत्ति: प्रकृतिवच्च कारकम् / कर्तृकरणाद्धात्वर्थे। इनका विवेचन नामधातु वाले प्रकरण में है।

धातुओं का द्वितीयगणसमूह

(स्वादि, तनादि, क्र्यादि, अदादि, जुहोत्यादि, रुधादि)

स्वादिगण

स्वादिभ्य: श्नु: (३.१.७३) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर, स्वादिगण के धातुओं से **श्नु** विकरण लगाया जाता है।

स्वादिगण के अजन्तधातु

१७०१. चिञ् चयने चि चिनु चिनोति-ते चुनना
१७०२. षिञ् बन्धने सि सिनु सिनोति-ते बाँधना
१७०३. शिञ् निशाने शि शिनु शिनोति-ते तीक्ष्ण करना
१७०४. डुमिञ् प्रक्षेपणे मि मिनु मिनोति-ते फेंकना
१७०५. हि गतौ वृद्धौ च हि हिनु हिनोति भेजना, चलाना
१७०६. रि हिंसायाम् रि रिणु रिणोति मारना, हिंसा करना
१७०७. क्षि हिंसायाम् क्षि क्षिणु क्षिणोति मारना, हिंसा करना
अयं भाषायामपि। ऋक्षि इत्येके, रिक्षि इत्यन्ये।
१७०८. चिरि हिंसायाम् चिरि चिरिणु चिरिणोति मारना, हिंसा करना
१७०९. जिरि हिंसायाम् जिरि जिरिणु जिरिणोति मारना, हिंसा करना
१७१०. धुञ् कम्पने, धूञ् इत्येके धु धुनु धुनोति-ध्वे कँपाना, सम्भ्रान्त होना
१७११. टुदु उपतापे दु दुनु दुनोति दु:खी करना
१७१२. षुञ् अभिषवे सु सुनु सुनोति-ते निचोड़ना, निष्पीडन करना

१७१३. श्रु श्रवणे श्रु शृणु शृणोति सुनना
१७१४. कृञ् हिंसायाम् कृ कृणु कृणोति-ते हिंसा करना
१७१५. पृ प्रीतौ पृ पृणु पृणोति तृप्त करना
१७१६. स्पृ प्रीतिपालनयो: स्पृ स्पृणु स्पृणोति प्रसन्न करना
प्रीतिचलनयो: इत्यन्ये। स्मृ इत्येके। (पृ, स्पृ एतौ छान्दसौ। छन्दसि दृष्टानुविधिर्भवति।
१७१७. दृ हिंसायाम् दृ दृणु दृणोति हिंसा करना, मार डालना
१७१८. स्तृञ् आच्छादने स्तृ स्तृणु स्तृणोति-ते आच्छादित करना
१७१९. वृञ् वरणे वृ वृणु वृणोति-ते वरण करना, स्वीकार करना

स्वादिगणस्य हलन्तधातव:

१७२०. शक्लृँ शक्तौ शक् शक्नु शक्नोति कर सकना, समर्थ होना
१७२१. षघँ हिंसायाम् सघ् सघ्नु सघ्नोति हिंसा करना, मारना
१७२२. दघँ घातने पालने च दघ् दघ्नु दघ्नोति आधात करना, पालना
१७२३. चमुँ भक्षणे चम् चम्नु चम्नोति भोजन करना
१७२४. अशूँ व्याप्तौ सङ्घाते च अश् अश्नु अश्नुते प्राप्त करना
१७२५. अहँ व्याप्तौ अह् अह्नु अह्नोति व्याप्त होना
१७२६. तिकँ आस्कन्दने गतौ च तिक् तिक्नु तिक्नोति आक्रमण करना, जाना
१७२७. तिगँ आस्कन्दने गतौ च तिग् तिग्नु तिग्नोति आक्रमण करना, जाना
१७२८. ष्टिघँ आस्कन्दने स्तिघ् स्तिघ्नु स्तिघ्नुते घेर लेना
१७२९. ऋधुँ वृद्धौ ऋध् ऋध्नु ऋध्नोति बढ़ना
तृपँ प्रीणन इत्येके तृप् तृप्नु तृप्नोति तृप्त करना
१७३०. ञिधृषाँ प्रागल्भ्ये धृष् धृष्णु धृष्णोति गर्व करना
१७३१. राधँ संसिद्धौ राध् राध्नु राध्नोति निर्णय करना
१७३२. साधँ संसिद्धौ साध् साध्नु साध्नोति निर्णय करना
१७३३. आप्लृँ व्याप्तौ आप् आप्नु आप्नोति व्याप्त होना
१७३४. दाशृँ हिंसायाम् दाश् दाश्नु दाश्नोति देना, हिंसा करना

१७३५. दम्भुँ दम्भने	दम्भ्	दभ्नु	दभ्नोति	दम्भ करना
अक्षूँ व्याप्तौ	अक्ष्	अक्ष	अक्ष्णोति	व्याप्त करना
तक्षूँ तनूकरणे	तक्ष्	तक्ष्णु	तक्ष्णोति	छीलना, पतला करना

छन्दसि (गणसूत्रम्) - १. अह, दघ, चमु, दाश्, दृ, एते छान्दसा:। छन्दसि दृष्टानुविधिर्भवति। ये प्रयोगा छन्दसि दृश्यन्ते, तेषामेव रूपाणि साध्यानि, न सर्वेषाम्।

तनादिगण:

तनादिकृञ्भ्य: उ: (३.१.७९) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर तनादिगण के धातुओं में 'उ' विकरण लगाया जाता है। अत: तनादिगण के धातुओं में 'उ' विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

१७३६. तनुँ' विस्तारे	तन्	तनु	तनोति-ते	फैलाना, बढ़ाना
१७३७. क्षणुँ' हिंसायाम्	क्षण्	क्षणु	क्षणोति-ते	मार डालना, दु:ख देना
१७३८. षणुँ' दाने	सन्	सनु	सनोति-ते	देना, दान करना
१७३९. मनुँ अवबोधने	मन्	मनु	मनुते	जानना, समझना
१७४०. वनुँ याचने	वन्	वनु	वनुते	माँगना, याचना करना
१७४१. क्षिणुँ' हिंसायाम्	क्षिण्	क्षिणु	क्षिणोति-ते	मार डालना
		क्षेणु	क्षेणोति-ते	
१७४२. ऋणुँ' गतौ	ऋण्	ऋणु	ऋणोति-ते	जाना, प्राप्त करना
		अर्णु	अर्णोति-ते	
१७४३. घृणुँ' दीप्तौ	घृण्	घृणु	घृणोति-ते	चमकना, प्रकाशित
		घर्णु	घर्णोति-ते	होना
१७४४. तृणुँ' अदने	तृण्	तृणु	तृणोति-ते	घास खाना,चरना
		तर्णु	तर्णोति-ते	
१७४५. धिविँ प्रीणने	धिन्व्	धिनु	धिनोति	प्रसन्न करना
१७४६. कृविँ गतौ	कृण्व्	कृणु	कृणोति	जाना, हिंसा करना
हिंसाकरणयोश्च, अयं स्वादौ च।				
१७४७. डुकृञ् करणे	कृ	करु	करोति-ते	करना

क्रयादिगण:

क्रयादिभ्य: श्ना (ना) (३.१.८१) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर क्र्यादिगण के धातुओं में श्ना विकरण लगाया जाता है।

अत: क्र्यादिगण के धातुओं में श्ना विकरण लगाकर कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक

प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

अजन्तधातव: - तत्र प्वादि-अन्तर्गण:

पूञ् पवने (१७४८) इत्यत: गॄ शब्दे (१७६९) इत्यन्ता धातव: प्वादिधातव: सन्ति।

१७४८. पूञ् पवने	पू	पुना	पुनाति-ते	पवित्र करना, प्रारम्भ करना
१७४९. लूञ् छेदने	लू	लुना	लुनाति-ते	कतरना, चीरना
१. धूञ् कम्पने	धू	धुना	धुनाति-ते	कँपाना, हिलाना
१७५१. ज्या वयोहानौ	ज्या	जिना	जिनाति	जीर्ण होना, वृद्ध होना
१७५२. री गतिरेषणयो:	री	रिणा	रिणाति	जाना, पीड़ा करना
१७५३. ली श्लेषणे	ली	लिना	लिनाति	युक्त होना
१७५४. व्ली वरणे	व्ली	व्लिना	व्लिनाति	पसन्द करना, ढूँढ़ निकालना
१७५५. प्ली गतौ	प्ली	प्लिना	प्लिनाति	जाना
१७५६. स्तॄञ् आच्छादने	स्तॄ	स्तृणा	स्तृणाति-ते	ओढ़ना, वस्त्रादि से ढाँकना
१७५७. कॄञ् हिंसायाम्	कॄ	कृणा	कृणाति-ते	दु:ख देना, मार डालना
१७५८. कॄ हिंसायाम्	कॄ	कृणा	कृणाति	दु:ख देना
१७५९. वॄञ् वरणे	वॄ	वृणा	वृणाति-ते	पसन्द करना, वरण करना
१७६०. वॄ वरणे	वॄ	वृणा	वृणाति	पसन्द करना, भरना
भरण इत्येके (कॄ तथा वॄ का पाठ व्यर्थ है। एक ही बार होना चाहिये।)				
१७६१. शॄ हिंसायाम्	शॄ	शृणा	शृणाति	मार डालना, दु:ख देना
१७६२. पॄ पालनपूरणयो:	पॄ	पृणा	पृणाति	पालन करना, भरना
१७६३. भॄ भर्त्सने	भॄ	भृणा	भृणाति	तिरस्कार करना, निन्दा करना
१७६४. मॄ हिंसायाम्	मॄ	मृणा	मृणाति	मार डालना
१७६५. दॄ विदारणे	दॄ	दृणा	दृणाति	चीरना, फाड़ना
१७६६. जॄ वयोहानौ (झॄ)	जॄ	जृणा	जृणाति	वृद्ध होना, जीर्ण होना
१७६७. नॄ नये	नॄ	नृणा	नृणाति	ले जाना
१७६८. ॠ गतौ	ॠ	ऋणा	ऋणाति	जाना
१७६९. गॄ शब्दे	गॄ	गृणा	गृणाति	शब्द करना

इति प्वादय:

१७७०. ज्ञा अवबोधने	ज्ञा	जाना	जानाति	जानना, समझना
१७७१. षिञ् बन्धने	सि	सिना	सिनाति-ते	बाँधना, गूँथना
१७७२. व्री वरणे	व्री	व्रीणा	व्रीणाति	बीनना, ढाँकना
१७७३. भ्री भये	भ्री	भ्रीणा	भ्रीणाति	डरना
१७७४. क्षीष् हिंसायाम्	क्षी	क्षीणा	क्षीणाति	मार डालना, दु:ख देना
१७७५. प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च	प्री	प्रीणा	प्रीणाति-ते	प्रीति करना
१७७६. श्रीञ् पाके	श्री	श्रीणा	श्रीणाति-ते	पकाना, राँधना
१७७७. मीञ् बन्धने	मी	मीना	मीनाति-ते	बाँधना, गूँथना
१७७८. डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये	क्री	क्रीणा	क्रीणाति-ते	खरीदना
१७७९. स्कुञ् आप्रवणे	स्कु	स्कुना	स्कुनाति-ते	कूदना, फुदकना
१७८०. युञ् बन्धने	यु	युना	युनाति-ते	बाँधना
१७८१. क्नूञ् शब्दे	क्नू	क्नूना	क्नूनाति-ते	शब्द करना
१७८२. द्रूञ् हिंसायाम्	द्रू	द्रूणा	द्रूणाति-ते	हिंसा करना
१७८३. वृङ् सम्भक्तौ	वृ	वृणा	वृणीते	सेवा करना

हलन्तधातव:

अनिदित्-धातव:

१७८४. बन्धँ बन्धने	बन्ध्	बध्ना	बध्नाति	बाँधना
१७८५. श्रन्थँ विमोचनप्रतिहर्षयो:, सन्दर्भे च।	श्रन्थ्	श्रथ्ना	श्रथ्नाति	छोड़ना
१७८६. श्रन्थँ सन्दर्भे	श्रन्थ्	श्रथ्ना	श्रथ्नाति	रचना करना
(श्रन्थ का दो बार पाठ व्यर्थ है। एक ही बार होना चाहिये।)				
१७८७. मन्थँ विलोडने	मन्थ्	मथ्ना	मथ्नाति	बिलोना, मथना
१७८८. ग्रन्थँ सन्दर्भे	ग्रन्थ्	ग्रथ्ना	ग्रथ्नाति	रचना करना
१७८९. कुन्थँ संश्लेषणे संक्लेश इत्येके। कुथँ इति दुर्ग:।	कुन्थ्	कुथ्ना	कुथ्नाति	मिल के रहना
१७९०. ग्रहँ उपादाने	ग्रह्	गृह्णा	गृह्णाति-ते	लेना, स्वीकार करना
१७९१. खचँ भूतप्रादुर्भावे	खच्	खच्ञा	खच्ञाति	बाँधना, पुनर्जन्म
वान्तोऽमित्येके	खव्	खौना	खौनाति	होना
१७९२. हेठँ भूतप्रादुर्भावे हिठँ इत्यपि पाठ:	हेठ्	हेठ्णा	हेठ्णाति	जकड़ना, बाँधना
१७९३. मृडँ क्षोदे अयं सुखेऽपि।	मृड्	मृड्णा	मृड्णाति	चूर्ण करना, पीसना

१७९४. मृदँ क्षोदे	मृद्	मृद्ना	मृद्नाति	चूर्ण करना, पीसना
१७९५. गुधँ रोषे	गुध्	गुध्ना	गुध्नाति	क्रोध करना, गुस्सा करना
१७९६. क्षुभँ सञ्चलने	क्षुभ्	क्षुभ्ना	क्षुभ्नाति	मथना, क्षुब्ध करना
१७९७. णभँ हिंसायाम्	नभ्	नभ्ना	नभ्नाति	नष्ट करना
१७९८. तुभँ हिंसायाम्	तुभ्	तुभ्ना	तुभ्नाति	मार डालना
१७९९. क्लिशूँ विबाधने	क्लिश्	क्लिश्ना	क्लिश्नाति	क्लेश या दु:ख देना
१८००. अशँ भोजने	अश्	अश्ना	अश्नाति	खाना, भोगना
१८०१. कुषँ निष्कर्षे	कुष्	कुष्णा	कुष्णाति	बाहर निकलना
१८०२. इषँ आभीक्ष्ण्ये	इष्	इष्णा	इष्णाति	बार बार करना
१८०३. विषँ विप्रयोगे	विष्	विष्णा	विष्णाति	निकाल देना, अलग करना
१८०४. प्रुषँ स्नेहनसेवनपूरणेषु	प्रुष	प्रुष्णा	प्रुष्णाति	सौम्य होना,
१८०५. प्लुषँ स्नेहनसेवनपूरणेषु	प्लुष्	प्लुष्णा	प्लुष्णाति	सौम्य होना, स्निग्ध करना
१८०६. पुषँ पुष्टौ	पुष्	पुष्णा	पुष्णाति	पोषण करना,
१८०७. मुषँ स्तेये	मुष्	मुष्णा	मुष्णाति	चुराना, जकड़ना
१८०८. उध्रसँ उञ्छे	ध्रस्	ध्रस्ना	ध्रस्नाति	बीनना,
उकार इत्। उकार धात्वयव इति केचित्।		उध्रस्	उध्रस्नाति	एक एक करके चुनना

अत्र चत्वार: सौत्रधातव: सन्ति परस्मैपदिन: - स्तम्भु, स्तुम्भु, स्कम्भु, स्कुम्भु रोधने इत्येके। प्रथमतृतीयौ स्तम्भे इति माधव:। द्वितीयो निष्कोषणे। चतुर्थो धारणे, इत्यन्ये।

अदादिगण:

अदिप्रभृतिभ्य: शप: (२.४.७२) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर अदादिगण के सारे धातुओं से शप् विकरण लगाया है किन्तु '**अदिप्रभृतिभ्य: शप:**' सूत्र से उस शप् का लुक् करके कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये जाते हैं।

अजन्तधातव:

१८०९. ख्या प्रकथने	ख्या	ख्या	ख्याति	प्रसिद्ध करना,

				व्याख्यान करना
१८१०. दाप् लवने	दा	दा	दाति	काटना, कुतरना
१८११. द्रा कुत्सायाम् गतौ	द्रा	द्रा	द्राति	लज्जित होना, भाग जाना
१८१२. पा रक्षणे	पा	पा	पाति	रक्षा करना
१८१३. प्रा पूरणे	प्रा	प्रा	प्राति	भरना
१८१४. प्सा भक्षणे	प्सा	प्सा	प्साति	भक्षण करना
१८१५. भा दीप्तौ	भा	भा	भाति	चमकना, सुन्दर लगना
१८१६. मा माने अकर्मक:	मा	मा	माति	समाना
१८१७. या प्रापणे	या	या	याति	प्राप्त होना, जाना
१८१८. रा दाने	रा	रा	राति	देना, मिल जाना
१८१९. ला आदाने	ला	ला	लाति	ग्रहण करना
१८२०. वा गतिगन्धनयो:	वा	वा	वाति	जाना, वायु का बहना
१८२१. श्रा पाके	श्रा	श्रा	श्राति	पकाना, उबालना
१८२२. ष्णा शौचे	स्ना	स्ना	स्नाति	नहाना, शुद्ध होना
१८२३. गाङ् गतौ	गा	गा	गाते	जाना
१८२४. दरिद्रा दुर्गतौ	दरिद्रा	दरिद्रा	दरिद्राति	दरिद्र होना
१८२५. इण् गतौ	इ	इ	एति	जाना
१८२६. इक् स्मरणे नित्यमधिपूर्व: ।	इ	इ	अध्येति	स्मरण करना
१८२७. इङ् अध्ययने नित्यमधिपूर्व:	इ	इ	अधीते	अध्ययन करना
१८२८. वी गतिव्याप्ति- प्रजनकान्त्यसनखादनेषु	वी	वी ई	वेति एति	जाना, घेरना, गर्भवती होना
१८२९. शीङ् स्वप्ने	शी	शी	शेते	शयन करना, सोना
१८३०. यु मिश्रणेऽमिश्रणे च	यु	यु	यौति	मिश्रित करना,
१८३१. कु शब्दे	कु	कु	कौति	शब्द करना,
१८३२. टुक्षु शब्दे	क्षु	क्षु	क्षौति	छींकना, खखारना
१८३३. क्ष्णु तेजने	क्ष्णु	क्ष्णु	क्ष्णौति	पैना करना,
१८३४. णु स्तुतौ	नु	नु	नौति	स्तुति करना,
१८३५. द्यु अभिगमने	द्यु	द्यु	द्यौति	शत्रु पर आक्रमण करना
१८३६. षु प्रसवैश्वर्ययो:	सु	सु	सौति	उत्पन्न करना

१८३७. ष्णु प्रस्रवणे	स्नु	स्नु	स्नौति	टपकना, चूना
१८३८. ऊर्णुञ् आच्छादने	ऊर्णु	ऊर्णु	ऊर्णौति ऊर्णोति-ते	ढाँकना, आच्छादित
१८३९. रु शब्दे	रु	रु	रौति-रवीति	शब्द करना
१८४०. ष्टुञ् स्तुतौ	स्तु	स्तु	स्तौति-स्तुते स्तवीति	प्रशंसा, स्तुति करना
१८४१. ह्नुङ् अपनयने	ह्नु	ह्नु	ह्नुते	छिपना, लुकना
१८४२. ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि	ब्रू	ब्रू	ब्रवीति-ब्रूते	कहना, बोलना
१८४३. षूङ् प्राणिगर्भविमोचने	सू	सू	सूते	जनना, गर्भ धारण करना
१८४४. जागृ निद्राक्षये	जागृ	जागृ	जागर्ति	जागना

अदादिगणस्य हलन्तधातव:

विकरण का लुक् होने से इन धातुओं में सन्धि होगी, अत: इन हलन्त धातुओं को अन्त्य वर्ण के क्रम से दे रहे हैं।

१८४५. वचँ परिभाषणे	वच्	वच्	वक्ति	बोलना, समझाना
१८४६. पृचीँ सम्पर्चने	पृच्	पृच्	पृक्ते	स्पर्श करना, छूना
१८४७. मृजूँ शुद्धौ	मृज्	मृज्	मार्ष्टि	धोना, सँवारना,
१८४८. णिजिँ शुद्धौ	निंज्	निंज्	निङ्क्ते	स्वच्छ करना,
१८४९. पिजिँ वर्णे	पिंज्	पिंज्	पिङ्क्ते	रँगना, चमकीला करना

सम्पर्चन इत्येके उभयत्र इत्यन्ये। अवयव इत्येके।
अव्यक्ते शब्दे इति इतरे। पृजि इत्येके।

१८५०. शिजिँ अव्यक्ते शब्दे	शिंज्	शिंज्	शिङ्क्ते	अस्पष्ट शब्द बोलना
१८५१. वृजीँ वर्जने	वृज्	वृच्	वृक्ते	छोड़ना, वर्जित करना
१८५२. ईडँ स्तुतौ	ईड्	ईड्	ईट्टे	प्रशंसा करना
१८५३. षस्तिँ स्वप्ने	संस्त्	संस्त्	संस्ति	सोना, आलस्य करना
१८५४. अदँ भक्षणे	अद्	अद्	अत्ति	खाना, नष्ट करना
१८५५. विदँ ज्ञाने	विद्	विद्	वेत्ति	समझना, जानना
१८५६. हनँ हिंसागत्यो:	हन्	हन्	हन्ति	मार डालना, प्राप्त करना, जाना
१८५७. ईरँ गतौ कम्पने च	ईर्	ईर्	ईर्ते	जाना, काँपना

१८५८. वशँ कान्तौ, अयं छान्दस:।	वश्	वश्	वष्टि	इच्छा करना
१८५९. ईशँ ऐश्वर्ये	ईश्	ईश्	ईष्टे	स्वामी होना
१८६०. द्विषँ' अप्रीतौ	द्विष्	द्विष्	द्वेष्टि-द्विष्टे	द्वेष करना
१८६१. चक्षिँङ् व्यक्तायां वाचि। अयं दर्शनेऽपि।	चक्ष्	चक्ष्	चष्टे	स्पष्ट बोलना
१८६२. वसँ आच्छादने	वस्	वस्	वस्ते	वस्त्र पहनना, ओढ़ना
१८६३. आसँ उपवेशने	आस्	आस्	आस्ते	बैठना, उपस्थित होना
१८६४. आङ: शासुँ इच्छायाम्	आशास्	आशास्	आशास्ते	आशा करना
१८६५. कसिँ गतिशासनयो:	कंस्	कंस्	कंस्ते	जाना, नष्ट करना
१८६६. णिसिँ चुम्बने	निंस्	निंस्	निंस्ते	चूमना
१८६७. षसँ स्वप्ने, अयं छान्दस:।	सस्	सस्	सस्ति	सोना, आलस्य करना
१८६८. असँ भुवि	अस्	अस्	अस्ति	होना, रहना
१८६९. लिहँ' आस्वादने	लिह्	लिह्	लेढि-लीढे	चाटना, चखना
१८७०. दिहँ' उपचये	दिह्	दिह्	देग्धि-दिग्धे	बढ़ना, जमाना,
१८७१. दुहँ' प्रपूरणे	दुह्	दुह्	दोग्धि-दुग्धे	दूध निकालना, दुहना

अदादिगणस्य रुदाद्यन्तर्गण:

१८७२. रुदिर् अश्रुविमोचने	रुद्	रुद्	रोदिति	रोना
१८७३. अनँ प्राणने	अन्	अन्	अनिति	जीवित रहना
१८७४. ञिष्वपँ शये	स्वप्	स्वप्	स्वपिति	सोना
१८७५. श्वसँ प्राणने	श्वस्	श्वस्	श्वसिति	श्वास लेना
१८७६. जक्षँ भक्षहसनयो:	जक्ष्	जक्ष्	जक्षिति	खाना, हँसना

अदादिगणस्य जक्षाद्यन्तर्गण:

जक्षँ भक्षहसनयो:	जक्ष्	जक्ष्	जक्षिति	खाना, हँसना
१८७७. दीधीङ् दीप्तिदेवनयो:	दीधी	दीधी	दीधीते	चमकना, पीड़ा करना
१८७८. वेवीङ् वेतिना तुल्ये। इमौ छान्दसौ।	वेवी	वेवी	वेवीते	जाना, सरकना
१८७९. चकासृँ दीप्तौ	चकास्	चकास्	चकास्ति	चमकना, प्रकाशित होना

१८८०. शासुँ अनुशिष्टौ	शास्	शास्	शास्ति	आज्ञा देना

१८८१. चर्करीतं च (गणसूत्रम्) चर्करीतम् इति यङ्लुगन्तस्य पूर्वाचार्याणां संज्ञा।

रुधादिगण:

रुधादिभ्य: श्नम् (३.१.७८) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर रुध ादिगण के धातुओं से श्नम् विकरण लगाया जाता है।

मिदचोऽन्यात् पर: (१.१.४७) - श्नम् मित् प्रत्यय है। मित् प्रत्यय जिससे भी लगता है, उसके अन्तिम अच् के बाद ही वह बैठता है। अत: मित् होने के कारण यह 'श्नम्' विकरण धातु के अन्तिम अच् के बाद लगेगा। यथा - रुध् - रुणध्।

श्नान्नलोप: (६.४.२३) - यदि इस श्नम् के बाद न् हो तो उसका लोप होता है। यथा - इन्ध् - इनन्ध् / श्नम् के बाद वाले न् का लोप करके - इनध् / इसी प्रकार - अञ्ज् - अनञ्ज् / श्नम् के बाद वाले न् का लोप करके - अनज्। इसी प्रकार भञ्ज् - भनञ्ज् / श्नम् के बाद वाले न् का लोप करके - भनज् आदि।

श्नसोरल्लोप: (६.४.१११) - जब रुधादिगण के धातुओं के बाद अपित् अर्थात् ङित् सार्वधातुक प्रत्यय आता है, तब श्नम् के 'अ' का लोप हो जाता है।

यथा - रुणध् + त: = रुन्ध् + त: / भिनद् + त: = भिन्द् + त:। इसलिये यहाँ ध्यान दीजिये कि रुधादिगण में सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये दो - दो प्रकार के अङ्ग बने हुए हैं। इनमें से जो पहला है जिसमें श्नम् प्रत्यय पूरा दिख रहा है, अर्थात् रुणध् आदि, उसी में आप पित् सार्वधातुक प्रत्यय लगाइये और जिसमें श्नम् के अ का लोप हो गया है, अर्थात् रुन्ध् आदि, उसमें आप अपित् सार्वधातुक प्रत्यय अर्थात् ङित् सार्वधातुक प्रत्यय लगाइये।

ध्यान दें कि जो तञ्चू, अञ्जू, भञ्जो, आदि धातुओं में ञ् दिख रहा है, वह वस्तुत: न् ही है, जो कि अनुस्वार, परसवर्ण होकर ञ् बन गया है। अत: प्रक्रिया के आरम्भ में ही वह असिद्ध होकर न् बन जायेगा। अत: सुविधा हेतु हमने उसे न् ही लिख दिया है।

१८८२. विचिँर् पृथग्भावे	विच्	विनच्	विन्च्	विनक्ति	पृथक् करना
				विङ्क्ते	छूटना, अलग अलग होना
१८८३. तञ्चूँ सङ्कोचने	तन्च्	तनच्	तन्च्	तनक्ति	संकुचित होना
१८८४. रिचिँर् विरेचने	रिच्	रिणच्	रिन्च्	रिणक्ति	खाली करना
				रिङ्क्ते	दस्त होना
१८८५. पृचीँ सम्पर्के	पृच्	पृणच्	पृन्च्	पृणक्ति	स्पर्श करना,

					संयोग करना
१८८६. युजिँर् योगे	युज्	युनज्	युन्ज्	युनक्ति युङ्क्ते	जुड़ना,मिलाना एकत्र करना
१८८७. भुजँ पालनाभ्यवहारयो:	भुज्	भुनज्	भुन्ज्	भुनक्ति भुङ्क्ते	पालन करना , भोजन करना
१८८८. अञ्जूँ व्यक्तिम्रक्षण - कान्तिगतिषु	अन्ज्	अनज्	अन्ज्	अनक्ति	सराहना, विख्यात करना, जाना, लीपना, प्रकाशित करना चुपड़ना
१८८९. भञ्जोँ आमर्दने	भन्ज्	भनज्	भन्ज्	भनक्ति	नष्ट करना, तोड़ना
१८९०. ओँविजीँ भयचलनयो:	विज्	विनज्	विन्ज्	विनक्ति	विपति में पड़ना आपद्ग्रस्त होना, भय से काँपना
१८९१. वृजीँ वर्जने	वृज्	वृणज्	वृन्ज्	वृणक्ति	छोड़ना, वर्जित करना
१८९२. कृतीँ वेष्टने	कृत्	कृणत्	कृन्त्	कृणत्ति	घेरना, वेष्टित करना
१८९३. छिदिँर् द्वैधीकरणे	छिद्	छिनद्	छिन्द्	छिनत्ति छिन्ते	छिन्न भिन्न करना, काटना
१८९४. भिदिँर् विदारणे	भिद्	भिनद्	भिन्द्	भिनत्ति भिन्ते	चीरना, तोड़ना
१८९५. विदँ विचारणे	विद्	विनद्	विन्द्	विन्ते	मनन करना, विचार करना
१८९६. उन्दीँ क्लेदने	उन्द्	उनद्	उन्द्	उनत्ति	गीला होना
१८९७. खिदँ दैन्ये	खिद्	खिनद्	खिन्द्	खिन्ते	खिन्न होना, दीनता प्रकट करना
१८९८. उँच्छृदिँर् दीप्तिदेवनयो:	छृद्	छृणद्	छृन्द्	छृणत्ति छृन्ते	चमकना, प्रकाशित

					होना
१८९९. उँतृदिँर् हिंसानादरयो:	तृद्	तृणद्	तृन्द्	तृणत्ति तृन्ते	मार डालना दु:ख देना, अवज्ञा करना
१९००. क्षुदिँर् सम्पेषणे	क्षुद्	क्षुणद्	क्षुन्द्	क्षुणत्ति क्षुन्ते	कूटना, पीसना
१९०१. रुधिँर् आवरणे	रुध्	रुणध्	रुन्ध् रुन्धे	रुणद्धि	रोकना, घेरना
१९०२. ञिइन्धीँ दीप्तौ	इन्ध्	इनध्	इन्ध्	इन्धे	प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना
१९०३. शिष्लृँ विशेषणे	शिष्	शिनष्	शिन्ष्	शिनष्टि	अलग करना
१९०४. पिष्लृँ संचूर्णने	पिष्	पिनष्	पिन्ष्	पिनष्टि	चूर्ण करना, पीसना
१९०५. हिसिँ हिंसायाम्	हिंस्	हिनस्	हिन्स्	हिनस्ति	मारना, दु:ख देना
१९०६. तृहँ हिंसायाम्	तृह्	तृणह्	तृन्ह्	तृणेढि	मार डालना

जुहोत्यादिगण:

जुहोत्यादिभ्य: श्लु: (२.४.७५) - कर्त्रर्थक सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर जुहोत्यादिगण के सारे धातुओं से '**कर्तरि शप्**' सूत्र से शप् विकरण लगाया है किन्तु '**जुहोत्यादिभ्य: श्लु:**' सूत्र से उसका श्लु (लोप) हो जाता है।

उसके बाद '**श्लौ**'(६.१.१०) सूत्र से धातु को द्वित्व होता है। द्वित्व करने की विधि जुहोत्यादिगण के धातुरूप बनाते समय दी गई है। उसी विधि से द्वित्व करके यहाँ कर्त्रर्थक तिङ्, कृत् सार्वधातुक प्रत्ययों के लिये अङ्ग बनाये गये हैं।

भृञादि धातु - डुभृञ्, माङ् तथा ओहाङ्, ये तीन धातु भृञादि धातु कहलाते हैं। इनके अभ्यास को **भृञामित्** (७.४.७६) सूत्र से 'इ' हो जाता है। ऋ, पृ के अभ्यास को **अर्तिपिपर्त्योश्च** (७.४.७७) सूत्र से इ हो जाता है। घृ, हृ धातु छान्दस हैं। इनके अभ्यास को **बाहुलकात्** 'इ' हो जाता है।

अजन्तधातव:

१९०७. माङ् माने शब्दे च	मा	मिमा	मिमीते	नापना, तौलना
१९०८. ओँहाङ् गतौ	हा	जिहा	जिहीते	जाना, चलना

१९०९.	गा स्तुतौ	गा	जिगा	जिगाति	प्रशंसा करना,
	(अयं छान्दस:)				सराहना करना
१९१०.	ओँहाक् त्यागे	हा	जहा	जहाति	छोड़ना
१९११.	डुदाञ् दाने	दा	ददा	ददाति-दत्ते	देना, सौंपना
१९१२.	डुधाञ्	धा	दधा	दधाति-धत्ते	धारण करना
	धारणपोषणयो: दाने इत्यप्येके				
१९१३.	कि ज्ञाने	कि	चिकि	चिकेति	जाना, समझना
	(अयं छान्दस:)				
१९१४.	ञिभी भये	भी	बिभी	बिभेति	डरना, घबराना
१९१५.	ह्री लज्जायाम्	ह्री	जिह्री	जिह्रेति	शरमाना, लज्जित होना
१९१६.	हु दानादनयो:	हु	जुहु	जुहोति	देना, यज्ञ करना, खाना
	आदाने चेत्येके				
१९१७.	डुभृञ् धारणपोषणयो:	भृ	बिभृ	बिभर्ति-बिभृते	धारण करना
१९१८.	सृ गतौ	सृ	ससृ	ससर्ति	जाना, सरकना
१९१९.	घृ क्षरणदीप्त्यो:	घृ	जिघृ	जिघर्ति	टपकना, चमकना
१९२०.	हृ प्रसह्यकरणे	हृ	जिहृ	जिहर्ति	बल प्रयोग करना
१९२१.	ऋ गतौ	ऋ	इयृ	इयर्ति	जाना, फैलना
	सृ-घृ-हृ-ऋ-प्रभृतयश्छान्दसा: ।				
१९२२.	पॄ पालनपूरणयो:	पॄ	पिपॄ	पिपर्ति	पालन पोषण करना

जुहोत्यादिगणस्य हलन्तधातव:

१९२३.	भसँ भर्त्सनदीप्त्यो:	भस्	बभस्	बभस्ति	चमकना, दोष लगाना
१९२४.	धनँ धान्ये	धन्	दधन्	दधन्ति	उत्पन्न होना, फलना
	(अयं छान्दस:)				
१९२५.	जनँ जनने	जन्	जजन्	जजन्ति	उत्पन्न होना
	(अयं छान्दस:)				
१९२६.	धिषँ शब्दे	धिष्	दिधिष्	दिधेष्टि	शब्द करना
	(अयं छान्दस:)				

निजाद्यन्तर्गण:

१९२७.	णिजिँर्	निज्	नेनिज्	नेनेक्ति	स्वच्छ करना
	शौचपोषणयो:			नेनिक्ते	शुद्ध करना, पालना

१९२८.	विजिँर् पृथग्भावे	विज्	वेविज्	वेवेक्ति	अलग अलग करना
	पृथग्भाव: पृथक्करणम् ।			वेविक्ते	विवेक करना
१९२९.	विष्लृँ व्याप्तौ	विष्	वेविष्	वेवेष्टि	व्यापना, फैलना
	व्याप्ति: सम्बन्ध:			वेविष्टे	प्रसृत होना
१९३०.	तुरँ त्वरणे	तुर्	तुतुर्	तुतोर्ति	जल्दी करना
	(अयं छान्दस:)				

कण्ड्वादिगण:

१९३१.	सुख तत्क्रियायाम्	सुख	सुख्य	सुख्यति	सुखी होना
१९३२.	दु:ख तत्क्रियायाम्	दु:ख	दु:ख्य	दु:ख्यति	दु:खी होना
	सुखं दु:खमनुभवतीत्यर्थ:				
१९३३.	लिट अल्पकुत्सनयो:	लिट	लिट्य	लिट्यति	कम करना
					निन्दा करना
१९३४.	लाट जीवने	लाट	लाट्य	लाट्यतिजीना	
१९३५.	गद्गद वाक्स्खलने	गद्गद	गद्गद्य	गद्गद्यति	गद्गद स्वर में बोलना,
					गला भरना
१९३६.	अगद नीरोगत्वे	अगद	अगद्य	अगद्यति	स्वस्थ करना
१९३७.	वेद धौर्त्ये स्वप्ने च	वेद	वेद्य	वेद्यति	धूर्तता करना, सोना
१९३८.	मगध परिवेष्टने	मगध	मगध्य	मगध्यति	लपेटना, घेरना
१९३९.	इषुध शरधारणे	इषुध	इषुध्य	इषुध्यति	बाण धारण करना
१९४०.	कुषुभ क्षेपे	कुषुभ	कुषुभ्य	कुषुभ्यति	आक्षेप करना
१९४१.	तरण गतौ	तरण	तरण्य	तरण्यति	जाना
१९४२.	चरण गतौ	चरण	चरण्य	चरण्यति	जाना, चलना
१९४३.	वरण गतौ	वरण	वरण्य	वरण्यति	जाना, चलना
१९४४.	चुरण चौर्ये	चुरण	चुरण्य	चुरण्यति	चुराना
१९४५.	तुरण त्वरायाम्	तुरण	तुरण्य	तुरण्यति	जल्दबाजी करना
१९४६.	भुरण	भुरण	भुरण्य	भुरण्यति	धारण पोषण करना
	धारणपोषणयो:				
१९४७.	सपर पूजायाम्	सपर	सपर्य	सपर्यति	पूजा करना
१९४८.	अरर आराकर्मणि	अरर	अरर्य	अरर्यति	चाबुक मारना,
					प्रेरित करना
१९४९.	अम्बर संवरणे	अम्बर	अम्बर्य	अम्बर्यति	भरना,

				आच्छादित करना
१९५०. संवर संवरणे	संवर	संवर्य	संवर्यति	भरना, आच्छादित करना
१९५१. लेखा विलासे स्खलने च अदन्तोऽयमित्येके अदन्तत्वे	लेखा	लेखाय	लेखायति लेख्यति	स्खलित होना विलास करना
१९५२. रेखा श्लाघासादनयो:	रेखा	रेखाय	रेखायति	श्लाघा करना, पाना
१९५३. लेला दीप्तौ	लेला	लेलाय	लेलायति	चमकना,प्रकाशित होना
१९५४. मेधा आशुग्रहणे	मेधा	मेधाय	मेधायति	शीघ्र समझना
१९५५. एला विलासे	एला	एलाय	एलायति	विलास करना
१९५६. केला विलासे	केला	केलाय	केलायति	विलास करना
१९५७. खेला विलासे, इला इत्येके	खेला	खेलाय	खेलायति	विलास करना
१९५८. महीङ् पूजायाम्	मही	महीय	महीयते	पूजित होना सम्मानित होना
१९५९. हृणीङ् रोषणे-लज्जायाम् च	हृणी	हृणीय	हृणीयते	लज्जित होना क्रोध करना
१९६०. मन्तु अपराधे चन्द्रस्तु ञितमाह -	मन्तु	मन्तूय	मन्तूयति मन्तूयते	अपराध करना
१९६१. वल्गु पूजामाधुर्ययो:	वल्गु	वल्गूय	वल्गूयति	पूजा करना
१९६२. कण्डूञ् गात्रविघर्षणे	कण्डू	कण्डूय	कण्डूयति कण्डूयते	खुजलाना
१९६३. असुँ उपतापे	असू	असूय	असूयति	ईर्ष्या करना
असू असूञ् इत्येके	अस्	अस्य	अस्यति	ईर्ष्या करना
१९६४. इरँञ् ईर्ष्यायाम्	इर्	ईर्य	इर्यति	ईर्ष्या करना
१९६५. इरज् ईर्ष्यायाम्	इरज्	इरज्य	इरज्यति	ईर्ष्या करना
१९६६. भिषज् चिकित्सायाम्	भिषज्	भिषज्य	भिषज्यति	चिकित्सा करना
१९६७. भिष्णज् उपसेवायाम्	भिष्णज्	भिष्णज्य	भिष्णज्यति	चिकित्सा करना
१९६८. लेट् धौर्त्ये स्वप्ने	लेट्	लेट्य	लेट्यति	धूर्तता करना, सोना

पूर्वभावे च, दीप्तावित्येके				
१९६९. लोट् धौर्त्ये, स्वप्ने पूर्वभावे च, दीप्तावित्येके	लोट्	लोट्य	लोट्यति	धूर्तता करना, सोना
१९७०. इरस् ईर्ष्यायाम्	इरस्	इरस्य	इरस्यति	ईर्ष्या करना
१९७१. उषस् प्रभातीभावे	उषस्	उषस्य	उषस्यति	प्रभात होना, सुबह होना
१९७२. तन्तस् दु:खे	तन्तस्	तन्तस्य	तन्तस्यति	दु:खी होना
१९७३. पम्पस् दु:खे	पम्पस्	पम्पस्य	पम्पस्यति	दु:खी होना
१९७४. द्रवस् परितापपरिचरणयो:	द्रवस्	द्रवस्य	द्रवस्यति	पिघलना, परिचर्या करना
१९७५. तिरस् अन्तर्धौ	तिरस्	तिरस्य	तिरस्यति	छुपना
१९७६. उरस् बलार्थ:	उरस्	उरस्य	उरस्यति	बलवान् होना
१९७७. पयस् प्रसृतौ	पयस्	पयस्य	पयस्यति	फैलना
१९७८. संभूयस् प्रभूतभावे	संभूयस्	संभूयस्य	संभूयस्यति	बढ़ाना

सौत्रधातव:

जो धातु पाणिनीय धातुपाठ में नहीं पढ़े गये हैं, अष्टाध्यायी के सूत्रों में ही पढ़े गये हैं, उन्हें सौत्र धातु कहते हैं। ये इस प्रकार हैं -

ऋतेरीयङ् (३.१.२९) - 'ऋत घृणायाम्', यह धातु इस सूत्र में ही पढ़ा गया है। धातुपाठ में नहीं। अत: यह सौत्र धातु है। ऋति घृणायाम् इति माधव:।

इसका अर्थ जुगुप्सा अथवा दया करना है। इस सूत्र से इससे ईयङ् प्रत्यय होता है। ऋत् + ईयङ् = ऋतीय। ऋतीय + शप् + ते = ऋतीयते।

स्तन्भु-स्तुन्भु-स्कन्भु-स्कुन्भु-स्कुभ्य: श्नुश्च (३.१.८२) - इस सूत्र में पढ़े गये स्तन्भु, स्तुन्भु, स्कन्भु, स्कुन्भु ये चारों धातु परस्मैपदी हैं।

इन धातुओं का अर्थ रोकना है। कुछ के अनुसार प्रथम और तृतीय का अर्थ स्तम्भन है। द्वितीय का अर्थ निष्कोषण है और चतुर्थ का अर्थ धारण करना है।

इनसे श्ना विकरण होकर स्तभ्नाति, स्तुभ्नाति, स्कभ्नाति, स्कुभ्नाति, ऐसे क्र्यादिगण के 'क्रीणाति' के समान रूप बनते हैं और पक्ष में श्नु विकरण होकर स्तभ्नोति, स्तुभ्नोति, स्कभ्नोति, स्कुभ्नोति ऐसे स्वादिगण के शक्नोति के समान भी रूप बनते हैं।

तुरुस्तुशम्यम: सार्वधातुके (७.३.९५) इस सूत्र में पढ़ा गया 'तु' धातु लुग्विकरण अदादि गण का है।

तु, रु, स्तु, शम्, अम् इन धातुओं से परे हलादि सार्वधातुक प्रत्ययों को विकल्प से वा ईडागम होता है। अदादिगण के स्तौति, स्तवीति के समान इसके रूप तौति, तवीति, आदि बनते हैं।

जु-चङ्क्रम्य-दन्द्रम्य-सृ-गृधि-ज्वल-शुच-लष-पत-पद: (३.२.१५०) इस